आर्यावर्त की महागाथा—२

लोमहर्षिणी

कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम बार १९४८

गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस दिल्ली से मुद्रित।
राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड द्वारा भारतीय
विद्याभवन बम्बई के लिए प्रकाशित।

मूल्य साढ़े चार रुपये

आमुख

१९२१-२२ में [illegible] पुराणों की प्रेरणा से मैंने पौराणिक विषयों पर नाटक लिखना प्रारम्भ किया। उस समय मेरा संकल्प था कि मैं महाभारत के प्रसंगों की [illegible] की कृतियों की एक माला लिखूँ।

इसके लिए जो मैंने [illegible] अध्ययन किया था वह निम्नलिखित लेखों में प्रकट किया है।

(१) प्राचीन भारत व इतिहास के सम्बन्ध में ('समालोचक' १९२२)।

(२) [illegible] ([illegible] १९२१)।

(३) [illegible] ([illegible] में १९१८ में [illegible])।

(४) [illegible] (सन् १९१४ में पूने के भांडारकर [illegible] [illegible])।

(५) [illegible] ([illegible] प्रथम भाग)।

[illegible] ([illegible]) [illegible] १९२१ में '[illegible]' १९११ में '[illegible]', १९१४ में '[illegible]', सन् १९२२ में [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] के [illegible] [illegible] लगा। फिर [illegible] '[illegible]' [illegible] [illegible] लिख

[illegible] चार भागों में प्रकट हुए हैं। तब मैंने [illegible] लिखने का ही विचार [illegible] किया [illegible] और [illegible] होता है। [illegible] स्वाभाविक [illegible] में [illegible] जाता है।

पहला स्कन्द

(१) [illegible] का [illegible] है। [illegible] और [illegible] की [illegible] है [illegible] और [illegible] है। [illegible] और [illegible] की [illegible] हुए [illegible] आदि [illegible] होता है। ([illegible])

( ) [illegible] का [illegible] की [illegible] का [illegible] हुआ [illegible] ([illegible])

(३) [illegible] हुए [illegible] का [illegible] (

और इनकी रचना हुई है उनमें से कितनी ही ऋग्वेद के मन्त्रों से ली गई हैं।

(१) आर्यों और दस्युओं के बीच युद्ध चल रहा है। भृगुओं का राजा दिवोदास दस्युओं के राजा शम्बर को मारकर उसके गढ़ ले लेता है।

(२) ऋषि लोपामुद्रा महर्षि अगस्त्य का सहवास करती है और उनसे विवाह कर लेती है।

(३) भृगुओं का पुरोहित जो भृगुओं के पास था, विश्वामित्र को प्राप्त होता है।

(४) विश्वामित्र ऋषि गायत्री मन्त्र का दर्शन करते हैं। इसके साथ कितने ही पुराणों की बातें आ ली गई हैं।

(५) भार्गव ऋचीक नर्मदा तटपर स्थित महिष्मती की हैहय जाति के राजा सहस्रार्जुन का डर छोड़कर नर्मदा-तट से सरस्वती तट पर आते हैं गाधि-राज की लड़की से विवाह करते हैं। उन्हें जमदग्नि नाम का पुत्र उत्पन्न होता है। गाधि-राज के भी विश्वरथ नाम का पुत्र उत्पन्न होता है। मामा भाञ्जे दोनों साथ ही पाले-पोसे जाते हैं।

(ख) विश्वामित्र और वशिष्ठ में वैर स्थापित होता है।

(ग) विश्वरथ भी राजपाट छोड़कर ऋषि बन जाते हैं और विश्वामित्र के नाम से पुकारे जाते हैं।

इन बातों के आधार पर विश्वरथ [illegible] कन्या [illegible] और गायत्री ये विश्वामित्र ऋषि रचे गए हैं।

तीसरा स्कन्ध

"ऋग्वेद" में समाविष्ट मुनि वशिष्ठ और महर्षि के मन्त्र जिस काल में उत्पादित किये गए—जिसे सत्य ऋग्वेद काल कहा जा सकता है—उस समय की यह कथा काल्पनिकी है। इन निम्नांकित घटनाओं के आधार पर निर्मित किया गया है—

(१) भृगुओं के राजा सुदास का [illegible] विश्वामित्र के पास आ

उन्हें वशिष्ठ से लेते हैं।

(२) एक ओर वशिष्ठ द्वारा प्रेरित सुदास और दूसरी ओर विश्वामित्र द्वारा प्रेरित दस राजाओं में परस्पर युद्ध छिड़ जाता है जिसे 'दश राज्ञ' कहा गया है।

(३) विश्वामित्र आर्य दस्यु के भेद को दूर करने के लिए प्रयत्नशील थे। व शिष्ठ मुनि आर्यों की सनातन शुद्धि और विद्या के प्रतिनिधि थे।

(४) अजीगर्त के पुत्र शुनःशेप का नरमेध हो रहा था उसे विश्वामित्र ने रोका। इस प्रसङ्ग का उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में आता है।

(५) राजा सुदास के सहायक जो वीतहव्य थे वे ही पुराणों में वर्णित नर्मदा तट पर स्थित हैहय तालजंघ जाति के लोग थे। पुराणों में कहीं भी परशुराम का बालपन वर्णित नहीं है।

चौथा स्कन्ध

(१) इसमें भगवान् परशुराम का जीवन आता है। इसका कथानक पुराणों से लिया गया है। ऋग्वेद के काल और ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित काल में कैसे परिवर्तन हुआ इसकी कथा इसमें है।

(२) इसके उपसंहार रूप तपस्या हो सकती है जिसमें और जाकर परशुराम से आग्नेयास्त्र प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार शुक्राचार्य से लेकर सगर राजा तक की कथाओं का इन चार स्कन्धों में समावेश होता है।

इस महानाटक के लिए जो आधार हैं वे कुछ नाटकों में भी पुरा... व ... शास्त्री जी द्वारा दी गई टिप्पणियों में और ऊपर दिये हुए श्लोकों ... नाटक अवतरणों में प्राप्त होंगे।

ये पुराण-कथाएं एक अर्वाचीन उपन्यासकार द्वारा गत पच्चीस वर्षों में रची गई कृतियां हैं। महाभारत, रामायण और भागवत के कर्ताओं ने बहुत सी काल्पनिक सामग्री का समावेश किया है पर उस ... शताब्दियों ने पवित्र बना दिया है। मैंने जिस सामग्री का समावेश किया है उसे कितने ही सज्जन अन्याय भी मानेंगे।

किन्तु मेरे सम्मुख तो एक ही प्रश्न था—वैदिक और पुराणकाल के दर्शन करने और कराने का। यह स्वनिर्धारित कर्तव्य पूरा करने में सामग्री के संचय के लिए मैंने ऋग्वेद और पुराणों की यथासम्भव सहायता ली है। पर यह तो सामग्री ही है। यह महानाटक तो उससे रची कुछ स्वतन्त्र कल्पना है। मानव-जीवन के जो आदर्श और मर्यादा युग सम्बन्धित हैं उन्हीं से यह ग्रथन किया गया है।

१९११ से १९४२ तक ३१ वर्षों में यह महानाटक पूरा हुआ है। मैंने प्रमुख ऋषियों और प्रमुख प्रसंगों के जो स्वरूप देखे थे उन्हें इसमें चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है।

वशिष्ठ अरुन्धती के अनुराग, इच्छा-कन्या और विश्वरथ का प्रेम, लोपामुद्रा की मर्यादा शक्ति, राम जामदग्नेय की ... विश्वामित्र का अभय-कल्याण और परशुराम के जीवन ही जीवन प्रसंग में ... में दृढ़तया सजग जानता हूँ।

सुदास से ... तक की अविच्छिन्न परम्परा इसमें है। इस प्रकार की ... भावना के बिना सनातन ... का ... कभी नहीं बन सकता था। भारत और आर्यावर्त ... के ... इसके द्वारा हुए हैं।

मुझ पर यह आक्षेप अवश्य किया जायगा कि इस महानाटक में मैंने पुराण के महापुरुषों से ही कथा प्रारम्भ की है। मैं ... का ... हूँ इसलिए पुराणों ... ही करूँगा। किन्तु जो ... हैं वे ... समझेंगे कि ... वैदिक और पुराणकाल का ... देश था। ... देवयानी, ... सुकन्या, ... और रेणुका ... ऋचीक जमदग्नि, परशुराम और ऋषि ... और ... आदि की ... है। ... का ... निरूपण है। ... का महानाटक है, ... भी ... है। और ... में यदि कोई ... के ... हो तो ...

वे अकेले भगवान् परशुराम ही हैं। हिमालय में स्थित परशुरामकुंड से लेकर त्रावणकोर तक के स्थान स्थान उनकी पुण्य-स्मृति से अंकित हैं। सम्पूर्ण महाभारत उनके प्रताप से देदीप्यमान हो जाता है।

भारतीय कल्पना ने सहस्रों वर्षों तक इस भव्यता के आदर्श सजीव रक्खे हैं। इस सजीवता में अर्वाचीन काल के उपयुक्त यदि मैं अणुमात्र भी वृद्धि कर सकूं तो अपनी एक-चतुर्थ शताब्दि की उत्साहमय तपस्या को पूर्णतया सफल मानूंगा।

२६ रीज रोड
२१।१।५२

कन्हैयालाल मुन्शी

पहला खण्ड

मुनियों में श्रेष्ठ

१

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कुछ पग चलकर सुदास ने चारों ओर देखा। वन में कोई स्थान खाली दिखाई दिया और वह उसकी प्रतीक्षा करता हुआ खड़ा रहा।

मुनि [illegible] के भाई और तपस्वियों में श्रेष्ठ वसिष्ठ स्नान करके पीने के पानी का घड़ा कन्धे पर रखकर नदी से बाहर निकले।

तब उनके पुत्र [illegible] ने [illegible] सत्कार की अवहेलना करके [illegible] विचार किया [illegible] के साथ [illegible] के राजा [illegible] तब [illegible] से [illegible] होकर उन्होंने राजा [illegible] का पुरोहित पद और [illegible] दोनों का परित्याग कर दिया। [illegible] का [illegible] करके [illegible] और [illegible] के [illegible] में [illegible] की [illegible] पूरी [illegible] दूर [illegible] में [illegible]। [illegible] की [illegible] को [illegible] की [illegible] करके [illegible] ने [illegible] किया। [illegible] ने [illegible] और [illegible] में [illegible] और [illegible] को [illegible] हुए मुनियों को भी [illegible] कर दिया था।

[illegible] ने मुनि के पास [illegible] हूँ।

"[illegible]।"

"मुनिवर! [illegible] मुझसे [illegible]" कहकर [illegible] के [illegible]।

"हाँ क्या कहना है?"

"[illegible] ही [illegible] नहीं। [illegible] और [illegible] का [illegible]"

"[illegible] मैं [illegible] करने के [illegible] से [illegible] मुनि ने [illegible]।"

कर बरबराने लगे और वे कुछ दूर तक सुदास पर बरसते रहे। केवल उनके घर में घुसकर हुए पानी की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी।

'सुनो सुदास,' मुनिश्रेष्ठ ने धीरे-धीरे कहा, 'जब पितृतुल्य मुनि अगस्त्य ने भगवती लोपामुद्रा से विवाह किया और विश्वामित्र ने राजपद त्यागकर तुम्हारे पिता के पुरोहित बने तभी मुझे प्रतीत होने लगा था कि मेरे तप का अन्त हो गया। अब यह माना जाने लगा कि आर्यों की शुद्धि में तप नहीं है, मैं मंत्रद्रष्टा नहीं हूँ, अगस्त्य का दूत हूँ। तब मैं तुम्हारे पिता को छोड़कर यहाँ आश्रम में आकर रहने लगा। जो मुझे सत्य प्रतीत होता था उसे छोड़ने के लिए मैं तैयार नहीं था।' वसिष्ठ मुनि रुक गए और उन्होंने आकाश की ओर देखा।

पूर्व क्षितिज पर श्वेत रेखाएँ दिखाई देने लगी थीं। उसके प्रकाश में सुदास ने धवलश्वेत दाढ़ी और लम्बी जटाओं से भरे हुए वसिष्ठ के तेजस्वी मुख पर छाई हुई गंभीरता की छाया ध्यानपूर्वक देखी।

'सुदास! वसिष्ठ आगे बढ़े, 'अन्य देवों ने मेरे पास सैकड़ों शिष्य भिजवाए। मेरा पुत्र शक्ति भी विद्या और तप के कारण मुनियों में अग्रस्थान प्राप्त कर सका। कितने ही आर्य राजाओं ने मुझे गुरुपद पर स्थापित किया। जिस संस्कार शुद्धि के लिए मैं आतुर हूँ वह असत्य नहीं है यही ज्ञान है तथा अन्यों का विश्वास भी हुआ। तुम्हारे पिता जैसे महान् राजा के पुरोहितपद पर रहकर गुरुपद का उपभोग करना भी आवश्यक था किन्तु आज बीस वर्ष हुए, केवल मेरे तपोधन से ही देवों ने मुझे अधिक शक्ति दी। निःसन्देह देवगण मेरा उपयोग करना चाहते थे।'

'गुरुवर! आप तो समष्टि के उद्धारक हैं!'

वसिष्ठ ने सुदास की आँखों में देखा और उसके मुख पर गाम्भीर्य देखा और वे हँस दिए, 'सुदास! तुम मेरे पास अपने स्वार्थ के लिए आए हो। विश्वामित्र का स्मरण कर तुम्हारी नस-नस में विष फैला जाता है और मेरे बिना तुम उनसे पार नहीं पा सकते।'

"गुरुदेव ! मैं बस सफलता का भी इच्छुक हूँ।"

"यह मैं जानता हूँ," वसिष्ठ मुनि ने स्वीकार किया "[illegible] आर्य बस्तियों में [illegible] चले आ रहे हैं इससे तुम और तुम्हारे सगोत्रजन सब व्याकुल हो रहे हैं।"

"यह सत्य है," सुदास ने कहा।

"तब तो तुम उस युद्ध [illegible] तब मैंने तुम्हें एक वर का वचन दिया था। उसको स्मरण करते हो? [illegible] तुम्हारा [illegible] की कसौटी पर कसना चाहता था।"

"आप जिस कसौटी पर चाहें मुझे कस सकते हैं मैं तत्पर हूँ। इसीलिए तो आज मैं आपके पास यहाँ आया हूँ।"

"मुझे [illegible] हो [illegible] भान हुआ कि मुझे तुम्हारा पुरोहित स्वीकार करने का [illegible] हो जायगी।" वसिष्ठ ने कहा।

"क्या विश्वामित्र ?"

"कल सूर्योदय तक मैं [illegible] आज्ञा दूँगा। यदि आज्ञा पालन हुई तो मैं तुम्हें 'हाँ' कहूँगा।"

"गुरुवर [illegible] करेगा," सुदास ने विनती की।

"यह काम मेरे हाथ में नहीं है [illegible] के हाथ में है। और फिर मुझे [illegible] से विश्वामित्र का [illegible] नहीं [illegible] है।"

"[illegible] ?" सुदास ने पूछा।

"तुम आज जाकर [illegible] [illegible] में [illegible] बातें करना और [illegible] उसके सूचना [illegible] निकालना।

"इसका तो [illegible] है ही।

"नहीं [illegible] की [illegible] का बिना जाने ही [illegible] है। [illegible] तो तुम इस प्रकार [illegible] क्यों [illegible] ?

सुदास का यह [illegible] [illegible] [illegible] उत्तर पाकर [illegible] इस समय [illegible] करने के अतिरिक्त दूसरा चारा भी नहीं था।

[illegible] यदि [illegible] ने मुझे यह पद स्वीकार करने की आज्ञा दे दी तो [illegible] मैं [illegible] के पास [illegible] भेज [illegible] ने कहा। [illegible] के पास? [illegible] ने चौंककर पूछा [illegible]?

[illegible] पूछूँगा कि [illegible] मुझे [illegible] चाहते हैं [illegible] मैं स्वीकार करूँ या नहीं। धीरे से [illegible] ने कहा। [illegible] क्या यह भी [illegible] है? इससे उनका क्या सम्बन्ध?

[illegible] दिखाई दिया। [illegible] और मेरा [illegible] भिन्न है। [illegible] नहीं हूँ [illegible] हों

[illegible] क्या होता?

[illegible] मैं [illegible] नहीं [illegible]

[illegible] नहीं [illegible] की [illegible] नहीं [illegible]

[illegible] किया

[illegible] मेरा [illegible] हो [illegible]

[illegible] कहा [illegible]

[illegible] नहीं [illegible] हूँ कि [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विचार करें पर एक बात लोगों को स्पष्ट दिखाई देती थी कि जब तक वशिष्ठ उनकी पीठ पर न हों तब तक विश्वामित्र से वे छोड़ा नहीं ले सकते थे।

तृत्सु महाजन तो भरतों के साथ टक्कर लेने को तैयार ही बैठे थे अतएव उन्हें तो यही चाहिए था कि वशिष्ठ पुरोहितपद स्वीकार करें। दासों को जो स्वातन्त्र्य मिला था वह उन्हें पसन्द न था। कितने ही आर्य भी दासियों से विवाह करने लगे थे यह बात भी बहुत से आर्यों को खटकती थी। इसलिए दासों पर अंकुश रखने वाला शासन उनके बहुत मन का ही था, पर आर्याओं पर अंकुश रखने का शासन उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। इससे घर घर झगड़े होंगे। महाजन यदि इस शासन का अनुमोदन भी करेंगे तो भी एक-दूसरे पर कटाक्ष किये बिना न रहेंगे। वह स्वयं लोपा द्वारा ही इस शासन का पालन कैसे करावेगा?

लोपा को वश में रखना कठिन काम था। राजा दिवोदास ने इस लड़की को बहुत सिर चढ़ाया था। जो बचा-खुचा था वह लोपामुद्रा ने पूरा कर दिया था। आर्यों का एक भी ऐसा शिष्टाचार नहीं था जिसे वह तोड़ती नहीं थी। प्रायः वह पुरुषों का वेश बनाती, धनुष बाण चलाती, जंगल में घूमती, दासों के घर जाती और बड़े बड़े आर्यों की लड़कियों पर प्रभुत्व जमाकर उनके घर फोड़ती थी। वह जंगली बिल्ली है, मुनि ने स्नेह से विचार किया। उसमें लोपामुद्रा के सब दोष आगए थे यह बात सच थी किन्तु उनके अनुप[illegible] आने के पश्चात् तो वह अत्यन्त निर्लज्ज हो गई थी। किसी का कहा मानने को वह तैयार न थी। तब उसके आचार को वह किस प्रकार ठीक करता? इस बिल्ली के लिए उसे बहुत बड़ा स्नेह था। जब वह आती तब तो वह अपने साथ प्रोत्साहन लाती थी। उसके अल्हड़पन में जो आवेश था वह उसे जान पड़ता था मानो मेरे अपने हृदय में जागी हुई मनोकांक्षाओं का ही स्वरूप हो। सब लोग उसके डर से या स्वार्थ से उसकी ओर प्रवृत्त होते थे किन्तु लोपा ही एक

दूसरी थी जो किसी की चिन्ता किए बिना निःस्वार्थ भाव से हो सब को भर के बाँटती थी।

इस उलझन को किस प्रकार सुलझाया जाय यह पहेली उसके सामने उपस्थित हुई। उसने तो सोचा था कि वसिष्ठ आर्येतर और उस कुलसम्राट को रोक कर लेंगे। उसके मन में कुछ ऐसा भी था कि लोपा ही वसिष्ठ को तंग करके अपनी टेक सभा पर आ जमायेगी।

कुछ समय पूर्व जब सिन्धु से चलने पर वसिष्ठ स्वयं लोपा के साथ बात करते थे। तब किस प्रकार से लोपा ने टोक कर लिया था? उसी प्रकार आज यह वसिष्ठ को भी टोक करे तो क्या आनन्द आवे! पर वसिष्ठ ने तो यह काम उस पर ही छोड़ दिया। इस सम्बन्ध में वसिष्ठ स्वयं को ही सर्वथा मौन में रहे थे। लोपा स्वच्छन्द और स्वच्छाचारिणी थी। वह उल्लास भरी तो हो चुकी थी पर उसका कार्य निष्फल था। हो सकता था पर्वतों का दुःख ही दुःख था।

यह काम राजा सुदास का अधिक सा न लगता। राजा के चारों बान्धवों का वर्ग पुराने मत के लिए सके तो वह इस काम का? उसके अनेक का सबसे बड़ा दुःख वसिष्ठ के बिना ऐसा नहीं आ सकता था।

ऐसा इतना के विचारों में डूबे चलने के पहले ही सुदास तृत्सुग्राम पहुँच गया था। पहुँचकर सबसे पहले दिवोदास का पता लगा कि तृत्सु महाजनों का गुरु हो चुका।

दिवोदास तृत्सु जनों का अधिपति था। वह राजा दिवोदास के पार का पुत्र और तृत्सु सेना का नायक था। सुदास का वह बाल मित्र और सहपाठी था पर अब उसे बहुत अभिमान था। वह कभी इस बात को नहीं भूलता था कि मैं तृत्सु हूँ, दुर्जेय विश्वामित्र का प्रमुख, भरतों का अवतंस और स्वर्गों का लिया हुआ स्वभाव उस कोट के समान समझता था। किन्तु तृत्सु सत्ता के विधाता राजा दिवोदास ने उस बालकपन का सहारा लिया था पर मनोरंजन करने का अनुरोध उस दृष्टि से आ में विश्वास उसके गुरु के उत्तर

५

राजा और सभापति दोनों दालान में टहलते हुए बातें कर रहे थे।

इतने में ही स्त्रियों के गाते हुए आने की आवाज सुनाई दी और एक युवती का नाम क्रोधपूर्वक पुकारा जाता हुआ सुना, जिसका नाम थेर था।

राजा और इन्द्रदत्त मानो कहाँ-के-कहाँ खड़े हो गए। सुदाम का हृदय धड़क उठा। जिसके बारे में सोच रहा था वह उसकी पत्नी थी। पर इस समय यह स्वर न सुनाई पड़ा होता तो बहुत अच्छा होता। वह अगला क्षण न जाने क्या गया कर दे!

पर्दे की झुरमुट से एक युवती बाहर निकलकर आ खड़ी हो गई।

इन्दीवर वर्ण की कोमल देह का वह मोहक, सुघड़ता इस समय दौड़ने से और क्रोध से लाल हो गया था। उसकी कांति चपलता से भाग रही थी और उसके सुन्दर बाल पीछे उड़ रहे थे। उसके सब अङ्ग सुन्दर और सुडौल थे।

पुरुष के समान उसने भी मृगचर्म का काछ बाँध रखा था। कमल पत्तों पर रँगे हुए वन्य के बंधन से उसने अपना वक्षस्थल स्वीकार किया था। वेश इतना सुन्दर था, मानो कोई सुन्दर वनदेवी छलाँगें मारती हुई पवन-वेग से दौड़ी चली आ रही हो।

मरुमा के साथ लड़कर सुदाम बाहर आ गया तो लगभग बारह वर्ष का पर लगता था सत्रह अठारह वर्ष का। उसका शरीर अत्यन्त ठीक ढला हुआ और सुन्दर था। उसके चमकते हुए मुख पर इस अवस्था का दर्प झलकता था। उसका कद—बहुत लम्बा—पाँच-छह फुट का था। और विशाल आँखों के कोनों में रहने वाली एक चमक और स्थिर ज्योति इस समय उसमें चमक रही थी।

सुदाम से थोड़ी दूरी पर वामा खड़ी हो गई—हाँफती हुई अपने उभरते हुए छोटे-छोटे स्तनों से मोहक लगती हुई और अपनी

बोला — च मा न उत्तर दिया — भाव हो राजपुत्रों की गद्दी है क्या उसका उत्तर न करना चाहते हो ? मुँह तो नहीं खोला ! कहकर हरदत्त के मुँह पर लाल रंग के अपमान का उसने अनुभव किया "इस राजकुमार का आसन अपना तो की है पर इसका इतना अपना पुत्रवधू रही बनी के कारण प्रतिबिम्ब आपका भी प्रणाम आये दरबार में लगा होगी।

इतना ही नहीं कि इन दोनों के झगड़े में वह स्वयं ही धर्म ट किया गया — स्तुत करना — कन्या और मर्यादा के वधू के भी स्थापित की चर्चा प्रारम्भ होते देख हम वे आवश्यक रह गया।

खामो' सुनाप ने कहा — चुप हो जाओ नहीं तो —

"नहीं तो क्या कर लो ?" फिर कमर पर हाथ रखकर खामान ने ठेके साथ कहा। सुदास ने खामा का हाथ पकड़कर उसे हटा लिया। आया घर में उत्पात। पर इन्हीं में खड़ा न जाता है न ? अब तुम्हें वृन्दावन में राज बिना न रहूँगा।

हरिदास समान उछलकर उसने अपना हाथ छुड़ाया — इसराज रखना वशिष्ठ मुनि के जो बुलावेगा उसके मैं माथ ले लूँगा। अपने पिता की बनाई हुई व्यवस्था में किसी का बिगाड़ न होगी समझे ? अब मैं समझा कि पुत्र के रहते हुए भी राजा दिवोदास ने विश्वामित्र का पुत्र क्यों माना था !

इस वाक्य से सुदास का हृदय बिंध गया। वह आगबबूला हो गया। बहुत ही बहुत दूर तो किया हुआ भी यह अपमान सहन नहीं किया जा सकता था। उसने खामा के एक तमाचा लगा दिया। तमाचे की चमक के होते ही सुदास के मुँह से एक ऐसा शब्द निकला मानो उसके प्राण निकल रहे हों — "दुष्ट !"

इस पर भरतकर राजा खींचकर इरान लगा। राम ने सुदास के बाएँ हाथ पर रुधिर से परिपूर्ण कवच उतार कर बचा लिया था और राजा भी उस समय हाथ भूलकर सम्भा का अनुभव करने लगे थे।

सम्भा होते ही सुदास ने तलवार खींचनी चाही पर राम तो त्रिपुर

सुरम्य वन्य भागों के आश्रम के पास जो ग्राम सभा रहता रहे थे। उनके दल में से निकलकर वे मधुर पक्षियों के गान से होते हुए एक रमणीय स्थान में आ पहुँचे। वशिष्ठ मुनि के आश्रम में हम रहे थे उस के पास एक छोटी-सी झोंपड़ी थी जो गुरु की झोंपड़ी कहलाती थी। उसके पीछे हट कर एक दूसरी झोंपड़ी थी जिसमें वह वास्तव में रहता था।

मधुर हँसकर देखता हुआ भरत उस छोटी झोंपड़ी में घुसा और सौन्दर्य तथा सुरुचि की प्रतिमा एक लावण्यमयी युवती निकलकर आती हुई उससे लिपट गई।

"भरत भरत!"

भरत ने अपने सशक्त हाथों में उसको आलिंगन किया, "क्या है? कुछ कह भी तो?"

"अब हम लोगों का अन्त आ पहुँचा। तुम्हारा क्या होगा?" उसकी पत्नी ने व्याकुल हृदय से कहा।

"पर बात क्या है यह तो बताओ?" रत्नावली के आँसू पोंछकर भरत ने पूछा।

"राजा चाहते हैं कि विश्वामित्र को निकालकर वशिष्ठ को पुरोहित पद दे दें।"

"तो उससे क्या?" भरत समझ न पाया।

"अर्थात् तुम कारागार में फेंक दिए जाओगे। कल राजा ने घोषणा की है कि जो भी इन अपराधों के साथ सम्बन्ध रखता है उसको तत्काल बध कर दिया जाय। इसलिए मैं कहती हूँ भरत! तुम भाग जाओ मुझे मृत्यु नहीं छुएगी।" रत्नावली की आँखों से आँसू आ गए। भरत ने उसका चुम्बन ले लिया।

"तुम क्यों घबराती हो? किसकी शक्ति है कि मेरा बाल भी बाँका कर सके?"

"भरत! तुम इन बातों को जानते नहीं हो। कितने ही मनुष्य

क्यों वे दोनों भीतर हैं ? कल्लन ने पूछा।

हाँ, कोठरी में दो हैं। सब लोगों को अपनी आँखों से भीतर जाते देखा है।

बूढ़े केशव का मजा दुगना हो गया, निश्चय समझकर हृदय की धड़कन का पार नहीं रहा। इन लड़कों के सामने अपनी गिरती हुई मर्यादा किसी भी प्रकार बचाना हो तो यह समय है ऐसा संकल्प करके वह कदम को उद्यत हो गया।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि शरारती चोर के समान इस रास्ते से आती होगी ?

"जी हाँ बहुत बार। या तो अपने मामा के मकान में होकर या इस ओर कोठरी के माध्यम में होकर आती है"

अच्छा ? शङ्कायुक्त स्वर में हयरथ ने पूछा।

हाँ मैंने स्वयं उसे आते देखा है।

तब हम लोग एक काम करें। मैं कोठरी के पीछे खड़ा रहता हूँ और तुम अपने दो मित्रों के साथ कोठरी के द्वार खड़े रहो। पीछे से शरारती निकलेगी तो मैं पकड़ लूँगा और तुम आगे का पकड़ लेना। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारी बुद्धिमानी मेरे काम आएगी ! और यह बात जायगी तो लोगों में हम सबकी बड़ी बदनामी होगी।

कल्लन भी हयरथ का आदर करता था। इसमें उस पर दया कर उसने यह आज्ञा स्वीकार कर ली। हयरथ जाकर गुफा की कोठरी के पीछे खड़ा हो गया और लड़के भीत के द्वार पर लाठी उठाकर खड़े हो गए। पत्तों की छाया के कारण कोठरी में अँधेरा था। केवल किसी पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट से ही नीरवता भंग होती थी।

एक घड़ी बीती, दो घड़ियाँ बीतीं पर कोठरी में से निःश्वास तक सुनाई न दिया। अन्त में लड़कों ने द्वार पर कान लगाए तो ज्ञात हुआ कि कोठरी निर्जन है।

कल्लन भी जाकर हयरथ को बुला लाया और उसने द्वार में धक्का

लगा। इन प्रयत्नों में वे अधिक सफल न हुए तो वे भावुक और इस क्रोध में बात न्ये जाने वाले सब मिलकर उधर पहुँचे जिधर दूसरे लोग रहते थे। वहाँ जितने लोग मिले उन सबको मारा और कितनों के घर भस्म कर दिए। क्रोधावेश की वेला विकट जान पर वे कुम्भीर वशिष्ठ अदृश्य बनाकर अपने अपने घर लौट गए।

८

राजा सुदास के यज्ञ आने पर मुनि-श्रेष्ठ वशिष्ठ पुत्र-मृत्यु की व्यथा भूल कर बैठे। यह स्वाभाविक पुरोहितपन के कारण में यह प्रश्न उन्होंने स्वयं अपने से पूछा और उपस्थित होने वाले स्वाभिमान ने उन्हें यह पद छोड़ देने को कहा या नहीं यह वे निश्चित न कर सके। किन्तु जिस अवसर के लिए वे आजन्म प्रयत्नशील रहे वह सामने उपस्थित हो गया है यह उन्हें निश्चित प्रतीत होने लगा।

प्राचीन ऋषियों में जिन वशिष्ठों का स्वागत सर्वाधिक प्रिय समझा जाता था उनका पिता और दादा की पैतृक सम्पत्ति अथवा उन्हें गुरु के आश्रम में प्राप्त हुई या तभी से जीवन के इस परम कर्तव्य के बारे में उन्हें कभी शंका नहीं हुई।

यदि उन्हें यह परम कर्तव्य पूरा करना न होता तो बाल्यकाल में ही वशिष्ठों के विशाल आश्रम में तप करने वाले सैकड़ों शिष्यों में उनका प्रथम क्यों स्वीकार किया जाता और छोटी ही अवस्था में उन्हें वशिष्ठों का पदवी पर क्यों प्राप्त होता? उन्हें तभी से स्पष्ट भान होने लगा था कि आर्यों के संस्कार विद्या और विधि को यथापूर्व पूर्णतया शुद्ध रखने का परम कर्तव्य क्यों न उनके ही सिर डाला है। गत सत्तर वर्षों के लम्बे जीवन-काल पर वशिष्ठ ने दृष्टिपात किया तो उन्हें स्पष्ट दिखाई देने लगा कि इस कर्तव्य को पूरा करने की आवश्यक योग्यता प्राप्त करने में उन्होंने प्रत्येक क्षण और प्रत्येक वृत्ति का उपयोग किया है।

साथ ही स्यों न उन्हें कसौटी पर कसने में कोई कसर उठा न रक्खा

थी। उनके बड़े भाई भगदत्त के प्रबल व्यक्तित्व के विरुद्ध उन्हें कितने ही वर्षों तक चुप ही लगाना पड़ा था। राजा दिवोदास निरन्तर दस्युओं के साथ युद्ध किया करते थे। उसके परिणामस्वरूप आर्य अपने कुलाचार छोड़कर अपने घरों में दास रखने लगे उनकी स्त्रियों के साथ सम्बन्ध करने लगे और उनके पुत्र आर्यों के संस्कार ग्रहण करने लगे। कितनी ही आर्याएँ भी दासों के साथ सम्बन्ध रखने लगी थीं। देवों की आराधना में स्खलन होने लगा था। कितने ही आर्य तो दस्युओं के देवों की भी आराधना करने लगे थे।

उन्होंने बहुत तप भी किया, किन्तु इस अधोगति से आर्यों को उबारने का मार्ग उन्हें नहीं सूझा। अपने तप के बल से वे केवल [illegible] के आचार शुद्ध रख सके।

आज उनके विस्मृत भीषण प्रसंगों की स्मृति पुनः हरी हो उठी। [illegible] ने भी [illegible] न किया। [illegible] और [illegible] के [illegible] दासों के साथ [illegible] करके उनके [illegible] [illegible] का भी तिरस्कार किया था [illegible] फिर तो [illegible] के अनिष्ट की [illegible] में कोई कसर न छोड़ी।

फिर [illegible] का वध किया गया [illegible] भी [illegible] आर्य [illegible] कर दी [illegible]। [illegible] आर्यों के [illegible] में [illegible] लगे। [illegible] [illegible] और [illegible] किया।

"[illegible]" [illegible] मुँह से निकला।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इन्होंने धीमान्-जिन्न की वहीं विश्वमित्र नदी में नहीं। यहाँ प्रारम्भ की शान्ति न हो, वहाँ शान्ति नहीं रह सकती।

क्यों न इन्हें विविध शक्ति प्रमाण की और सम्पूर्ण प्राणिमात्र सहित कुसुमपाल न चल लिए आत्मसंस्कार के विशुद्ध ज्योति प्रकट इन्होंने निरभिमान होकर अपने मन में अन्य हुए अभि मन्त्रमय का बतान दिया।

इन्हीं द्वारा दिया हुआ आश्वासन आज इन्हें सफल होता दिखाई देता था। अब हम उन्हीं के द्वारा आर्यों के संस्कार सम्पन्न करने की प्रार्थना उस दान का समय आ पहुँचा था। तात्पर्य ये कि मुनियों में श्रेष्ठ वशिष्ठ मुनीन्द्र का साथ देकर सभी के समान अपना हठी के पास वन्धुवर के पास बढ़ कर न की आराधना करते थे।

आराधना पथ का अधिकारी होना उनको पानी देना प्रत्येक पहाड़ के स्वभाव में लिप्त रहती थी। उनका बड़ा पुत्र शक्ति और उनके प्रमुख शिष्य सब गुरु पर दृष्टि जमाकर बैठे थे।

सब जानते थे कि गुरुदेव आज देव की जो आज्ञा माँग रहे थे वह अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है। किन्तु उनके कर्तव्य के लिए इन्होंने जो कर रखा है उस फल को देखकर वे सब अननुभूत अनुपम का अनुभव कर रहे थे। मुनि जो कर रहे थे उसमें संयम दृष्टिगोचर होता था। वे जो अभिप्राय ध्यान में डाल रहे थे वह भी अभ्यास से धार विचार पूर्वक। वे अग्नि की आराधना करते समय मग्न होकर अन्त के रहस्य साधन में ध्यान-मग्न हो गए। अग्नि में ज्वाला प्रज्वलित हुई। इससे यह सूचित होता था। एक शिष्य ने आकर इस घटना का उत्साह-सा सूचित किया कि महर्षि पराशर मन पति इन्द्रदेव उनकी पुत्रवधू स्वाहावती और साथ में सम्पूर्ण महाजन आए हैं।

वे सब चले आए।

स्वाहावती जब गोद में प्रसन्न हुई तब भीन हृदय में बड़ी वृद्धि के साथ चली गई। समन्वित न अपने परिवार के साथ स्त्रियों उस जन का अपने आसन पर बैठाकर उसे राज प्रसाद के पास उतार दिया।

"ओ हो!"

रूपवती ने एक दूध भरी दृष्टि वशिष्ठ पर डाला। वशिष्ठ तो कमल की ओर ही देख रहे थे।

"हम सब आपका स्वागत करने के लिए प्रस्तुत हो रहे हैं" पौरवी ने कहा।

राम के मुख पर मंद हास्य छा गया, "अब!"

"इन्द्र आदि का भय हो, ऐसा न लगता हो" रानी ने सुधार किया।

"क्या कहते हो अब भी ऋषि विश्वामित्र को सन्देश भिजवाने की आवश्यकता समझते हैं?" इस इस ने पूछा। "हमें तो आवश्यकता नहीं जान पड़ती।"

"तुम्हें न जान पड़ती हो, यह मैं समझता हूँ किन्तु उनकी अनुमति के बिना मैं नहीं जा सकता। वत्स!" उन्होंने दूर बैठे हुए शक्ति की ओर देखकर कहा, "तुम सरनाम महल हो चले जाओ।" फिर इस रत्को ओर देखकर उन्होंने कहा, "किन्तु जान पड़ता है अभी राजा सुदास का स्नान पूरा नहीं हुआ।"

रानी ने कहा, "राजा ने आज ब्रह्म का ध्यान में वन्दना प्रारम्भ किया है।" रूपवती ध्यान से सुनने लगी।

"यह मैं नहीं जानना चाहता था" मुनि ने कहा।

"तब?"

"मैंने तो पुछवाया था कि वह क्या करना चाहती है?" मुनि ने कहा।

"वह तो जो राजा कहेंगे वही करेगी" रानी ने विश्वास दिलाया।

"अच्छा?" मुनि ने शंका की, "मैं नहीं मानता।"

मुनि की शंका को मूर्तिमान करते हुए सहसा लोमहर्षिणी और राम वहाँ आ पहुँचे। आज वह ब्रह्मचारी के वेष में था।

राम ने हाथ जोड़कर कहा 'राम।'"

यह रूप विनय और कान्ति देखकर मुनि और भी अधिक आकर्षित हुए। राम द्वारा आशीर्वाद [illegible] उन्होंने उनका हाथ खींचकर अपने पास बिठा लिया। आपकी [illegible] स्वागत करता है? विनय से [illegible] प्रणाम किया [illegible] मुनि ने जमदग्नि तथा रेणुका के समाचार पूछे।

"मुनिवर," लोपा ने कहा, "मैं आपसे कुछ कहने आई हूँ।"

मुनि कुछ उदास हो गए। "क्या?" और फिर अग्नि की ओर देखने लगे।

"कहा कि मेरे भाई ने आपको पुरोहित बनने का निमंत्रण दिया है उसे आप स्वीकार न करें।

"अरे! यह क्या कहती है?" लोपा सहसा न घबराकर बोली।

"कहने दो न।" मुनि ने कुछ हँसकर पूछा, "क्या?"

"सच्चा बात कह दूँ?"

"यहाँ सच ही कहने आई है न?"

"तो सुनिये, विश्वामित्र को मेरे पिताजी पुरोहित बना गए हैं। मैं अपने पिताजी के वचन अपने भाई के द्वारा मिथ्या न होने दूँगी।

"तो राजा ही यह पुरोहित की प्रतिष्ठा करें," मुनि ने कहा।

"इतने वर्षों के पश्चात् आप क्यों आते हैं? आप अस्वीकार कर दीजिए।"

"मुझे इस की आज्ञा होगी तो अवश्य आऊँगा।"

"किन्तु इनमें तो विश्वामित्र ही अर्थी हैं।"

"मेरे प्रति इतनी आपत्ति क्यों?"

"मेरे पिता कुछ अस्वस्थ और भगवती [illegible] थे। लोगों को कुछ कर गए हैं वह सब आप जिस प्रकार चाहते हैं इसलिए।"

"यदि विश्वामित्र को पुनः स्वीकार में राज का कोई दोष हो, उसके लिए स्वयं ने मुझे आयु प्रदान की है।"

"[illegible] ! [illegible] [illegible] के [illegible] ।

"अब कहाँ चले हो ?

मैं [illegible] के यहाँ जिन श्री के पास जाता हूँ ।"

"[illegible]" [illegible] किन्तु [illegible] के [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] ।"

[illegible] हूँगी । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible] मैं [illegible] [illegible] करूँ ?" [illegible]

[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] ! [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] ।

"[illegible] हाँ ।" [illegible] ने कहा ।

"[illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] ही है [illegible] ।"

"[illegible] [illegible] [illegible] करता है ।"

"[illegible] [illegible] ! [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए [illegible] [illegible] ।

"[illegible] कि [illegible] [illegible] में [illegible] । [illegible] ! [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।"

"[illegible] । [illegible] [illegible] ? [illegible] ने पूछा ।

"[illegible] ? [illegible] है कि [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।

६

[illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] के अनुसार [illegible] थे, [illegible]

थी। इसके बदले [illegible] करके रेवती [illegible] भी [illegible] की थी [illegible] भी वह इच्छा [illegible] पुत्र के समान इसके वध किया [illegible] मिल था गई था कि दिवाकर [illegible] हो जाते के साथ [illegible] [illegible] निराशा के [illegible] इसको [illegible] नहीं [illegible] हुए [illegible] के सहन करने को [illegible] है [illegible]

[illegible] इसके [illegible] वहीं दिखाई दे रहा था। इस समय [illegible] ही इस विनाश [illegible] था। वह [illegible] था। वह [illegible] हाथ था।

वृद्ध कवि ने इस सुन्दर [illegible] राज्य में [illegible] जाने की [illegible] थी। यदि [illegible] हो गया तो इसका [illegible] होगा। [illegible] को [illegible] के बिना भारत का [illegible] के साथ [illegible] सकते थे।

बहुत [illegible] उसकी स्थिति का विचार किया। [illegible] वह [illegible] वह [illegible] का [illegible] हुए [illegible] इसके लिए [illegible] परस्पर विरुद्ध कैसे हो सकते हैं? वह तो [illegible] का था [illegible] था।

काका राम [illegible] इसके [illegible] हो रहे [illegible] रहे।

इतने में [illegible] हुए राम महाराज [illegible] का [illegible] इसका [illegible] दिया था [illegible] किसी [illegible] भी [illegible] थी। किसी किसी के घर [illegible] भी [illegible] गई थी [illegible] दोनों की [illegible] हुई था।

अब का [illegible] ठहरा।

वह उसका राजा, राजा [illegible] का पुत्र इस प्रकार कायर के समान छिपकर घूम रहा था। अपना [illegible] वह सभी प्रकार [illegible] को हारा वह मारा गया। [illegible] वह तो राम था [illegible] का था

[illegible] करना जिसमें वह लोग वध करने के काम है

इस समय [illegible] [illegible] हो गई ऐसी थी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राज्य [illegible] [illegible] बुद्ध को [illegible] थी इससे बुद्ध में [illegible] वह [illegible] अद्भुत थी। यदि वह [illegible] [illegible] होता तो इसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समान वह [illegible] हो [illegible]

इसके [illegible] [illegible] दिन [illegible] [illegible] कोई दिन [illegible] थी [illegible] [illegible] वह [illegible] [illegible] कि वह राजा [illegible] का पुत्र है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible] [illegible] उसकी [illegible] [illegible] हुई [illegible] वह [illegible] हो तो [illegible] [illegible] कर सकते हैं? इस समय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भी इसमें कि [illegible] नहीं था [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] कर सकेगा?

इस प्रकार विचार करते हुए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तब उसने और उसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] कर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर दी।

कुछ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुनि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। उन्होंने [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के लिए [illegible] का [illegible] [illegible] किया था। किसी दिन [illegible] [illegible] वह समय [illegible]।

आश्रम के [illegible] [illegible] तीन चार [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] आश्रम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] थे। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुआ [illegible] कि [illegible] राजा [illegible] का था।

[illegible] होने पर भी वह [illegible] न [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] के पीछे [illegible] वह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] में [illegible] [illegible] रहा है।

आश्रम के पास से वह विख्यात गाय को उठा ले जाए तो ? ठीक-ठीक यही वसिष्ठ की इसका सीधा और सच्चा उत्तर होगा।

वह राक्षस के निन्यानवें गढ़ों का स्वामी था। पल भर में उसने खड्ग निकाला और अपने घोर पिता का युद्ध घोष किया—'इ इ इ ऊ ऊ ऊ।'

वसिष्ठ ऋषि इस गर्जना को सुनकर चौंककर पीछे घूमे।

सुवर्णमय कवचों से सुसज्जित घोड़ा काले प्रचण्ड घोड़े पर हाथ में खड्ग लेकर टकरी पर से उतरकर चला चला आ रहा था।

नागों की युद्ध घोषणा सुनाई न पड़ी इसी ओर घुड़सवार के शरीर का श्याम वर्ण दिखाई न पड़ा होता तो वे समझते कि वृत्र को मारने वाला इन्द्र हो चला आ रहा है, पर यह तो कोई नाग था।

वे जहाँ खड़े थे वहीं खड़े रहे। उनकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। निःशस्त्र हयरथ और महाप्राण घबराए से दूर हट गए। इस आकस्मिक भय को रोकने में असमर्थ पाली रानी घबराहट से चिल्लाने लगी और बेसुध होकर भूमि पर गिर पड़ी।

सत्यवती जहाँ-की-तहाँ स्तब्ध खड़ी रह गई। घबराई हुई आँखों से उसने अपने राजा भरत का अंत देखा।

इन्द्र के वज्र के समान घोड़ा उनकी ओर बढ़ता चला आया। एक हाथ से रोक लेने के कारण वह दो पैरों के बल खड़ा हो गया।

हयरथ और दोनों महाप्राण भाव में पड़े हुए अपने धनुष बाण लेने लगे।

राजा भरत ने घोड़े को सँभाला। अद्भुत कला से उसे घुमाया और दूसरे ही क्षण पास में खड़ी हुई सत्यवती की कमर में हाथ डालकर उसे घोड़े पर चढ़ा लिया। वह चिल्लाई।

हयरथ और दो महाप्राण घोड़ा पकड़ने के लिए आगे बढ़े।

घोड़े ने छलाँग मारी और इस प्रकार टकरी पर चढ़ गया मानो

दूसरा खण्ड

नट्टरदेव

: १ :

ज्ञानदत्तिदी राम कुमार विमल दासों घोड़ पर चढ़कर राजा हरिश्चन्द्र के यहां जाने के लिए चल पड़े।

वाना बड़ी प्रसन्न थी। उसने एक ही फटकार में सुनाम और वशिष्ठ दासों को भगाया था। कुसुमपुर का संकुचित वातावरण छोड़ कर बाहर निकली थी और राम के साथ घूमने निकली थी। राजा हरिश्चन्द्र की मानस और भावनी कामसुन्दरी की शिष्या के नाते वह स्वरसाधना में पुरःविकास के उत्सव को प्रार्थना करने जा रही थी। इस कारण उसके उल्लास में कल्याणनिष्ठा का भाव भी मिश्रित था।

वह कुमार राम के बराबर-बराबर घोड़े पर चढ़ चले आ रहे थे। वह भी उसके लिए बहुत सुख की बात था। राम के अश्व संचालन-कौशल पर वह मन में मुग्ध होती रही है। जब वह घोड़े पर बैठता था पता उसका घोड़ा बन जाता था। चौदह वर्ष की अवस्था में ही वह अश्व विद्या में निपुण हो गया था। कठिन-से-कठिन घोड़ा भी उसका इशारा पाते ही ठीक हो जाता था। उन्मत्त घोड़ों को भी ठीक करना राम जानता था। हाथियों को दुःसाध्य और टट्टुओं का चालन भी वह जानता था।

इस समय भी वह एक ऊंचे घोड़े पर जमा बैठा था—स्वस्थ गम्भीर भव्य। उसका मस्तक सूर्य तेज से तप रहा था। उसकी कजरारी आँखों का तेज वहां सामना नहीं कर सकता था।

कहीं बच्चा को छोड़कर सचमुच न चला जाना पड़े इसलिए उसने आँसू रोककर रोना बन्द कर लिया था, ऐसा कुछ उसे स्मरण था।

वह ऋषि के पास बैठा रहा। ऋषि भी पत्नी की विदाई से घबराये हुए थे। सामने वृद्ध कवि बैठे थे। वे वृद्ध भगवान् कुछ इधर उधर की बातों में बहलाकर ऋषि को आश्वासन दे रहे थे।

बाला को स्मरण था कि उसी समय से वृद्ध कवि ने यह भाँति करना प्रारंभ कर दी था ... मत भूलो! वे कह रहे थे, यदि इस समय आनन्दी का दुख प्राप्त हो तो उसे बालक को हाथों सौंपना पड़ेगा। कौरवों का युद्ध विद्या का स्वामी मैं हूँ। तुमने तो कुछ सीखा नहीं। मैंने सब विद्या सुरक्षित रख रक्खी है। वह सब तुम्हारे इस पुत्र को सुना सिखाती है।

वृद्ध कवि इस प्रकार बातें करते रहे। ऋषि बड़ी कठिनाई से भाव स सम्भ पड़ते जा रहे थे। बाहर बरसाती के पड़ते हुए पूर की ध्वनि था रहा थी ऊपर से मूसलाधार वर्षा हो रही थी रह-रहकर बादल गरज रहे थे बिजली चमक रही थी और वायु की झोंपड़ी में से कराह की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी।

बाला को वह रात अभी तक स्मरण थी। सबने आराम किया था और पेड़ की झोंपड़ी म वृद्ध स्त्रियाँ आ शोर पूरा कर रही थीं वह भी सुनाई द रहा था।

वह कितनी दूर तक भागी थी और कितनी दूर तक उसने कौन के थोड़े लगाए थे वह उसे स्मरण न था। रात के पिछले पहर में एक एक करुण चिल्लाहट सुनाई दी थी ऋषि बड़े व्यग्र थे बाला का हृदय धड़कने लगा था और वह असमंजस में गिर गई थी वृद्ध कवि भी उस समय सब चुप बैठे थे।

फिर इस प्रकार चिल्लाहट और बढ़ी मानो फिर इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया हो और बाला भयभीत होकर रो पड़ा। वृद्ध कवि ने उसे उठाकर गोद में ले लिया।

के समान चमकती थी उसके गहर-गम्भीर स्वर का गर्जन दूर तक सुनाई देता था और उसकी छोटी-सी बलपुष्ट पवतभेदी शक्ति के समान पड़ती थी। किसी और को विश्वास हो या न हो। किन्तु घम्बा और वृद्ध कवि तो दोनों उस इन्द्र ही मानते थे।

जैसे-जैसे घोर आगे बढ़ते आते थे वैसे-वैसे छाया को वे दिन स्मरण होते चले थे।

राम जब दो महीने का था तभी से इस सम्बन्ध में झगड़ा प्रारम्भ हुआ कि वह किसका है। घम्बा तो इस पुत्र के पीछे पागल होगई थी और सब काम-काज छोड़कर उसी को स्नेहमात्र में मग्न रहती थी। छाया और वे दोनों मिलकर पागल के समान राम को हँसाने का प्रयत्न करते थे किन्तु उनके प्रयत्नों का तिरस्कार करते हुए राम रूठा रहता और आँखें निकालकर घूरता रहता था। वह जब कुछ चाहता तो रोता नहीं था वरन् वृषभ के समान चिल्लाता था। और जब वह अपने पैर … उसका तब तो ऐसा लगता था मानो चारों ओर वसन्त रंगरेलियाँ कर … रहा हो। वृद्ध कवि भी वर्षों के भार का भूलकर सा कुछ-कुछ पागलपन … रन थे वह भी छाया का चाहू था। भरत भृगु और गृत्सु को संयुक्त सभा … पति महर्षि स्वयं शोका उद्भव बार बार हस्तविद्यामें सर्वोपरि आप … जिनके हुँकार से ममसिन्धु कम्पायमान हो उठता थे वे कवि आप … वृद्धा के समान होगए। वे घम्बा के पास की झोंपड़ी में रहने चले … । वृद्धाओं का एकत्र बाल पौर बच्चों का पालन-पोषण की सब … उन्होंने स्वयं ली और राम को स्नेहमात्र में मानो पक्षी करने …

•

… वृद्ध कवि और घम्बा किनने हो प्रश्नों पर लड़ पड़ते थे। राम को … हवा में रक्खा जाय या न रक्खा जाय किस ओर से उस धूप … चाहिए उस दूध किस प्रकार पिलाया जाय उसके सिर पर तेल … या नहीं इन सब बातों पर वृद्ध कवि और छाया लड़ पड़ते … समदृनि ऋषि के सिर [illegible] निपटाने का कुछ भार आता

ग्रन्थ एतद्विषय लिखित थी उसमें कितना परिवर्तन किस प्रकार हो, इस विषय में अत्यन्त की चर्चा हुई। विश्वामित्र जैसे ऋषि द्वारा शिक्षा का लाभ यदि राम को न मिलता तो उस समय प्रचलित परिस्थिति में वह कुल का नाम किस प्रकार उज्ज्वल रख सकता है, ऐसी भी चिन्ता उन्हें हुई। और इतने बड़े लेखक को ऐसी पद्धति का लाभ न मिलता तो क्या परिणाम होता इसको भी विचार उन्होंने किया। उन्होंने ऋषि विश्वामित्र से बातें की। उन्होंने महर्षि अगस्त्य से की। उन्होंने भगवती लोपामुद्रा से पूछा। शिक्षा पद्धति के विशेषज्ञ वृद्ध तपस्वियों से भी इस विषय में पूछा गया।

बहुत परिश्रम के अन्त में यही निश्चय हुआ कि सनातन आर्य प्रणालिका के अनुसार गुरु के आश्रम में रहकर ही विद्या शोभा पा सकती है और आरण्यक धर्म के अनुरूप शिष्य के आश्रम में रहकर विद्या के लिए अनुरूप कहा जायगा। अध्यवसायिक राजनीति से एक राजपुत्र की शिक्षा न वह तो निम्न प्रकार की ही रहेगी और उस प्रणाली को स्वीकार नहीं कर सकता। परिणामस्वरूप राम को विश्वामित्र के पास भेजने के लिए रखने का निर्णय हुआ।

अन्त में विश्वामित्र ने वृद्ध ऋषि का समाधान कर उत्तरदायित्व अपने सिर पर ले लिया। अरुन्धती ने सन्ध्या के समय बहुत ही धैर्य और सूचना के साथ उन्होंने राम के विषय में छिपा हुआ निर्णय सुनाया। वसिष्ठ निरुत्तर हुए। वे प्रसन्न हुए, वरदान आग पर ऋषि विश्वामित्र समझाकर कहा कि विद्या का विषय गहन होने से अधिकारी के सिवाय दूसरे को उसे समझना बहुत कठिन है। ऋषि वहीं से उठकर चले गए।

उस रात को वृद्ध कवि अपना सौंदर्य ले चले गए। दूसरे दिन सबेरे उनका कहीं पता नहीं चला। सब खोज करने लगे। तीन सप्ताहों के समर्पण ... और राजविद्या में पारंगत कवि अपना स्थान पर छोड़कर चले गए इससे सब ओर हाहाकार मच गया। राम, लक्ष्मण और विश्वामित्र

कि जमदग्नि की आज्ञा के अनुसार हृदय के साथ बड़ा अनुशासन रखा गया है। वह सुनकर भी वह एक शब्द तक न बोला।

संध्या हो चुकने पर वह पुनः कुशमाल में गया। सुबल को तैयार कर साथ लिया था। उसे आश्रम के बाहर एक पेड़ से हो बाँधा।

भोजन के पश्चात् उसे नींद आने लगी और रेणुका ने सदा की भाँति उसे सोने के लिए कहा। उसकी आँखों में नींद भर गई थी।

प्रतिदिन नींद कम आती है इस सम्बन्ध में राम को कुछ ज्ञान था। इन्द्र ने जिस अन्धकाररूपी वृत्र को हराया था उसका निद्रासुर नाम का एक पुत्र था। रात होते ही उसे पकड़ने के लिए वह दुष्ट आता था। इन दोनों को आपस में लड़ना पड़ता था पर जब राम उसे मारकर हराता था तब कुछ प्रातःकाल होता था। आज उसने निद्रासुर को चले जाने के लिए बहुत समझाया पर उसने एक न मानी। राम चौंक पास कर उठा। आज उस अन्धकार के स्वामी को मारकर भगाना ही था। उसे लगा कि वह दुष्ट असुर उसके बाएँ हाथ की उँगली पर बैठा है।

वह उठकर बाहर गया और एक काँटे से बाएँ हाथ की उँगली पर बैठे हुए असुर पर आघात किया। विकराल आँखों से वह उँगली की ओर देखता रहा और उसमें से जब असुर का रक्त बह निकला तभी उसे शान्ति हुई। वह झोंपड़ी में लौट आया। असुर भाग गया। राम की आँखों से नींद उड़ गई। और फिर जब असुर आकर उसकी आँख पर चढ़ा कि तुरन्त उसने बाएँ हाथ की वह उँगली दबाकर असुर का रक्त निचोड़कर उसे हराया।

रात होने पर उसके सिर पर वात्सल्यपूर्ण हाथ फेरकर रेणुका जमदग्नि की झोंपड़ी में चली गई। राम के साथ जो सोती थी वह सोने लगी तब तक उँगली दबाकर वह निद्रासुर के साथ लड़ा। फिर वह उठा और कन्धे में बँधा हुआ पाथेय लिया और झोंपड़ी से बाहर निकल आया।

से उसे पुकारा। पर कुछ उत्तर न मिला। वह स्वतः से नवासा थी दुर्गन्धित राम के न आने से आकर हाथ लगाया फिर भी राम बिस्तरे में नहीं था। वह घबराकर उठा 'राम ! राम !' कोई उत्तर न मिला। तब वह घबराकर बाहर आई 'राम ! राम !' वह चिल्लाई। राम का कोई पता न था।

वह जमदग्नि की झोंपड़ी के पास आकर चिल्लाई। 'स्वामी ! स्वामी ! राम न जाने कहाँ चला गया।' चारों ओर की झोंपड़ियों के लोग जाग गए। रेणुका घबराई हुई बाहर आई और आप की बात सुनी। उसके मातृहृदय में तुरन्त ही भय का सञ्चार हुआ और वह भूमि पर गिर पड़ी। विवाह के दिवस से उसने अपने पतित्व को देव से भी अधिक माना था। आज उसकी आँख वह क्रोधपूर्ण अश्रु टपकाती आँखों से देखती रही।

'हा... मेरे राम ...' क्रन्दनपूर्ण उसका स्वर सबने सुना। 'तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गए ? मैं जानती ही थी कि ये सब हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पड़े हैं व तुम्हें सुख से शान्तिपूर्वक नहीं रहने देंगे।'

ऋषि जमदग्नि इस विलाप का कारण नहीं समझ पाए "इस प्रकार क्यों रोती हो ? वह इधर उधर गया होगा अभी आ जाएगा।"

इन शब्दों से रेणुका को तनिक भी आश्वासन न मिला। माता की दृष्टि से ही ऐसी अनचाही कितनी ही सूक्ष्म बातें उसे स्मरण हो आईं। जब राम को दूर जाने की बातें होती थीं तब उसके बालमुख पर प्रकट होने वाले कोमल और उमंग का उसे स्मरण था। वृद्ध कवि का जाना सुनकर राम की आँखों में उत्पन्न होने वाले तेज की स्मृति हो आई। उन बड़ी-बड़ी काली आँखों के तेज की भाषा यही समझी जाती थी। उसमें एक ही अर्थ उसने पढ़ा था— मैं विश्वामित्र के आश्रम में नहीं जाऊँगा।

अम्बा की आँखों से आँसू बहने लगे 'मेरे लाल इन्द्र! तुम मेरे पास क्यों नहीं रहे ! तुम्हें तो सब मेरे पास से छुड़ा लेना चाहते थे। मेरे बालक मेरे तीन ताम पुत्र मेरे पास से दूर हुए यह तो मैंने ज्यों-त्यों सहा,

आश्रम के भृगुओं के हृदय में कटु असन्तोष और विपरीत भावना भर गया।

महाअथर्वण ऋचीक जिस समय समुद्र के उस पार से भृगुओं को सप्तसिन्धु में ले आये थे उसी सरस्वती और प्राचीन समय के वे थे। इस समय की वीरता और विद्या उन्हें स्वयं ज्ञात पड़ती थी। अगस्त्य लोपामुद्रा वसिष्ठ विश्वामित्र और जमदग्नि ने वर्षों तक जो संस्कार धारा निर्माण की थी उन्हें वे अभ्यस्त मानते थे।

अपनों द्वारा प्राप्त विजय और समृद्धि से जो आनन्द और उल्लास बढ़ा था उसके प्रति इनका तिरस्कार समस्त सप्तसिन्धु में ज्ञात था।

उन्हें भृगुओं पर बहुत गर्व था। भृगुओं की अथर्वण मंत्र विद्या उन्हें पसन्द था। उस विद्या से वे वश कर लेते थे। वसिष्ठ विश्वामित्र और जमदग्नि की विद्या को वे समझते भी न थे और उन्हें वह अच्छी भी नहीं लगती थी। इस महाअथर्वण के शिष्य की वृद्धावस्था की एक ही इच्छा थी कि भृगुओं की मंत्र विद्या और शस्त्र विद्या की पैतृक सम्पत्ति वे किसी योग्य भृगु को दें।

विश्वामित्र की सम्मति में जमदग्नि भृगुश्रेष्ठ के योग्य न निकले। यह उनके हृदय में सना हुआ कठिन अभिशाप था। अपने पुत्रों को उन्होंने अच्छी तरह शिक्षित किया था किन्तु फिर भी उन्हें शान्ति नहीं मिली थी। विश्व बुद्धिशाली था किन्तु शस्त्र विद्या के अतिरिक्त उसे और कुछ अच्छा नहीं लगता था। जमदग्नि के तीनों पुत्र मंत्र विद्या और कर्मकांड में कुशल थे पर इन सब में महाअथर्वण होने योग्य एक भी नहीं था।

निराशा उनके हृदय में घर करने लगा। पर बिजली की चमक कड़क की गरज और वज्रपात के साथ राम का जन्म हुआ तब ऐसी श्रद्धा उनके हृदय में हुई कि उनकी आशा सफल होगी।

अठहत्तर वर्षों की सब अभिलाषाएँ उन्होंने राम के ऊपर केन्द्रित की थीं। इस विराट् और तपस्वी बालक पर उन्होंने अपना प्रेम ही

हो बालकों के रोने की ध्वनि दूर से सुनाई दी। और वृद्ध कवि का ध्यान टूटा।

'कौन है?' बाहर निकल कर उन्होंने पूछा।

'पिताजी, रामचन्द्र हम दो और मैं हूँ' विनय का स्वर सुनाई दिया। दोनों ने आकर वृद्ध कवि के पैर छुए।

बैठो, उन्होंने आज्ञा दी। उनके हृदय में आशा का संचार हुआ।

गुरुदत्त ने हाथ जोड़कर कहा "महर्षि अगस्त्य और राजा दिवोदास ने हमें भेजा है।

किसलिए?" उत्सुक वृत्ति से वृद्ध ने पूछा। उनके मुख पर व्यग्रता थी और क्रोध था।

'आप इस प्रकार बड़े क्रोधी बनें क्या यह आपको शोभा देता है? इससे समस्त सप्तसिन्धु में सबकी अपकीर्ति होगी।

तुम्हारी कीर्ति और अपकीर्ति से मेरा क्या सम्बन्ध है? आज साठ हजार वर्ष तो मैंने तुम्हारी कीर्ति बढ़ाने में बिताए हैं। अब मेरा रक्त पीना चाह रहा है।

वृद्ध कवि को ऐसे क्रोध के समय समझाना बहुत कठिन था और इस बात का बचपन से इनको अनुभव था। इसलिए इस समय बात नहीं करने का उसने प्रबन्ध किया। पर वृद्ध कवि कब मानने वाले थे। वह क्रोध में कुछ कहने जाते थे कि उन्होंने आज्ञा दी।

आप शान्त हों, इस बात ने नम्रता से कहा 'राम के लिए—

'राम का क्या?

"महर्षि अगस्त्य ने ऐसा मार्ग निकाला है कि अब राम विश्वामित्र के आश्रम में पढ़ने के लिए आयें तब आप वहीं रहें।"

वृद्ध कवि की आँखें लाल हुईं। विश्वामित्र के आश्रम में रह कर राम को सूर्यवंश का दीप बनाया जा सकता है? क्या उस से मूर्ख

वृद्ध के साथ बैठे हुए वे जब इस प्रकार बात कर रहे थे तब नदी के उत्तर तीर पर लगभग पचास घुड़सवार वेग से आगे बढ़ते हुए उन्होंने देखे। हय के साथ विमद पता लगाने के लिए उठे।

घुड़सवार फिर वृद्ध के कानों में पुनः ध्वनि सुनाई दी— वृद्धा वृद्धा में आया हूँ ... अधीर आँखों से वे नदी के उस पार देखते रहे।

घोड़ों को उस तीर पर छोड़कर घुड़सवारों के नायकों को नाव में बैठकर इस पार आते उन्होंने देखा। उन्होंने सोचा कि उनका राम आया होगा पर वह नाव में नहीं था। वृद्ध के हताश हृदय पर आघात हुआ। आँखों में अँधेरा छा गया और सिर पर हाथ रखकर वे बैठ गए। राम उनका कहाँ से हो सकता है? वह तो जमदग्नि का पुत्र विश्वामित्र का शिष्य है।

हय विमद और हयग्रीव का पुत्र कृशाश्व ये तीनों उनके सामने आकर खड़े हो गए। काँपते हुए ओठों और चिन्तातुर नयनों से कृशाश्व ने वृद्ध को प्रणाम किया।

विमद आगे बढ़ा, गला खँखारकर धीरे से बोला 'पिताजी!'

'क्यों?' नींद से जागे हुए के समान वृद्ध कवि ने पूछा।

'पिताजी' विमद का स्वर रोता सा हो रहा था, 'राम आश्रम से चले गए हैं।'

निष्फलता की मूर्ति के समान दिखाई देते हुए वृद्ध सोए हुए, और उनकी आँखों में भयङ्कर प्रकाश आ गया, "क्या?" वे चिल्लाए।

हमारे निकलने के पश्चात् ऐसा जान पड़ता है कि लोमा को राम कह आये कि गुरु वृद्धा के पास जाता है। फिर जान पड़ता है कि रात को राम अकेले ही सुपर्ण पर बैठकर आश्रम मिलने यहाँ आने के लिए चल पड़े। भृगुश्रेष्ठ ने कृशाश्व को खोज करने के लिए भेजा है।'

'धन्य मेरे पुत्र! पर वह है कहाँ?' वृद्ध की आँखों में प्रमाद छा गए, 'कहाँ है वह?'

'कृशाश्व को पता लगाने के लिए ही यहाँ भेजा है' विमद ने

भाग की भांति वह अपनी और समस्त दूर तक फैलती रहती थी। उसे दृढ़ विश्वास था कि इस भाग के इस द्वार पर उसका राम था इस भाग में ही उसका राम आने वाला है आ रहा है। उसके कान में सुरथ टाप की ध्वनि निरंतर आया करती थी।

कामा के हृदय में श्रद्धा का स्थान जैसा पहले थी वैसा ही आज बलता थी। उसे इतनी ही चिन्ता थी कि जब इस भाग से उसका राम बार बार वह स्वयं उसके दर्शनों के लिए उपस्थित न होता।

राम की खोज में वृद्ध कवि वायमान ने आकाश पाताल एक कर दिया। मार्गों में स्थान स्थान से कुसुमपुर का जो मार्ग भाग में इतने भाई इतनी गाड़ियाँ, इतने पशु और मनुष्य पाँव-मार्ग दिखा से आए और गए थे कि सुरथ के खुरचिह्न मिलना कठिन था

वृद्धकवि कुसुमपुर आकर यह पता लगाया कि रघुका और कामाके साथ राम ने क्या-क्या बातें कीं सुरथ का किस प्रकार पतन किया कौनसे रत्न साथ में लिए थे आदि। सुरथ भाग नहीं भूल सकता इस बात का उन्हें पूरा विश्वास था।

उनके शिष्य हम्मीर के पुत्र राजा भोज को सर ... तक अपना राजा मानते थे इसलिए भोज का दृश्य न साथ में लिया और वह मार्ग से कटे हुए छोटा-मोटा टीलों पहाड़ियों से होकर गाँवों के निवासस्थानों में वे राम की खोज करने लगे। कितने दिन बीत गए महीनों हो गए पर राम का कहीं पता न चला। जब सब प्रयत्न निष्फल होने लगे तब छोटा-मोटा ... बातमें वृद्ध कवि से विश्राम करने लगे और उसको समझाने लगे।

विद्यानन्द समझा कि अधिक खोज करना व्यर्थ है, यदि वह जीवित होता तो मिले बिना न रहता। पर वृद्ध कवि से यह कहने पर कहा ... पर फिर उनके शरीर का अन्त न हो जाए इस भय से उसने भी पिता के साथ रहकर राम की व्यर्थ खोज की।

वृद्धकवि ने अभी आशा छोड़ी नहीं थी। अनुभवी सम्राट की

उसके मन में विचारधाराएँ उठ रही थीं। वह आश्रम में रही है तो [illegible] कोई लिखा आश्रम होगा। व नाना प्रकार होने पर बिना वहाँ से रुक कर [illegible] जाना। [illegible] जानती थी वह उस स्थान को जाता। वह सब भावना तो इस भाति की भाँति हुए ऐसा रहता था बड़ा हो हा [illegible] क्या समझकर [illegible] बड़ा लगा। उसने विचार किया कि बुद्धा इस प्रकार चक्कर चल गए यह उन्होंने ठीक न किया। उस साथ [illegible] कैसा आवश्यक जाता? पर विश्वामित्र ने [illegible] हार। विश्वामित्र क्यों उसे देखना चाहते हैं? उसे तो सब पता है कि बुद्धा कहते थे कि उसके [illegible] को सब पाता था फिर उस विश्वामित्र के पास रहने की क्या आवश्यकता है।

[illegible] होकर ध्यान ठीक चल रही थी। मुँह से "बबदक "बबदक" बातें तो बाबा वहाँ से चलता है यह वह जानता था। उसने बबदक बबदक करना प्रारम्भ किया।

[illegible] बार जंगल में फिर हुए बाधा के मधुर राम राम राम राम कहकर सम्मान करते थे। उस कृष्ण के पास [illegible] जाना में [illegible] तो वह अवश्य उनके साथ बैठकर बातें करता।

उसे पता था कि [illegible] वायुका महत्व करते हैं और उनका उनको स्थिरता जाता है। [illegible] को स्थिर मन में [illegible] करने जाता थी इस [illegible] वायु का पानी गिर जाता था इस से [illegible] वायु बनता था। उस ने [illegible] कर वायु मुँह में [illegible] किया। थोड़ा देर में वह [illegible] लगा। [illegible] में भूत [illegible] आते हैं यह भी वह जानता था। पेड़ों पर जुगनूकी पंक्तियाँ उड़ रही थीं और वह उन-जैसे बातें कर रहा था। [illegible] व यहाँ-से-वहाँ और वहाँ-से-यहाँ उड़ता थी। जब [illegible] पृथ्वी पर आते हैं तो जुगनू बनकर आते हैं। उन्हें तो [illegible] [illegible] उसे गाना आता है। उसने एक-दो जुगनू पकड़नेका [illegible] किया पर वह सफल नहीं हुआ।

बूढ़ा उसका [illegible] करते हुए बढ़ रहे। वह पहुँचकर आनन्द से

[illegible] नहीं [illegible] था। [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible] में [illegible] हुए [illegible] ।

[illegible] में [illegible]

[illegible] में [illegible] ।

[illegible] । [illegible] में [illegible]
[illegible] लिखोगे ?
[illegible] में [illegible]

[illegible] । [illegible]

[illegible]

ढीठ के मस्तक पर भी आँख मारा, दूसरा हाथ बगल पर गया। वे हाथ जो उसके पीछे के दुश्मन पकड़े हुए थे वह उसने खत्म किया। वह भीतर ही कभी इस प्रकार नहीं लड़ा था जैसा इस समय लड़ रहा था।

एक एक कर के इसी ने एक आघात किया। वह इस के पैर में लगा। घुटना टूट गया वह पैर सूखा और वैसे ही गिर पड़ा। इन्हीं ने झपट कर उस बहुत कस कर बाँधकर डाल दिया गए।

[illegible] के सुँह से न एक शब्द न निकला। वह जानता था कि राजा लड़का और शत्रुओं का काम है फिर वह तो मूढ़ था।

इन्हीं ने राजा को न जाने सुरक्षा की पीठ पर बाँध दिया। वह घोड़ा या उसके घुटने पर बैठा और उनके को एक पगड़ी पर बाँध कर-कर चलने लगा। सुरक्षा के पीछे उन दोनों इस प्रकार चलते थे कि उनके सुर-चिह्न नहीं आए।

घर पहुँच मैं रात के पीछे मैं पौसा हो रही थी। पूरब में सबेरे के होने हो रही थी। इतने इस तिरछे दुःख था। वह आप निकलने का मन बहुत व्याकुल हो न जाने क्या सोच रहा था।

अन्न-जल-त्याग में वे इस घर वापस हुए। राम यहाँ आप आराम करने लगे। पुत्र कुछ अचरज भरे था। उनके बहुत-से शब्द उनको समझ में भी न आते थे। दूसरे सब और बिना कहे सुना करते थे। बाल्यकाल में यदि विश्वामित्र को इसका ज्ञान किस प्रकार उठा ले गए थे वह सब उनके मन पिता से सुनी थी। विश्वामित्र को उन बातों ने इसी प्रकार बाँधा होगा था। इसका [illegible] करते-करते उन बाँह के पाँव घर आ।

अंत में एक राजा का [illegible] [illegible] [illegible] कर अन्त के बराबर इन सबने [illegible] जान का [illegible] न काशी का उनके पैर इस [illegible] [illegible] [illegible] और चल पड़े। [illegible] [illegible] रास्ता बाँधकर [illegible] [illegible]।

उस सामने वाले व्यक्ति को बूढ़े ने रोका और उस राम को उठाने के लिए कहा। उस व्यक्ति ने राम को उठाया और बूढ़े ने रस्सी खींच कर राम को फिर से चलाने का प्रयत्न किया।

राम की आँखों में आँसू भर आए। उसकी पीठ पर पड़े हुए कोड़े के घावों से खून निकलने लगा था। उसके पैर थर-थर काँपने लगे थे। उसका गला सूख आया था पर उसके होंठ और दाँत उसी से वैसे ही जकड़े थे। आँसुओं से भरी हुई उसकी दोनों आँखों का आत्मवत् प्रदीप्त तेज स्थिर और एकाग्र था।

वह फिर पटककर चिल्लाया "मैं नहीं हटूँगा, बस नहीं हटूँगा।" वह जहाँ खड़ा था वहाँ से हिला नहीं। उस व्यक्ति उसे हटकाने के बदले तो उनमें से एक के हाथ में राम ने काट खाया। बूढ़े ने सुरस को फिर से हाँकना प्रारम्भ किया किन्तु वह टस-से-मस नहीं हुआ।

अब इस बालक से अपनी समझ ही वे न कर सके तब अन्त में पकड़कर दासों ने राम को उठाकर घोड़े पर बिठा लिया और बूढ़े की सवारी आगे बढ़ चली।

उस दिन से बूढ़े और उसके साथियों ने राम को सताना छोड़ दिया और उसे सुरस पर ही बैठाए रखने लगे।

आठ दिन तक बूढ़ा और उसके साथी आगे-ही आगे जंगल में बढ़ते गए तब सामने पर्वत मिले। उसकी उपत्यका में दासों के बहुत-से गाँव थे जहाँ बूढ़े का बहुत आदर-सम्मान हुआ। बूढ़े की सवारी पहुँचते ही ज्यों उसके एक साथी ने शंख फूँका कि उसकी गूँज सुनते ही सैकड़ों काले-कलूटे नंगे पुरुष-स्त्री और बच्चे इकट्ठे होकर नाचते और 'हुईई डुडुडू' की किलकारी से उनका स्वागत करते। बूढ़ा भी प्रकट प्रसन्न होता और कभी-कभी स्वयं नाचता भी था। फिर सब 'हुईई डुडुडू' की प्रचंड किलकारी करते और पशु पकाकर खाते थे। इस प्रकार एक-एक गाँव में रात्रि का विश्राम करती हुई बूढ़े की सवारी आगे बढ़ती थी।

जहाँ यह सवारी जाती वहाँ बूढ़ा राम को सबसे आगे रखता

घराऊ के मध्य इस किनार पर भी बड़ी भारी लाठी रखी। उसे
ध्यान से देखकर उसने उसमें बैठे हुए व्यक्तियों का ध्यान आकृष्ट
किया। हो सकता है उस व्यक्ति ने शिकार बैठकर एक पल में उतारकर
राम तट की ओर तरने लगा।

स के पास आने पर उसने देखा कि नाव में से चार पुरुष
स्त्रियों के साथ बैठे उसकी ओर देख रहे थे। वे लोग देखों के समान
के न थे वह देखकर राम को शान्ति हुई। नाव में जो पुरुष बड़े
थे उनमें से जो अवस्था में बड़ा था वह पिता था और अन्य
उसके पुत्र थे। राम को पास आते देखकर नावों का स्वामी होकर
घाट बाबा और उस तट पर आ गया। वे सब लोग तट पर उतर
पड़े और राम को देखकर सब बड़के हँसने और तालियाँ बजाकर
कूदने लगे।

उस व्यक्ति को बड़ा मत्स्य बाला-सा दिखाई देने लगा। वह बड़ा और
लगता था।

"बहुत अच्छा हुआ बहुत सुन्दर है। हम भी लावें तो कम-से-कम
निकेगी" उसने इशारा करके हाथ मलते हुए कहा।

विभूती हो या क्या! यह सुनकर न कहा और सौ-पाँच सौ
महल में ही मिल जायेगी। इसको देखें तो ऐसा घर पर भी कितन
पर है।

"यदि मैं मिले तो तुम मेरे सच्चे पुत्र" कहकर पिता ने पुत्र को

राम ने दोनों को देख लिया। उनका क्या, वह नहीं समझा। अपनी
स्वाभाविक सरलता से उसने कहा "तुम भूखे लगते हो भोजन दो।
"यह लो" मत्स्यराज के बैठने के हुए लड़के ने पास आकर
वह लड़का पकवान में होता था। फिर राम
नियों का मदद लेकर
गया।

है

वह उसके भीतर चढ़ गया। सबकी हँसी रुक गई। नाववाला और उधर रास्ता छिपट गया और उस खींचकर बखान करने लगा। राम ने भी देखा वह निकला कि नाववाले को कुछ पता के लिए उसे बखान करना कठिन हो गया।

विशु रस्सियाँ पूछ सकता हुआ मुँह से गालियों की वर्षा करता हुआ धरती पर न हटा। विनाश करने की उसकी वृत्ति तो सुप्त हो गई।

हाथ की मुट्ठियाँ बाँधे तमतमाए हुए, वे सबका देखता हुआ राम खड़ा रहा। नाववाला उसकी ओर देखने लगा "हाँ भाई! तुम तो बृहस्पति के पुत्र हो, अब तो ठीक है?"

नहीं, राम चिल्लाया, मैं भृगु हूँ, ऋषि जमदग्नि का पुत्र।

सब लोग फिर हँसने लगे। काम ध पर नाववाले ने उन्हें टोका "हाँ, भाई, हाँ! तुम तो हमारे गुरु हो। अब तो ठीक है न?"

जब सब शान्त हुए तब नाववाले ने राम को रोटी का टुकड़ा देने को कहा।

"धरती पर पड़ी हुई रोटी मैं नहीं खाऊँगा।

"इसको जा हम दूसरी रोटी लाकर दे" कहकर नाववाले ने मुस्कराते हुए पूछा "भाई तुम्हारा नाम क्या है?"

राम भार्गव

"अच्छा, अच्छा, शान्ति से भोजन करो। लो थोड़ा पानी भी लो।"

रात होने पर तट पर नाव लगाकर पूरा परिवार भोजन करने बैठा। राम को भी उन्होंने थोड़ी दूर पर बिठा दिया और विशु आकर नाव के बीच में रखे हुए एक बड़े पिटारे में से दो बालकों को बाहर ले आया, उन्हें नहलाया और राम के साथ बिठाकर तीनों को भोजन दिया। एक बालक लगभग चौदह वर्ष का था और दूसरा राम की अवस्था का पर डील का पतला था। दोनों के पैरों में रस्सी बँधी थी जिसे विशु हाथ में पकड़े था।

चौदह वर्ष का लड़का पतला-दुबला, सुन्दर और रूपवान् था। उसका मुख चपल किन्तु म्लान था। उसके छोटे-छोटे बालों से ज्ञात होता था कि उसका सिर थोड़े दिन पहले मूँड़ा गया है। उसने मन्त्र से पहले धीरे से अग्नि का आवाहन किया और आहुति दी। चिर और परिचित मन्त्र सुनकर राम को ऐसा हर्ष हुआ मानो कोई स्वजन मिल गया हो और वह हँसा। वह लड़का भी संकोच से हँस पड़ा और इस पारस्परिक हास्य से दोनों मित्र बन गए। नाववाले का परिवार भोजन करने में और गप्पें हाँकने में लगा था इसलिए दोनों पास-पास आ गए।

'तुम कहाँ से आये हो?' उस लड़के ने राम से पूछा। उसका स्वर मीठा था।

'मैं नदी से तैरकर आया हूँ', राम ने कहा।

'तुम्हारी जाति क्या है?' उस लड़के ने कहा।

'मैं भृगु हूँ। तुम कौन हो?'

उस लड़के का मुँह मन्द पड़ गया। 'मैं... मैं आङ्गिरा हूँ', उसने हिचकिचाते हुए कहा।

'हम दोनों तो एक ही हैं', राम ने उत्तर दिया, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम शुनःशेप', उसने नीची दृष्टि करके काँपते हुए कहा।

राम हँसा, 'कुत्ते की पूँछ के बाल! कैसा विचित्र नाम है।'

तीसरा लड़का तो भोजन करके सो गया था। नाववाले का परिवार जब भोजन कर चुका और वायु बहने लगी तब विभु ने शुनःशेप और राम को मन्त्र में ध्यान की आज्ञा दी और तीसरे का हाथ पकड़कर स्वयं ही उस नाव की ओर समीप ले गया।

नाव में आकर विभु ने शुनःशेप और उस सोते लड़के के पैरों में बँधी रस्सी एक काठ में बाँध दी। फिर वह राम के पैर में रस्सी बाँधने

लाया। पहले तो राम ने उसे काटने का विचार किया पर शुनःशेप ने आँख से संकेत किया इसलिए उसने पैर बाँधने दिए।

फिर बड़ी मालवाले ने दोनों भाइयों के ऊपर लाठ लिए और माल का से लाग बन्द लगी। शुनःशेप से विशु ने रात भर रस्सी खींचने का काम करवाया और बहुत दिनों का थका हुआ राम का रातों की नींद एक ही रात में पूरी करने लगा।

प्रातः होने पर विशु ने राम का लात मारकर जगाया। राम बिगड़े हुए घोड़े के समान हिनहिना उठा। वह एकदम विशु के पैर से इस प्रकार लिपटा कि विशु भाव में धड़ाम से गिर पड़ा। विशु इतनी जोर से चिल्लाने लगा कि उसके बाप और भाई दौड़ते हुए वहाँ आये।

"यह लड़का तो अविनय से भरा है" विशु ने कहा। "मुझे उसने गिरा दिया।"

"मुझे तुमने लात मारी" राम ने जवाब से कहा। "मुझे—जमदग्नि के पुत्र को, लात लगाने वाला तू कौन होता है!" उसने गर्व से पूछा। वह मुट्ठा बाँधकर लड़ने को तैयार हो गया। उसकी आँखों में ऐसा ज्वाला थी कि माझवाले भी सकपका गए।

"विशु" बड़ी माझवाले ने धमकाते हुए कहा "तुम इस लड़के को यदि फिर से छुआगे तो मैं तुम्हें मारूँगा। इसके मुख का भी तुम्हें कुछ विचार है?" विशु फिर चुप सा हुआ खड़ा रहा। उसकी आँखों में दुःख था।

"अच्छा लड़का! लगता है भाई" बड़े नाववाले ने राम से कहा। "शान्त हो जाओ। अब तुम्हें विशु नहीं छुएगा। समझे!"

राम जब शुनःशेप के पास गया तब उसने प्रेम से राम का हाथ दबाया। शुनःशेप का हाथ सुन्दर और कोमल था। ऐसा अनुभव राम को हुआ मानो वह छाया का ही हाथ हो।

तीनों बन्दी लड़के ज्यों-त्यों करके नहाए। फिर बड़े नाववाले ने ही उन्हें खाने को दिया। और फिर नाव में रखकर किनारे में उन्हें आगे

के लिए कहा। राम ने शुनःशेप की ओर देखा। उसने संकेत किया। राम भी चुपचाप पिंजरे में घुस गया। शुनःशेप और कद्रू—तीसरा बालक भी उसमें उतर गया।

'लो लड़को! ये मूलियाँ खा लेना।' कहकर बहुत ही उदार नाववाले ने पाँच छः मूलियाँ पिंजरे में डालीं और ऊपर का ढकना बंद कर दिया।

पिंजरा तीनों लड़कों के लिए बहुत बड़ा था। उसके छिद्रों से पर्याप्त प्रकाश भी आता था। उसमें तीनों के बैठते ही कद्रू ने रोना प्रारम्भ किया। शुनःशेप उसे गोदी में लेकर प्रेम से उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा।

'मैं अपनी माँ के पास जाऊँगा।' कद्रू फूट-फूटकर रोने लगा। नाववाले ने ऊपर के ढकन को ठोका और शुनःशेप ने कद्रू का मुँह अपनी छाती से लगा लिया। 'चुप रह, चुप रह। रोवेगा तो वह मारेगा।' उसने कहा। कद्रू ने ज्यों त्यों करके अपनी सिसकियाँ दबाईं।

'इसकी माँ कहाँ है?' राम ने पूछा।

'ये लोग इसकी माँ के पास से कद्रू को चुरा लाए हैं।' शुनःशेप ने राम के कान में कहा।

'ये लोग अर्थात्?'

'ये ही नाववाले।'

'क्यों?'

'ये तो पणि हैं। हम लोगों को दूसरे गाँव में बेचने के लिए ले जा रहे हैं,' शुनःशेप ने कहा।

'तब यहाँ ये सब लोग क्या करते हैं?'

'सुवर्ण, रत्न, कस्तूरी, कपूर आदि इन्होंने जो नावों में भरा है उसे बेचने के लिए ये गाँवों में बेचने आयेंगे।'

'हम लोगों को बेचकर क्या करेंगे?'

'सुवर्ण या रत्न लावेंगे।'

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] यदि [illegible]
[illegible]
[illegible] करेंगे ?"
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

महाप्रयत्न अमीक।

शुनशान सरककर पास आया। "राम! क्या मैं तुम्हें बुरा लगता हूँ?" शुनशान ने इस प्रकार पूछा मानो उसे वेदना हो रही हो।

"हाँ क्यों?" राम ने पूछा।

"तुम मुझे फिर मारोगे तो नहीं?"

"अरे यह क्या कहते हो?" कहकर राम ने शुनशान को अपने पास खींच लिया।

डरते-डरते शुनशान पास आया और राम ने शुनशान का हाथ अपने हाथ में ले लिया। शुनशान की आँखों में जो आँसू भरे थे वे राम के हाथ पर गिरे।

"क्यों रोते हो?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं।" कहकर राम के हाथों में सिर छिपाकर शुनशान रो दिया।

दिन भर विभु का बड़ा भाई नावों की देखभाल में रहा और बीच तट पर स्त्रियाँ भोजन बनाने लगीं। नाववाले के लड़के भी इधर-उधर खेलते रहे। बड़ा नाववाला और उसके दोनों लड़के सिर पर टोकरी रखकर आसपास के गाँवों में माल लेने बेचने चले गए।

और जब संध्या हुई तट निर्जन हुआ तब पहले दिन के समान ही दोनों लड़कों को पिटारे से बाहर निकाला गया। आज उन्हें नहाने भी दिया गया और नाववाले का परिवार भोजन करने बैठा। फिर बड़े नाववाले ने लड़कों को पास बैठने के लिए कहा और स्वयं उन्हें खाने को दिया। भोजन करते-करते और भोजन के पश्चात् भी सदा वही बड़ा नाववाला देश-विदेश की लम्बी चौड़ी गप्पें हाँका करता था और बड़ी से बड़ी बात वह कह देता, सुनकर उसका परिवार हँसने लगता था।

रात हुई और धीरे-धीरे रात बढ़ती गई। पथिकों ने नाव खेना प्रारम्भ किया। नाववाले का बड़ा लड़का नाव चलाने लगा और दूसरे आवश्यकता पड़ने पर उसे सहायता करने के लिए उसके पास आ बैठे।

राम कद्रू के पास बैठकर उसे सान्त्वना देने के लिए रुक गया। जाकर जब कद्रू सो गयी तब राम उठकर शुनःशेप के पास जा बैठा। उस समय वह चकित-सा बैठा कुछ बड़बड़ा रहा था। राम ने शुनःशेप का हाथ पकड़ा पर शुनःशेप ने उसे चुप रहने का संकेत किया और वह बड़बड़ाता रहा। वह लड़का सुडौल सुन्दर और कोमल था। मुँह उदास था उसकी आँखें जैसी उजली थीं वैसी ही दैन्यपूर्ण थीं। उसके हाथ भी बालक के हाथ के समान सुन्दर थे। राम को वह लड़का बहुत अच्छा लगा। शुनःशेप का बड़बड़ाना बन्द हुई तब उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में आँसू भर थे। फिर उसने राम से पूछा

राम क्या सचमुच तुम ऋषि जमदग्नि के पुत्र हो?

'क्या मैं कभी झूठ बोल सकता हूँ?

'और तुम सचमुच ऋषि विश्वामित्र को पहचानते हो?

"अरे वे तो पिताजी के अच्छे दोस्त हैं। मैं तो नित्य उनसे मिलता हूँ। और वे मुझ भी ऐसे ही बोलते हैं।

"क्या तुम्हें ज्ञान है?

"थोड़ा सा।

'क्या तुमने महर्षि अगस्त्य और लोपामुद्रा को देखा है?

मैंने? अरे लोपा तो भगवती के ही पास रहती है।

'क्या मुझे इन सबकी बातें बताओगे?"

"हाँ, अवश्य बताऊँगा। इसमें क्या बात है?

राम को वह लड़का बहुत आकर्षक प्रतीत हुआ। पर बूढ़ों की बात के अतिरिक्त इन सबकी बातों में उसे कैसे आनन्द आयेगा यह विचार उसके मन में हुआ। शुनःशेप तो राम की ओर देख ही रहा था। उसने डरते डरते पूछा "राम क्या मैं तुम्हारा हाथ पकड़ूँ?

'हाँ लो यह हाथ।

शुनःशेप ने [illegible] राम [illegible] रहा

और फिर [illegible] आँख [illegible]

[illegible] ?

[illegible] नहीं [illegible] । [illegible] पाने [illegible] [illegible]

तुम कौन हो ?

मैं कहूँ तो तुम [illegible] विश्वास [illegible] ?

[illegible] ?

[illegible] फिर भी क्या तुम [illegible] और मुझ [illegible] !

[illegible] ?

[illegible] कविता [illegible] [illegible] ।

[illegible] नहीं [illegible] ?

[illegible] ?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हाँ धीरे से आते हैं।

यह सुनकर शुन शेप को पुन विचार आया कि राम देवता है पर वह कुछ बताता नहीं।

"तुम्हारे पिता को महर्षि ने शाप क्यों दिया ?" राम ने पूछा।

शुन शेप झिझका। "यह कैसे कहा जा सकता है ?" "राम बड़ा मैं तुम्हें फिर बताऊँगा।

दूसरे दिन संध्या समय पाला लोग अच्छी कमाई करके लौटे इसलिए उनका परिवार प्रसन्न था। इस लड़की को भी उन्होंने बहुत खाने को दिया। वही नाचवाला जो राम को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ था यह एक बार तो उसने प्रश्न से उसका मुँह अपने दोनों हाथों में दबा लिया। [illegible] उसने प्रश्न के उत्तर में कहा। राम के उसके हाथ [illegible] की इच्छा हुई पर शुन शेप ने [illegible] इस पर उसने अपने मन को रोक लिया।

अब [illegible] को [illegible] में [illegible] उसने [illegible] का नाम उसके सुनने में आया इस बार वे [illegible] शुन शेप इस [illegible] को [illegible] समझता था। इसमें वह [illegible] में [illegible] उसने राम का हाथ पकड़कर खींचा।

[illegible] के पश्चात् [illegible] को [illegible] बड़े [illegible] करने लगा। [illegible] का [illegible] को [illegible]

"[illegible] है। [illegible] ने [illegible] कहा।

"[illegible] कौन है ?" राम ने पूछा।

"[illegible] का [illegible] है। [illegible] है ?"

"[illegible] है ?" राम ने पूछा।

उसके ओंठ काँपते थे। क्या उसीके उत्पाति का लड़का उसके मन पतित को मंत्र सिखावेगा ?

'तुम पतित कहाँ हो। पतित तो तुम्हारे पिता हैं' राम ने लज्जापूर्वक कहा 'मैं मंत्र सिखाऊँगा। बस न ?'

शुनःशेप राम के पास तक बढ़ गया और उसका हाथ अपने हाथों से छुआकर आँखें बन्द करके खड़ा रहा।

'तुम सचमुच में बड़े देव हो।'

राम हँसा 'यह मैं क्या जानूँ ?'

'मुझे बहुत बार स्वप्नों में आकर कहा है कि मैं तुमसे आकर मिलूँगा। क्या तुम्हीं तो वह देव नहीं हो ?' यह बोलते बोलते शुनःशेप का स्वर करुणा से परिपूर्ण हो गया।

राम ने हाथ बढ़ाकर शुनःशेप का सिर फिर अपनी ओर खींच लिया। 'अम्मा कभी-कभी कहती है कि मैं देव हूँ। तुमने पहचान लिया।'

'तब तो तुम अवश्य होगे।' शुनःशेप इस प्रकार बड़बड़ाने लगा मानो नींद में हो और दोनों हाथ में हाथ डालकर खड़े रहे।

मानो अभी तक स्वीकार न किया हो इस भाव से शुनःशेप ने फिर पूछा 'तुम्हें जितना आता है क्या उतना सब मुझे सिखाओगे ?'

'हाँ हाँ अवश्य' राम ने कहा।

'राम, तुम देव जैसे हो, ज्ञान पढ़ते हो।' मानो शंका का समर्थन करता हो इस प्रकार शुनःशेप बोला।

'पर मैं नहीं जानता' राम ने सरलता से उत्तर दिया।

'मैं तुम्हारे साथ चलूँगा' शुनःशेप ने कहा।

'पर गाँवों के पास मैं नहीं आऊँगा।'

'ठीक है। सामने दूर पर वह ऊँची ऊँची घास खड़ी है वहाँ हम लोग घासों में भागकर छिप जायेंगे। यदि नाथ अनुमान की ... तो हम लोग लौट आवेंगे, नहीं तो नहीं आवेंगे।'

नदी में डूब गए थे तो पर बचे गए इस विषय में भी भिन्न कल्पना की गई।

अन्त में बड़ी नाववाले ने तट पर स्नान करने की आज्ञा दी। पहले तो इनके किसी बेड़े को साहस न हुआ किन्तु जब नाव बहुत-सी गालियाँ सुनाई तब उसके दो बड़े लड़के लुक छककर में लाठी लेकर तट पर उतरे। घबराए हुए वे आगे बढ़े और घास में लाठी ठक ठाककर साहस धारण करने का उन्होंने प्रयत्न किया।

कहीं बाघ न निकल आय इससे शुन शेप मुँह पर हाथ धरकर था और भय से थरथर काँप रहा था। राम उन पथि के चारक थे अनिमेष आँखों से देख रहा था। वे जहाँ छिपकर खड़े थे उस की ओर पथि आय। इधर में उतरने का उनका साहस नहीं था। किन्तु व पुकार पुकारकर घास में लाठी घुमाने लगे।

शुन शेप जरा खाँसा और घास हिली। दायियों ने समझा कि इन में से कोई हिंसक प्राणी निकला। बस वे चिल्लाए लुक उनके हाथ गिर पड़ी और घबराहट में वे नाव की ओर प्राण लेकर भागे।

नाव पर फिर कोलाहल हुआ। नाव वाले ने दस सहस्र गालियाँ बात कहकर फिर आक्रन्द किया। पर अन्त में थक आने के कारण सो गए। सब शान्त होने पर राम शुन शेपका हाथ पकड़कर बाहर निकला और गाँव की ओर अनजान रास्ते से उस आगे बढ़ने लगा।

अब वृद्धा के पास पहुँच जायँगे उसने हर्षित होकर कहा।

६

भृगु के आश्रम में अकेले हृदयभग्न कवि इस प्रकार इधर उधर चक्कर लगा रहे थे मानो अपनी मृत्यु की खोज कर रहे हों। ... ने उनके पुत्रों तथा शिष्यान उन्हें बहुत आश्वासन दिया पर वह सब व्यर्थ गया। उनकी सृष्टि में सूर्यास्त होगया था और सूर्योदय का कुछ ... न थी।

बहुत बार 'वृद्धा वृद्धा' शब्द कामदा कण्ठमे उच्चरित किया गया था ...

रहते हुए भी उग्र और विकराल—दूर अत्यन्त दूर से शान्त मधु
रहा था वृद्धा वृद्धा।

वृद्ध कवि की हताश स्थिति जाती रही। मन हृदय में उत्सा
का सञ्चार हुआ। उनकी निस्तेज आँखों से प्रकाश के स्फुलिङ्ग
निकलने लगे। एक छलांग मारकर उन्होंने बहुत दिनों से अप्रयुक्त
और भाला लिया और उछलकर बाहर आये।

त्रिमर्त दौड़ो दौड़ो।'

आश्रम में चारों ओर हल्ला गुल्ला सुन लोग उठे और लूट
तैयार हो गए। फिर गगन भेदी रव हुआ। वृद्धा वृद्धा बाघ
भयङ्कर फुफकार अधीर रुद्र होते हुए श्वासोच्छ्वास से कम होती
भेड़िये का भी वैसा भयङ्कर और दबी हुई गुर्राहट सुनाई दी।
कुन्य चौंक उठे। जिस ओर से स्वर आता था उसी ओर वृद्ध
पचास वर्षों में कभी जितने वेग से नहीं दौड़े थे उतने वेग से दौड़े।
तथा अन्य सब लोग भी जिसके हाथ में जो शस्त्र आया वह लेकर
पीछे-पीछे दौड़ पड़े।

'वृद्धा वृद्धा वृद्धा' अवरुद्ध होता हुआ स्वर
कम्पित और मन्द कर रहा था। भागते हुए व्याघ्र की उसमें
'घरररर' भेड़िये का अवरुद्ध शब्द भी सुनाई दिया।

दोनों स्वर एक के पश्चात् दूसरा सुन ई लिए। वृद्धा भाग
वायुवेग से। उनका श्वास बहुत वेग से चल रहा था।

व्याघ्र और भेड़िये का मान होता स्वर एक साथ सुनाई
बन्द हो गया।

जब वे आश्रम के बाहर के आँगन में पहुँचे तब
प्रदीप्त हो रही थी। वृद्धा का हृदय निराश हो गया
चारों ओर ताकने लगे। अत्यन्त वेदनापूर्ण एक चमत्कार सुन
"ई... ई ई।"

वृद्धा हड़बड़ाकर वहाँ पहुँचे चारों ओर से लूट का प्रकाश

[illegible] हुआ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] हुई थी

[illegible] के [illegible] किया [illegible]
[illegible] किया

[illegible]

तीसरा नगर

मित्र और जमदग्नि ऋषियों के [illegible] के लिए बड़ा [illegible] था। इन्हें अपनी आँखों से देखेगा। उसे एक ऊँचे यूप से बाँधा जायगा। उसके निकट ही यज्ञकुण्ड में अग्निदेव विराजमान होंगे। [illegible] न न चरणों पर स्थिर हो सिर झुकाकर उसका [illegible] करते हुए [illegible] से उस कुमार हुए [illegible] व दृष्टिगोचर होंगे। अपने [illegible] के द्वारा उसने [illegible] को पहचाना था— "[illegible] [illegible] हूँ [illegible] और वे कुमार के समान [illegible] होंगे।

उसने अग्निदेव का [illegible] था। पर कम तो उन्हें यथार्थ में [illegible] के सिंहासन पर विधिपूर्वक स्थापित हुए [illegible]। उसके [illegible] मनुष्यों में श्रेष्ठ और यदि वह पतित न होता तो उसके कुमार [illegible] राम ने इन्हीं के विषय में जो कुछ कहा था वह उसने [illegible] था। सामने विश्वामित्र [illegible]। राम के [illegible] में [illegible] मुनि विश्वामित्र को [illegible] सुनते ही उसका हृदय [illegible] हो जाता था। राम ने उनके विषय में बहुत [illegible] की। [illegible] मनुष्यों के मुख से इन [illegible] गुण [illegible] उसने सुने थे [illegible] आनन्द और श्रद्धा के [illegible] को उसने [illegible] मूर्ति [illegible] थी। [illegible] [illegible] के समान [illegible] उस मूर्ति के [illegible] [illegible] अपनी आँखों से [illegible] [illegible]

उसने [illegible] हुआ। [illegible] [illegible] उसके ही कुमार [illegible] का पुत्र [illegible] [illegible] ......

[illegible] राम ने ही [illegible]

अन्धकार में से इस प्रकाश के स्रोत पर प्रतिष्ठित किया था। उसने ही विश्वास के बिना तड़पते हुए पतित को ऋषियों के संस्कार का उपपान कराया था। शुनःशेप की करुणा आर्द्र चित्त के राम के साथ के सम्बन्ध पर कुण्ठित होगई थी। राम का स्मरण तो उसके लिए तृषित चातक के मुख में पड़ते हुए जलबिन्दु के समान था।

यदि वह हो तो

फिर सब इस अग्नि में होमेंगे—अत्यादि महर्षियों के स्वर हुए। उसके मंत्रों का स्वर उसके कानों में गुञ्जायमान होगा। तब असुर पुरोहित—देवाधिदेव—उसका एक सखा—दो हाथ जोड़कर सत्कार करेंगे और वह राम तेज के स्वामी के चरणों में बैठेगा।

७

राम से अलग होकर शुनःशेप ने अपने माता-पिता के पास जाने का विचार किया पर ऐसा करना उसे अच्छा नहीं लगा। वह धीरज खो बैठा और रोने लगा।

अपने क्षुद्र जीवन के प्रति उसकी आसक्ति राम के संसर्ग से चली गई थी। वह ऋषि कुमार नहीं वरन् पतित का पुत्र था। जिन उच्च भावनाओं का उसने स्वप्न देखा था वे उसने राम में मूर्तिमान् हुई देखीं। राम कैसा था? रूपवान् तेजस्वी निर्भय कभी उस और भयङ्कर द्रोग होते हुए भी वह दो निर्बलता दूर करता था, राजा ऋषि और देवों के सम्बन्ध में विचार करता था विद्या तप और विनय से परिपूर्ण था अन्धकार में से उस प्रकाश में ले आता था उसका आत्मा अपना देव था।

मृत्यु तक वह राम के साथ हो गया था। भृगुग्राम थोड़ी ही दूरी पर रह गया था कि रात हो गई इसलिए रात को साथ ही रहने की राम ने अथवा होने की सूचना शुनःशेप ने दी।

पर दूसरा के लिखने के लिए अघोर राम ने स्वीकार नहीं किया और उसे भृगुग्राम की ओर साथ लेकर शुनःशेप चलता ही गया। जो

उसके माता पिता थे वहीं उसे जाना था। अश्रुपूर्ण आँखों से उसने आ-श्रम की ओर दृष्टि डाली। जिस सृष्टि को अंधकारपूर्ण कल्पना की भाँति से उसने देखा था और जिसकी रमणीयता राम के शब्दों के प्रकाश में स्पष्ट हुई थी उसी सृष्टि को उसने यहाँ देखा—पृथ्वी का वह भाग जमदग्नि का आश्रम और ऋषि जमदग्नि—वह यदि पतित न होता तो उनके कुलपति विश्वामित्र राम को पढ़ाने के लिए आतुर थे और माता उसको भी प्यार करती।

आश्रम के चारों ओर हिरण वृक्षों की छाया में—'बूढ़ा पिता' जो सब कुछ सिखाता था और मामा विश्वामित्र—जो दूसरे आश्रम में रहते थे जिनके शास्त्रों में जमदग्नि के मातापिता और सब अध्ययन करने के लिए बढ़ते थे और जिनकी कृपादृष्टि पर राजाओं के राज्य निर्भर रहते थे। और मुनि अगस्त्य तथा लोपामुद्रा जैसा उसके पिता ने कहा था सब कुछ नहीं बता सके जिनके विषय की बात राम भी धीरे-से सम्मान-पूर्ण स्वर में करता था और माता—जिसके सम्बन्ध की बात राम बार-बार करता था जो सेवा करती थी किसी के स्वप्न में नहीं आती थी राम को बहुत मानती थी उसके बाल सँवारती और उसके साथ बैठ कर घूमती थी। इस रात को ऐसा भास होने लगा मानो उसके हृदय भी उन सुन्दर हाथों से बाँधे जा रहे थे।

सुनन्दा ने आँखें बन्द करके राम की सब बातें सुनी थीं। बारे स्वाभाविक प्यार की समता भूलकर वह इस समय राम के शब्दों के रूप में दूसरा चित्र मन में अनुराग का सूत्र में विचार कर रही थी।

[illegible] वह समझ गया था कि उसके [illegible] काट दिया था। [illegible] राम के [illegible] जो [illegible] में नहीं आ सकता था [illegible]

वह मर जाय या जीए, उसे मार डाले। वह तो अभिमान-वशीभूत हो चुका था—पतित, अभागा, व हतबुद्धि।

उसका मन हुआ कि किसी घने वन के अन्दर में भाग जाय और वहां जाकर किसी ऋषि के पास वेद अध्ययन के लिए रह जाय। किन्तु आत्मि परिष्कृत पति के भगवान हुए पुत्र को कौन अपने पास रखेगा? और उसके पिता और उसकी स्नेहमूर्ति माता का क्या होगा?

रात-भर वह घर का द्वार ढूंढ़ता रहा। जब बहुत दिन भटकने के पश्चात् वह माता-पिता से मिला तब वह अपना कई वर्षों से पुराना संसार देख न सका। एक रात्रि श्मशान से लौटा हुआ ग्राम की झोंपड़ी के पास ही उसका संसार था। दुबला मन्द और दुःख से पूर्ण आँखों से उसकी ओर इसने ताका। सत्तर सिर झुकाए एक पुरुष जो उसका पिता था, उस विराट रात्रि को फटे हुए वल्कल और हाथ में कमण्डलु लिये भस्मी रमाये था, और उस दुःख-सम्पन्न माता बैठी वाले दो पत्थर—जो उसके माँ-बाप थे—यही था उसका संसार। उसके माता-पिता और भाई इनके भूमि में अपना सब खो चुके थे। दिशाएँ उसकी भयंकर भावना-सृष्टि थीं। राम के सान्निध्य में बसना में कल्पित सृष्टि और इस वास्तविक सृष्टि के बीच में भेद का विचार करके उस आघात लगा। और पावक ज्वाला के समान वह तड़पने लगा। इस आघातक आँच से उसके आँसू सूख गए। स्वयं उसके प्रथम के समान उस आँगन ऊपर किए गए अपराध का भी ज्ञान नहीं रहा। वह बहुत दिनों के पश्चात् अपना इस अपराध के लिए उसके पिता ने क्षमा कर दिया था। उसने बारम्बार देखा और क्या कहे सोचे यह सब करने का उसका मन था। बार-बार आग्रह किया पर राम जिस सृष्टि में विहार करता था और जो उसकी कल्पना में व्याप्त था उसमें आशा का ढेर रखने वाला प्रथम मन उसने के मन में घर कर चुका था। उसकी माता ने इन बातों को पर उसने कुछ ध्यान न दिया। उस की सृष्टि में पुत्र रत्न का प्रकाश

सदा प्रसरित होता था, एक स्नेहमयी सौन्दर्यमयी आदर था। परिवर्त
मन उसकी माता के और उसके बीच जो एक तार था, वह भी टू
गया।

शुनःशेप का मानस बदल गया। ऋषियों के जीवन में उसकी
कल्पना प्रात प्रात हो गई थी। वह निरन्तर उन्हीं चित्रों का ध्यान
रहता था और उस ध्यान में मग्न रहना उसे अच्छा नहीं लगता
इससे उसका रहन सहन बदल गया। वह जब चुपचाप घूमता
की बोलचाल की रीति का स्मरण करके अपनी रीति को
बनाने का प्रयत्न करने लगा। उसने योग्य रीति से नियमपूर्वक
करना प्रारम्भ किया और यथासमय सायंकाल मन को शान्त
कल्पना का आश्रम बनाकर उसने यथासम्भव सरस्वती का
स्पर्श न करने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। पिता और राम
मन्त्रों का वह पाठ या कर गाने लगा। वह जब मंत्रों का
करता था तब उसकी आँखों के सामने राम की मूर्ति आ
और वह उसे देव मानकर प्रणाम देता था।

फिर एक एक उसके पिता ने उत्तर की ओर जाने का
प्रबन्ध प्रारम्भ किया। ज्यों-ज्यों उत्तर दिशा में आगे बढ़ने
त्यों आर्यों के ग्राम कम होने लगे और दासों के
लगा। ज्यों-ज्यों सरस्वती का तट दूर होने लगा
कुछ बदलता गया। पहले वे देव स्वरूप आर्य
करते थे। परन्तु अब अपरिचित दृश्यों के
का ह्रास करने लगा।
...
अपनी अपनी पूर्ण पूजी देने

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अन्त में हरिश्चन्द्र ने कहा कि रोहित के बदलेमें यदि वह अन्य बालक की आहुति दें तो भी देव उन्हें शापमुक्त करेंगे।

दासों के भयङ्कर गुरुओं के समान नरमेध यज्ञ करने के लिए कोई न्याय ऋषि तैयार न थे। अन्त में राजा हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र की शरण ली और जब इन महाभाग ने नरमेध यज्ञ करवाना स्वीकार किया तब समस्त आयावर्त चकित होगया।

अपने पुत्र रोहित के बदले यज्ञमें होमनेके लिए राजा हरिश्चन्द्र एक युवक खोजने लगे। चारों ओर उनके दूत उसकी खोज करने लगे। अजीगर्त जहां रहता था उसके निकटके ग्राममें हरिश्चन्द्र के बहुतसे ऐसे दूत ठहरे हुए थे। यह बात जब शुनःशेप ने सुनी तब उसे भान होने लगा कि उस को निराश अधमता का अब अन्त आगया।

अँधेरी गुफामें अज्ञात जकड़े हुए मनुष्य को प्रकाश दीखने पर जैसा उल्लास होता है वैसा ही शुनःशेपको हुआ। यज्ञके यूप पर बंधकर कभी न देखी हुई वेदी में अग्नि में जलते हुए और केवल सत्यान्वेषण ऋषियों का मंत्र स्वर सुनते हुए अग्नि में होम जाने की अपेक्षा, जीवन की इस असह्य स्थानों से मुक्त होने का अन्य कौनसा सुन्दर मार्ग उसके लिए हो सकता है? वह महर्षि विश्वामित्र या जमदग्नि के दर्शन पायगा उनकी वाणी सुनेगा और उनके आवाहन से आते हुए वरुणदेव के दर्शन करेगा।

दूसरे दिन सवेरे ही उठकर वह ग्राम के गाव में हरिश्चन्द्र के नायक से मिला। ऐसा सुन्दर व तेजस्वी युवक यज्ञ में होमे जाने के लिए स्वेच्छा से आता है यह देखकर वह नायक बहुत प्रसन्न हुआ। शुनःशेप ने उसे अजीगर्त से मिलने के लिए कहा।

जब अजीगर्त ने नायक और शुनःशेप की बातें सुनीं तब वह बहुत गम्भीर बन गया। उसने पूरा दिवस विचार में बिताया। दूसरे दिन वह प्रसन्नचित्त दिख रहा था उसको आँखें लोभ से चमक रही थीं और वह बड़बड़ा रहा था— विश्वामित्र ऋषि आते हैं।

'हाँ' उन्होंने धीरे से कहा। "कल प्रातः सूर्य के उदित होने पर।"

"तब आपकी जैसी आज्ञा।" धीरे से उन्होंने कहा।

"शुनःशेप का वध करने वाला क्या कोई मिला?" अमरजित ने पूछा।

"मैं अभी स्वयं निकला हूँ"—होता ने कहा।

जब दोनों ऋषि अपने निवासस्थान पर जाने लगे तब दोनों के हृदय भारी थे। मार्ग में बहुत देर तक कोई एक शब्द भी नहीं बोला।

जब से विश्वामित्र भरतों का राज्यसिंहासन छोड़कर ऋषि बने और सुदास राजा का पुरोहित पद स्वीकार किया तब से देवों ने उन पर कृपा दृष्टि की थी। राजा उनके चरणों में आदर रखते थे। आर्य और दस्यु विरुद्ध बनकर उनकी आज्ञा पालन करते थे। उनके प्रताप से दस्यु और भूमि की नदी ने उत्तरोत्तर बुद्धिगत होकर शान्ति प्राप्त की थी। दस्यु भी उनके प्रयत्न से सहकारी बनते जाते थे।

गत कई वर्षों से वे कभी भी अपने निश्चित ध्येय की प्राप्ति में असफल नहीं हुए थे। उन्होंने सरलता से आर्य ऋषियों में श्रेष्ठत्व प्राप्त किया था। आश्रम द्रुतक के रूप में सब उनकी पूजा करते थे। सूर्य भगवान् की किरणों के समान उन्होंने सब दिशाओं में अपने संस्कार प्रसारित किये थे। जहाँ-जहाँ असुरत्व होता था वहाँ-वहाँ उनका स्नेह सब हृदय दुःख दूर करने के लिए दौड़ जाता था।

उनको आर्यावर्त को जो परम्परा प्राप्त हुई थी उसका मूल यज्ञ था। उन्होंने सिखाया था कि यज्ञ ही देवों की पूर्ति का, ज्ञान का परम समर्थ साधन है। यज्ञ ही शुभ और शान्ति का दाता है, वही अमरों और धेनुओं का रक्षक है, वही इन्द्र को बल देकर वृत्र का संहार करने वाला साथी है, वही मनुष्य को सत्यवान बनाकर पंच सत्य का दाता बनता है, यह ही राजा वरुण के ऋत को समझाने वाला और प्रवर्तित करने वाला है।

वे अब हृदय में शुनःशेप वध तक स्वीकार करने के बदले विश्वामित्र

स्वर्ग समझते थे और उन्होंने सबको समझा न थे। उनके [illegible] ये ही रूप में एक अनादि से सिखाये थे।

[illegible] में विश्वामित्र की धारणा [illegible] थी कि मनुष्य मनुष्य में भेद नहीं है। [illegible] और [illegible] नहीं [illegible] तो यज्ञ करने वाले और यज्ञ न करने वाले में ही है।

अब [illegible] ने राजा हरिश्चन्द्र से उनके पुत्र का [illegible] और [illegible] अब हरिश्चन्द्र विश्वामित्र के पास [illegible] करने की [illegible] [illegible] भिन्न भिन्न की [illegible] कसौटी प्रारम्भ हुई। [illegible] यज्ञ करते हैं तो इतने वर्षों से उनके सिखाये हुए [illegible] और [illegible] [illegible] ही [illegible] करते हैं और यदि वे नहीं करते हैं तो [illegible] [illegible] उन्होंका [illegible] के [illegible] की [illegible] इस प्रकार दोनों प्रकार से उनके [illegible] [illegible] का [illegible] था।

[illegible] मित्र का यह [illegible] के [illegible]

विश्वामित्र ने [illegible] की [illegible] को [illegible] हरिश्चन्द्र का [illegible] उन्होंने [illegible] हरिश्चन्द्र का [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] राजा हरिश्चन्द्र के [illegible]

[illegible]

[illegible] विश्वामित्र [illegible]

[illegible]

[illegible] विश्वामित्र [illegible]

[illegible]

विश्वामित्र [illegible]

विश्वामित्र और [illegible] विश्वामित्र [illegible]

विश्वामित्र इस प्रकार घूम रहे [illegible] जैन मुनि ने देख [illegible], "मयौगिन अम्बिका! [illegible] महर्षि अगस्त्य ने शाप दिया था [illegible] इस प्रकार क्यों घूमता है? शाप से अभी तुम मुक्त नहीं हो [illegible]" विश्वामित्र के स्वर में करुणा थी।

[illegible] पुत्र मित्र! हँसकर [illegible] ने कहा [illegible] करना में इस शाप से मुक्त होने के लिए ही तो हम [illegible] आया हूँ। आपके [illegible] के लिए मैंने पुत्र बना और उसी [illegible] उसको [illegible] करने का भी [illegible] मैंने लिया है। प्रभु [illegible] उद्धार करो।

[illegible] के ये शब्द [illegible] अनुराग [illegible] विश्वामित्र ने [illegible] उसको [illegible] किन्तु इस [illegible] [illegible] करना ने [illegible] कल्याण का कोई उपाय ही [illegible] था। ऐसा [illegible] उन्होंने [illegible] बात कही।

"[illegible] तुम [illegible] के पास [illegible] [illegible] कहा।

[illegible] की अनुराग [illegible] [illegible] मुझे कौन मुक्त कर सकता है [illegible] विश्वामित्र! [illegible] [illegible] विनय करने लगा।

[illegible] बालक को [illegible] मुझ [illegible] नहीं [illegible]

[illegible]

तब ?

उन्होंने मुझसे बात निकलवायी। पर मैं उस लड़केको छोड़नेको तैयार नहीं था। अपनी सन्तान की अपेक्षा भी वह लड़का मुझे अधिक प्रिय था। भगवती ने मेरे मन अपत्य भ[illegible] किया और कहा कि यह लड़का मर गया। महर्षि ने य[illegible] अपत्य समझ लिया और क्रुद्ध होकर मुझे शाप दे दिया।

'तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती। तुमने भगवती की बात क्यों न कही? वे तुम्हें और इस लड़के को दोनों को साथ रखतीं।'

वह बात बननी आ नहीं था। यदि उस समय मैंने उस लड़के का कुछ बता दिया होता तो परशुराम के रक्त में बहने लगता।' अजीगर्त ने स्वार्थपरता से धीरे धीरे कहा। उसकी पाखण्डी आँखें विश्वामित्र के मुख के भाव [illegible] रहीं थीं।

विश्वामित्र स्थिर नेत्र से अजीगर्त की ओर देखते रहे। इस व्यक्ति की बात यथार्थ सत्य जान पड़ती थी किन्तु फिर भी उसका विश्वास नहीं किया जा सकता था।

'ऐसी क्या बात थी?' उन्होंने पूछा।

उस समय दस्युओं के और भार्गव के बीच वैर था। यह क्या भूल गए? आप भी अपने को भी आर्य कहते दस्युओं से पृथक् नहीं लगता था वह भी आप जानते हैं। यदि उस लड़के का मैंने छिपाया न होता तो भार्गवों का और [illegible] क्या दशा होती?

'पर इससे [illegible] लड़के से क्या सम्बन्ध?' भूमध्य द्वारा आप ने पूछा। इस [illegible] सत्य का [illegible] प्रकाश दिखाई देने लगा था।

वह लड़का [illegible] और [illegible] दोनों का उत्तराधिकारी था।

इस किस [illegible] बाण द्वारा [illegible] [illegible] गाकर बाण [illegible] हो इसी प्रकार अजीगर्त द्वारा [illegible] युक्ति से फेंके हुए बाण ने छेद करके विश्वामित्र का हृदय बेध दिया।

राजर्षि विश्वामित्र की दृष्टि [illegible] हुई जान पड़ने लगी।

होता चला गया। अम्बर की पुत्री कुसुम ... के साथ के ... सम्बन्ध हो गई। वह दुखी थी। अन्त में उसका विवाह का सर्व ... चली गई वह विरक्त। ... मिटी ... वही ... भी वह फिर ... कहता था कि ... कहता है ... भी अत्यन्तीय का कहीं भी वह था जो ... कहता है वह?

क्या कहा? विवाह ... गया था।

... वह कुछ ... पुत्री ... का ... की ... पूर्वक कुछ ... के साथ किया ... मैं ... का ... में उसका चित्र भी ... था ... रहते हैं। ... विवाह ... कुछ ... की ... अधिक ... समझा। ... हो वह ... कि ... का मुझे बड़ा ... था। ... के कृत्रिम ... का अन्त ... और फिर ... होता जाता स्वयं ... हो ... कर रहा हूँ।

विचलित के मस्तिष्क में ... के समान ... हो रही थी। क्या वह ... में ... कर रहा है या ... रहा है? उसके ... विचारों ... हो गई। उसके ... की ... था ... के ... वीरेन्द्र ... भरत और ... का ... समय-समय पर ... हुए किसने ही ... आँखों के सामने ... के मस्तिष्क में घूमने लगा। ... के ... रहने पर भी ... हुए और ... भी अधिक ... मस्तिष्क सुन्दर और अधिक सजीव हो ... किन्तु क्या ... अनुभव ... करेगा? वह

यह [illegible] उनसे [illegible] ?

[illegible] "[illegible]" !

[illegible] में [illegible] । उसने [illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] "[illegible] देखा [illegible]" [illegible] [illegible] हुई [illegible] निकालकर [illegible] ।

[illegible] में [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] हुई [illegible] [illegible]

[illegible] की [illegible] और [illegible] [illegible] ।

[illegible] देखा [illegible] में [illegible] है ? यह [illegible] की [illegible] । [illegible] है [illegible] ? [illegible] [illegible] [illegible] हैं ।

[illegible] की [illegible] में [illegible] । [illegible] की [illegible] की [illegible] में [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] में [illegible] हैं ।

कुछ पलों तक चारों विश्वामित्र दानव के समान दिखा नयन से अजीगर्त की ओर देखते रहे "कहाँ है वह लड़का ?"

अजीगर्त कुछ देर तक चुप रहा।

"यही लड़का तो शुनःशेप है जिसे आप कल बलि में होमने वाले हैं" उसने अन्त में दुष्टतापूर्वक हँसते हुए कहा।

विश्वामित्र ने इस प्रकार ऊपर देखा मानो उनको स्वयं सचेत होना हो और अपना सिर हिलाया। उनका रोम रोम खड़ा हो रहा था।

"शुनःशेप !" वे बड़बड़ाए।

"हाँ, गुरुदेव," उपहास के स्वर में अजीगर्त ने कहा, "वही शुनःशेप।"

"असम्भव असम्भव" विश्वामित्र के मस्तिष्क में शब्द गूँजने लगे। हुए वे स्तब्ध रह गए। उस दुष्ट की दुष्टता उन्होंने पहचान ली। वे बहुत व्यग्र हुए।

"नराधम ! तेरे मस्तक को काट डालूँ या नहीं ? क्या तू मुझे ठगने आया है ? दूर हट दुष्ट ! यदि तू जानता था तो इतने वर्षों तक कहाँ छिपा रहा ? ओ पतित ! जा, अपने कर्म के पाप से तू पृथ्वी पर अपना भार बन विश्वामित्र के शाप से ..."

तलवार की धार के समान तीखे पर क्रूर स्वर में अजीगर्त ने विश्वामित्र का वाक्य बीच में ही काट लिया, "शाप देने के पहले विचार कर लो। मैं जा रहा हूँ। आप कल अपने दत्तक पुत्र की बलि में होमने का सुख प्राप्त कीजिए !" इतना कहकर वह चलने लगा।

कुछ पग चलकर वह फिर लौटा। "मैं आज बारह वर्षों से यह सब प्रकार क्यों सह रहा था जानते हो न ? तो इसलिए कि इस लड़के के मूल्य चुकाने से मेरा पेट नहीं भरा है।" वह दुष्टतापूर्वक हँसा और बोला "आपकी मृत्यु के पश्चात यह आश्रमों के सिंहासन सौंपना - यह उसका मूल्य है।"

इस लड़के को आश्रमों का राजा बनाने के लिए अजीगर्त ने इस

पाल रखा था। उन्हें वह यथार्थ में अवगाहन जान पड़ा। विश्वा
के मस्तिष्क में विचार घूमने लगे।

'पर कल तो उसकी आहुति दी जाने वाली है" ...
बढ़े हुए ऋषि ने कहा।

जब तक मैं बैठा हूं तब तक ऐसा कैसे हो सकता है! ...
हँसते हुए अजीगर्त ने कहा 'इसे मैंने इस प्रकार बलि में ...
लिए बड़ा नहीं किया है। वह तो दासी का पुत्र है। इसका ...
हो सकता है?

इतना कहकर खाँसता हुआ अजीगर्त विश्वामित्र की ...
देखता रहा।

'दुष्ट जा निकल यहां से' विश्वामित्र चिल्लाये। ...
पैर वहां से चला गया।

५

ऋषिवर ने आँखें मलीं। इस अजीगर्त की बात सच थी ...
कल्पना थी बनावटी थी? खाँसते हुए आगे बढ़ता हुआ अजीगर्त ...
कार में विलीन हो रहा था। क्या वह सच कहता था? क्या उसकी ...
सच थी? विश्वामित्र वहीं-के वहीं स्थिर हो गए। सम्पूर्ण ...
उन पर टूट पड़ी थी। वे समझते थे कि इस ने उन्हें दिव्यचक्षु ...
किन्तु इस समय वे ही आँखें अन्धी हो गई थीं।

धीरे-धीरे व धीरे धार निवास से दूर जंगल की ओर बढ़े ...
उन्होंने समझा था कि ... ने उन्हें मानव का उद्धार करने के ...
जन्म दिया था। जिस सत्य को किसी ने नहीं देखा था उस ...
उच्चरित किया था—मानव मात्र सृष्टि से परे है ...
उसका सत्य व ह ... ही शुद्धि प्राप्त करने का साधन है।

उन्हें ज्ञात होता था कि वह सत्य मानवमात्र का उद्धार कर ...
था दुःखियों के दुःख का निवारण कर रहा था ... की ...
छेदन कर रहा था।

किन्तु ... एकाएक यह सब असत्य प्रमाणित हुआ ... असत्य पूर्णतया असत्य।

उनके हृदय में प्रश्नावली उठी।

काले और गोरे मानव एक ही संस्कार के अधिकारी थे, देवों द्वारा समान रूप से रचित थे। तो फिर शम्बर की पुत्री उमा भी अगस्त्य की पुत्री रोहिणी जैसी हो जाती थी तो फिर उमा के पुत्र को आज भरत खण्ड के श्रेष्ठ पुत्र का स्थान क्यों न दिया जाय?

मानव-मात्र पशु से परे हैं; ऐसे पवित्र हैं कि वे न बेचे जायें और न हवन किए जायें। यदि यह सत्य है तो फिर यह नरमेध मैं कैसे कर सकता हूँ? मैं सत्य का द्रष्टा हूँ, सत्य का आचरण करने वाला हूँ। यही मेरा जीवन-व्रत है। तो फिर शुनःशेप को भरत खण्ड के स्थान में स्थापित करने के बदले पतित के पुत्र के रूप में इसे कैसे रहने दिया जा सकता है?

इस नरमेध को रोकने के बदले इसे करने के लिए क्यों इस प्रकार तैयार हुआ हूँ? सत्य क्या है? मैंने समझा और समझाया है वह या जो मुझे करना पड़ रहा है वह?

तो फिर मुझे क्या करना चाहिए? एकत्रित जन-समूह को क्या स्पष्ट कहना होगा कि शुनःशेप अजीगर्त का पुत्र नहीं है मेरा पुत्र है। और मैं इस अजीगर्त के पुत्र के रूप में पशु में होम दूँ तो मेरे जैसा क्रूर और कौन होगा?

किन्तु यदि अपने पुत्र के रूप में इसे स्वीकार करूँ तो तुरन्त ज्ञात होगा कि वह दासी पुत्र है। फिर इस वंश में भी क्या होगा सकता? और रोहित भी ऐसा क्यों होने देगा? सब जो इसे स्वीकार नहीं करेंगे और मेरी कैसी अपकीर्ति होगी? भरत क्या कहेंगे? क्या दासी पुत्र को अपने राजा के रूप में वे स्वीकारेंगे? अगस्त्य की गर्विष्ठ कन्या रोहिणी अपने वह पुत्र स्वहस्त के लिए क्या आकाश पाताल एक नहीं कर देगी? क्या वह शुनःशेप का सहन कर सकेगी? कदाचित् इस

प्रश्न के कारण भरतों में अन्तर्भाव जागरित हो उठेंगे ? और वशिष्ठ की तो बन आवेगी। सम्पूर्ण आर्यावर्त में मेरी थू थू उड़ेगी।

पर इस भय से डरकर यदि मैं असत्य का आचरण करूँ, तो कायरता की सीमा होगी।

यदि मैं कुछ न बोलूँ तो ?

यज्ञ हो जाय, शुनःशेप होमा जाय और यह पाप कोई ... न आने दो ?

नहीं ... नहीं ! इन सबके भय से क्या मैं चुपचाप बैठा रहूँ ? क्या निर्दोष बालक को होमा जाने दूँ ? नहीं ... नहीं ... मुझे जैसा धर्मभ्रष्ट और कौन होगा ?

विश्वामित्र की विचारमाला आगे बढ़ी।

मानव हवि नहीं बन सकता यदि यह बात सत्य है तो फिर मैं उसे कहने के लिए क्यों तैयार हुआ हूँ ? वचन भङ्ग होने के भय से ? इसके रूठने के भय से ?

इस प्रकार विचार करते हुए विश्वामित्र भय-व्याकुल होकर एक स्थान पर खड़े हो गए। जहाँ जहाँ उनकी दृष्टि पड़ती थी वहाँ-वहाँ अपनी विकराल अपकीर्ति का वे दर्शन कर रहे थे।

विचार प्रवाह तो अत्यन्त और अविरत रूप से चल ही रहा था — मैं इस समय इतना अधम क्यों हो गया हूँ ? कभी मैंने असत्य का आचरण नहीं किया है फिर भी यह सब क्या है ? भय, भय मुझे पागल बना रहा है। भय महाभय प्रत्येक समुद्भव भय ने मुझे घेर लिया है। मैं शुनःशेप की रक्षा कर नहीं सकता, और बोलता रहूँ तो भी नहीं हो सकता। मैं बोल भी नहीं सकता और बात छोड़कर चला भी नहीं जा सकता। मैं तो अशान्ति के सागर में डूब गया हूँ ... ...क्यों ? भय ... ...भय ... ...महाभय !

पर ऋषि के हृदय ने विरोध की ध्वनि की — नहीं ... नहीं —

नहीं...! मैं इस नाते अवश्य दण्ड के योग्य हुआ हूँ पर स्वप्न अवस्था में दिए हुए वचन के लिए तुम प्राण दो? क्या मैं जाऊँ? अपना धर्म छोड़ कर पीछे हटनेवाला बनूँ?

नहीं नहीं नहीं।

मेरा सत्य ही मेरा है और यही सत्य मेरा जीवन है। फिर जो कहना हो सो कहे। तुम सब मेरा सुख है—मेरी विद्या और धर्म का स्वामी है।

और दया? क्या मैं त्याग करूँ

नहीं नहीं नहीं।

विश्वामित्र झल्लाकर कह उठे, उनके मन पर प्रभाव पड़ा।

नहीं नहीं, मेरा सत्य तो मेरा अपना ही है। वह सत्य मैं ही हूँ। सम्पत्ति हाथ पर भी सत्य नहीं करता और वह कभी भी आपका भी सत्य नहीं हर सकता। सत्य तो सत्य ही रहता है—अचल, अमर, अटल और अजर। तो फिर सम्पत्ति के जाने का भय क्यों? फिर इस दान का भय किसलिए?

दोनों मानो हृदय का करतार रहे हों, इस प्रकार मन को स्थिर करके वे कहने लगे—

"देव! धन की सम्पत्ति आप छीन सकते हो, हम पार के सकते हैं। मेरा सत्य आपका दिया नहीं दिया है, उसे मैंने स्वयं प्राप्त किया है। उसे आप कभी नहीं ले सकते।

विश्वामित्र की दृष्टि महासागर के समान फुंकार मारता हुआ विष उगलता हुआ, दुःख पूर्ण भीषण स्वरूप में गर्जना करता हुआ भय का उपस्थित हुआ। मानो मदकर वेगमय वह उनके पैरतर बढ़ता उनकी कमर तक पहुँच गया था। उनकी आँखें लाल हो गईं। वे रह न सके। उनके स्नायु खिंच गए मानो वे स्थिर हो गए मानो अणु को जलाया जा रहे हों। उनकी आँखें उस स्फुलिंग के समान विस्तृत हो गईं। उनके मस्तक पर की भृकुटी और चढ़ी हुई उस समय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

और अप्सराएँ गुनगुनाती हुई आगे बढ़ीं। विश्वामित्र का कल्प पाप हो रहा था उन्हें प्रमाद हुआ। इसी देवी सरस्वती ने इन्द्र को प्रेरणा दी थी। जब वे वृत्र को मारने के लिए तत्पर हुए थे तब प्रत्यालीढ़ की मुद्रा के समान इन्द्र को पुनर्विजय करती हुई सरस्वती खड़ी थी। हुँकार करता हुआ यदि उस समय इन्द्र के अंग-अंग को भ्रम न रह रहा था। देवी हँसी। उसकी प्रेरणा से इन्द्र ने वज्र उठाया और चलाया। क्षणों में भयंकर वृत्र को वह लगा। उसका काला [illegible] कर शरीर और बढ़ा। इन्द्र ने अट्टहास किया। उसके स्नायुओं ने रस की धारा में न टूटने के महाप्रयत्न किये। कठिन [illegible] से बिखरा हुआ पाप शिथिल होकर जला, टूटने लगा, टूट गया। वृत्र के उस शरीर के बीच से इन्द्र बाहर निकल आए। विजय का प्रचण्ड हास्य उनके मुख पर था। अट्टहास के सुमधुर भाव देवी सरस्वती के वाक् पर स्थापित रहे थे और सत्य का जो अंश वृत्र ने रोक रखा था वह मुक्त होकर आनन्द से कल्लोल करता हुआ जगत् का उद्धार करने के लिए बह निकला।

विश्वामित्र ने ऋचाओं द्वारा अंग-अंग के बन्धन में से छूटने का इस प्रकार प्रयत्न किया मानो इन्द्र का अनुकरण कर रहे हों। अंग का सारा मद शिथिल होकर गिर पड़ा और वे स्वस्थ आसन लगा कर उसके बीच में बैठ रहे।

सत्य स्पष्ट हुआ।

अजीगर्त दुष्ट है। उसके साथ व्यवहार करना व्यर्थ का काम है।

शुनःशेप ज्ञान-भ्रष्ट है। यह जगत् का [illegible] ही चाहिए।

शुनःशेप हवि नहीं है मानव है, [illegible] है, यज्ञ में उसका वध नहीं हो सकता। यज्ञ तो सृजन का साधन है विनाश का कुण्ड नहीं है। जिसमें मानव का हवन हो वह यज्ञ नहीं हो सकता।

स्तुति और निन्दा दो सगे भाई हैं [illegible] प्रत्यक्ष होती है। ऋषि सत्य का साथ देते हैं, उनकी हिंसा नहीं करते।

[illegible] के [illegible] [illegible] की प्रतीक्षा कर रहा था। [illegible] [illegible] से [illegible]

[illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] हुआ [illegible] हुए हैं।

[illegible] किन्तु [illegible] की प्रतीक्षा [illegible] हुए [illegible] भी नहीं [illegible] में [illegible] किन्तु [illegible] हो [illegible]

[illegible] नहीं [illegible] था। [illegible] था।

[illegible] कभी नहीं देखा था। [illegible] की [illegible] हुए [illegible] था। [illegible]

[illegible] में [illegible] कर रहा था। [illegible] की [illegible] हुए। [illegible] के लिए [illegible] है। [illegible] में [illegible] हुआ।

[illegible] किया। [illegible]

से पद हुए लाभ का पुलक भाव वर्णन नहीं सकता था। उसको मद वक समाधान करने की कभी नहीं। जिस दिनके लिए वह आकांक्षित था वह पास आ गया था। अब वह चंचल नहीं था। अब वह क चरणों के सा निध्य में जाने के देव के चरणों में गिरने के योग्य था।

जब उस मण्डप के बीच में से आकर खड़ा किया गया तब उसका गौरवर्ण शरीर तेजस्वी मालूम था। उसका मुखकमल खिला न रहा गया। उसकी करुणामय आँखें के सामने मणिस्तम्भों से सुसज्जित था क ऐ क सुन्दर शोभायमान द्वार थे। उससे थोड़ी दूर पर मण्डप के बीच में वेदी बनी थी।

उसने यज्ञकुण्ड के विषय में बहुत सी बातें सुनी थीं, परन्तु [illegible] अन्तमें उसने यज्ञकुण्ड देखा। उसकी आँखों में हर्षाश्रु उभर आये। यज्ञ कुण्ड के पास किस प्रकार मंत्र बोलना चाहिए सब विधि कैसे करनी चाहिए आदि उसने अपने पिता से सुना था। आज इस परम पुनीत [illegible] में उसने अपने स्वामी अग्नि देव को विराजमान देखा।

यह यज्ञकुण्ड [illegible] के लिए स्थापित किया गया था। अग्निदेव की गोद में बैठकर यह राजा वरुण के चरणों में जायगा।

देव, मैं आया आया, यह मन में बोला। अग्नि उसे प्रेम के द्वार के रूपमें दिखाई दी।

उसकी आँखों के सामने कुण्ड के चारों ओर बैठे हुए ऋषि स्पष्ट दिखाई देन लगे। उसका हृदय भर आया। जिन्हें देखने की उत्कण्ठा में वह तड़प रहा था। वे सब उसीकी प्रतीक्षा में यहाँ बैठे थे। कैसे थे वे ऋषि! उसने जितनी कल्पना की थी उससे भी अधिक तेजस्वी थे।

दो ऋषि सबसे आगे बैठे थे। एक विशालकाय थे। उनकी [illegible] जटा कितनी ऊँची थी। उनका स्वर गंभीर और मोटा था। वे इन्हीं [illegible] रहे थे। उनके पास ही दूसरे ऋषि थे—साधारण डीलडौल के, पर [illegible]

वे व्याघ्र चर्म पर बैठे थे। उनकी दाढ़ी और जटाएँ शुभ्र थीं और मुख पर तेज था। उनके दर्शन मात्र से पाप दूर होते थे।

शुनःशेप की दृष्टि उनकी ओर जब पड़ी तो फिर हट न सकी। वह ऋषि को देखता ही रह गया। उस मुख पर अनन्त शीतलता थी, अपरिमित करुणा थी और आँखों से अपार स्नेह प्रस्फुटित हो रहा था। उनकी सुन्दर आँखों में दया, क्षमा, वेदना, सहानुभूति आदि विभिन्न भाव व्यक्त हो रहे थे। वे आँखें उस पर जिस सहानुभूति से टिकी थीं, शुनःशेप ने वैसा कभी अनुभव नहीं किया। उन आँखों में क्या था केवल उसको समझने वाला ही जानता था। उन आँखों के करुणापूर्ण और ममतापूर्ण तेज ने शुनःशेप को आप्लावित कर दिया।

ऐसा स्नेह का अनुभव कभी अनुभव नहीं किया था, जाना तक नहीं था। इन आँखों के आलिङ्गन में उसे ऐसा लगा जैसा वह इस धरती पर नहीं स्वर्ग के द्वार में हो।

शुनःशेप का हृदय उमड़ आया। उसकी आँखें भीग गईं। उसे ऐसा लगा मानो उन शान्तिमय और करुणापूर्ण आँखों में वह समा गया हो।

स्नेह और ममता के अमृत सागर में उसका मन भर आया। उसके प्राण शान्ति-मग्न हो गए।

वे विश्वामित्र थे या अमृत-सिन्धु? वे स्वर्ग के राजा देवेन्द्र थे या [illegible] नहीं। उस रूपवान्, तेजस्वी, शान्तिमय तथा ममता स्नेहमय रूप से आत्मा उसमें [illegible] थी? शुनःशेप के हृदय में परम शान्ति मिली। वह जान गया कि वह जो था वह इस समय भूल गया था। एकाएक आगे बढ़कर उसने इस ऋषि के सामने प्रणिपात किया।

शुनःशेप को इस प्रकार देख उन्होंने स्नेह से आगे बढ़कर उसे अपने हृदय से लगा लिया। दैनिक उपासना के लिए ऋषि सदा पीछे किनारे हो उस दृश्य के लिए बढ़ते रहे। एक क्षण वह वहीं खड़ा रहा।

शान्तिमय और करुणापूर्ण आँखें इस स्वर से द्रवित होकर बोलीं

वह व्योम में ही है। विकसित नयनों से वह वरुण के आने की प्रतीक्षा करता रहा। अभी आवेंगे अभी अभी ही इस [illegible] ने उसका शिरच्छेद किया कि बस वे पुरन्त [illegible]।

विश्वामित्र मंत्र बाल रहे थे पर उनकी आँखें शुनःशेप पर ही [illegible] थीं। यह सुकुमार और सुन्दर युवक क्या उनका पुत्र है! कि[illegible] सुन्दर सिर कितना मनोहर मुख, कमल स कमनीय और [illegible] नयन। स्वर्ग से उतरकर आये हुए देव के समान वह पूर पर [illegible] रहा था और गव से चारों ओर देखता हुआ आनन्दातिरेक में [illegible] मग्न हँस रहा था। क्या यह मानव है? क्या यह देव है? [illegible] मृत्यु भी उसे भयभीत नहीं कर रही है।

विश्वामित्र ने अपना कर्तव्य अन्तिम वध के लिए [illegible] कभी-कभी वे हरिश्चन्द्र की ओर देखने थे। अन्तिम वध में [illegible] करें और प्राणों को बचा लें तो!

मन्त्रोच्चार हुए। आहुतियाँ पूरी होने को आई। विश्वामित्र [illegible] जो निश्चय किया था उसे पूरा करने के लिए वे तत्पर हुए। उनके [illegible] की धड़कन इस समय वेग से चल रही थी। उन्होंने मन का [illegible] तथा मान लिया था। उनकी दृष्टि के सामने कर्तव्य निष्ठा [illegible] ब्रह्मा के पुत्र को बचाना असमर्थ न होने देना अपकीर्ति का [illegible] सिर पर चढ़ाकर मरण के लिए मर मिटना।

मन्त्रोच्चार पूरा होने को आया।

वरुणदेव से मिलन के लिए शुनःशेप की आतुरता बढ़ती जा [illegible] थी। उसकी दृष्टि तो गगन से पारदृश्य श्याम मार्ग पर स्थिर था। [illegible] कब आवेंगे?

चारों ओर क्या हो रहा था इसका उसे भान न रहा। उसे श्याम मार्ग ही दिखाई देता था। उसके उस द्वार पर वह [illegible] ध्यान दिये बैठा था। और देव कब आवेंगे? कब? कब?

उसके सामने बैठे हुए बुढ़े में म [illegible] उस [illegible] था। ध्यान नहीं कि उस दूर पर [illegible] उतर पड़ा था रहे हों। क्या यह सम्भव है [illegible] सकता?

तीस वर्षों का उसने [illegible] — [illegible] पर बैठे कंधे पर धनुष [illegible] हुए — [illegible] माता उसे [illegible] प्रसन्न हुए हों [illegible] गए थे। [illegible] निकालकर [illegible] [illegible] हुए उसका [illegible] सुनसान का उसमें था [illegible]। उसके [illegible] उन [illegible] वर्षों का [illegible] वे [illegible] जिनके [illegible] उसने [illegible] को था [illegible] जिनके [illegible] देख रहे [illegible] रहे थे।

[illegible] का [illegible] नहीं था [illegible] का [illegible] इतने वर्षों में भी वह भूला नहीं था [illegible] उसके [illegible] उसको [illegible] बड़ी-बड़ी आँखों का वह भूला नहीं था [illegible] सिवा [illegible] । [illegible] हुए [illegible] के समान [illegible] थी। वही मुख — [illegible] वह [illegible] [illegible] था। [illegible]

[illegible] वह [illegible] उसको [illegible] रहे थे [illegible] करते हों [illegible] देख है!

सुनसान के [illegible]

[illegible] करते हुए [illegible] [illegible] दिखाई दिये। [illegible] सुनसान के [illegible] हुआ था वह [illegible] दिखता। [illegible] उसने [illegible] में [illegible] किया था, [illegible] हाथ [illegible] में ही उसके [illegible] विद्यमान था।

[illegible] और [illegible] हो। [illegible] रखकर [illegible] [illegible]

यूप में बंधा हुआ नराधम का पुत्र स्वर्ग के समान दैदीप्यमान होने लगा। उसके मधुर कण्ठ से राजा वरुण का आवाहन करनेवाले मन्त्र गूँज रहे थे। मन्त्रोच्चारण में स्वर शुद्ध था और मन्त्र के शब्दों के कण्ठ में आ उन्माद और भक्ति का कम्प नहीं था वह उसके स्वर में था।

शुनःशेप के कण्ठ में से उसके समस्त जीवन की आतुरता उमड़ रही थी। वह ज्यों-ज्यों मन्त्र बोलता गया त्यों-त्यों देव पास आने लगा।

वे तो आ पहुँचे थे—एकदम यज्ञमण्डप के सामने। [illegible] देवी उषा थीं। वायु और स्वयं श्रेष्ठ इन्द्र थे।

उसने अपने कण्ठ से प्राणपति-देव का, उसने ऊषा का स्तवन किया। मन्त्रों से इन्द्र की आराधना की। अग्नि का आवाहन किया। उसके कण्ठ में से विद्या की सरिता अविरल बह निकली।

ऋत्विज् स्तब्ध होकर इस मन्त्र-दर्शन—नये मनोहर मन्त्रों के नये दर्शन—को सुनते रहे। यह नया मन्त्रद्रष्टा कौन है?

शुनःशेप राजा वरुण की तरफ पूरी बड़ी-बड़ी आँखें खोल रहा था। ये ही, ये ही, ये स्वयं आये तिमिर में से उसे त्राण देने के लिए।

सब दङ्ग होकर देखते रहे। विश्वामित्र की आँखों में से हर्ष के आँसू बहने लगे।

शुनःशेप अपने देव से मिलने के लिए मचलने लगा। इस मन्त्रोच्चार बन्द हुआ। वह साँस लेने के लिए रुक गया।

मैं ही देव वरुण—आया, आया, आया—रोते हुए लाल शुनःशेप बोला और कूद पड़ा।

तत्काल उसके बन्धन टूट गये—ऊपर का, बीच का और नीचे का। वह यूप पर से उछलकर देव के हाथों में आ गिरने के लिए दौड़ा, दौड़ा, गिर पड़ा। विश्वामित्र खड़े हो गए।

पुत्र पुत्र पुत्र। विसर्जित बन हुए वे देव। ऋषि बन्द हो गए। लोगों में हाहाकार मच गया।

शुनःशेप ज्यों ही गिरा त्यों ही मूर्छित हो गया। विश्वामित्र दौड़े और उसे हाथ में उठा लिया। राजा हरिश्चन्द्र का भाव अवरुद्ध होते होते रुक गया था और उनके मुख से आवाज़ निकली "हा हा हा।"

वन से आकर निस्तेज आँखों से वे देखने लगे। राजा वरुण ने इन्हें शाप से मुक्त कर दिया था।

अभय-मोचन

१

विश्वामित्र के तप का चमत्कार और प्रताप पुष्कर क्षेत्र का प्रत्येक इनका गुण गाने लगा। होगए और सबके मुख से धन्य है धन्य है के शीर्षिक और बहु मुख से हो रहा देखा था। राजा हरिश्चन्द्र का वरुण देव के सम्मुख के बिना ही शापमुक्त कर दिया। विश्वामित्र के प्रताप से पालन का पुण्य अवश्यम्भावी होने लगा। अवश्य करना नहीं पड़ा। धन्य है लोगों की आँखों में एक ही भाव है—विश्वामित्र ऐसी बातें लोग करने लगे।

विश्वामित्र जब शुनःशेप को लेकर धन्यमनस्क से बैठे, निकट के समस्त जनता उनके चरण-वन्दना करने लगी। वह उनके प्र का धन्य धन्य था तो भी उनके हृदय में कसक सालता था। देवों ने प्रार्थना की स्वीकार दी थी।

शुनःशेप को उठाकर वे अपने स्थान पर ले आये थे। उस दृश्य में ज्ञान के प्रयत्न करने लगा। बार बार इस कान्तिमयी और सुकुमार मुख की सुन्दरता में उन्होंने उमा के दर्शन किये।

उन्होंने शुनःशेप के शरीर पर बँधा हुआ वस्त्र उतार डाला। उसके वक्ष की बाईं ओर उनकी दृष्टि पड़ी। वहाँ एक लाल चिह्न उन्होंने देखा।

ऋषि की आँखों पर धुँधला पट छागया। उसके बायें स्तन के भाग एक बड़ा सा लाल चिह्न दिखाई दिया। इसपर के तट में एक कालिका दिखाई दी—कालो सुकुमार बार क्रम में पालक।

विश्वामित्र शुनःशेप का दुःख देख। वात्सल्य के भाव से लिपटकर

न युवक ने [illegible] रात की आँखों में उसकी आँखें [illegible] थी उसके हृदय में उसके [illegible] का संस्कार था और वह [illegible] चिह्न—मुद्रा—उसकी माता की साक्षी दे रहा था।

[illegible] के पास से [illegible] उन्होंने [illegible] के सिर पर हाथ फेरना प्रारम्भ किया।

[illegible] के गर्व का पार नहीं था। [illegible] पति के [illegible] से यह अन्तिम परिणाम निकला। उसका विचार अद्भुत है। [illegible] कर सका [illegible] उसने किया और अन्त में [illegible] है। उसके [illegible] हृदय में [illegible] ऐसा [illegible] आई [illegible] पन्नी में आई

[illegible] बैठ गई

"[illegible]!" विश्वामित्र ने प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा:

[illegible]

माना आपका निश्चय ठीक हो ! अन्तर्ज्ञान में रोहिणी ने शुनःशेप के विश्व का प्रमाण दिया। कितना सुन्दर नृत्याभिनय वह करता था ! ऐसी शक्ति तो अप्सरा में ऐसी थी, अब आप कुटी में फिर क्यों नहीं देखा।"

सच बात है रोहिणी, वह तो भगवान् है। मेरा पुत्र रमने वाला मुझे मिला तो नहीं।

"आपका पुत्र !" आश्चर्य से रोहिणी बोल उठी, "वह कैसे ?"

"हाँ मेरा ! रोहिणी ! वह मेरा पुत्र है।" विश्वामित्र ने शुनःशेप की ओर दृष्टि डालते हुए कहा।

आपका ! और अब इस नए रहस्योद्घाटन का क्या होगा यह समझने में असमर्थ रोहिणी ने कहा।

"हाँ" विश्वामित्र ने धीरे से कहा "मेरे रक्त का।"

क्या कहते हो !" मानो चकित होकर ऐसा कह रहे हो इस भाव से रोहिणी ने पूछा।

"हाँ इसके जन्म के समय भगवती ने इस अभ्यागत ऋषि का सत्कार किया था। भगवान् वरुण ने आज बताया है।

क्या ऐसा भी हो सकता है ? क्या ऐसा कभी सुना भी है ? आश्चर्य से आज होकर अगस्त्य की पुत्री रोहिणी बोल उठी।

मुझे कल रात अजीगर्त ने बताया।

झूठ बात है वह झूठा है। रोहिणी चिल्लाकर बोली। पर उसकी लिए आँखें सामने पड़े हुए युवक को देख बार-बार सम्यक् हो गईं। उसके मन में सन्देह उत्पन्न हुआ और उसके हृदय को धक्का लगा।

"नहीं रोहिणी सच बात है। इस विषय में सन्देह के लिए तनिक भी स्थान नहीं है। तुम जिस युवक के साथ अगस्त्य के आश्रम में आई थी वह यही है ! उसके साथ इसकी तुलना करके तो देखो।

हो कर सकता है ? सुदूर वानरद्वीपों के राजा अंशुमान के साथ इसका विवाह करना चाहता था।

शुनःशेप आँख से आया और राम को देखते ही वह उनसे गले मिला। उसका पुराना भय जो था वह दूर हो गई। शुनःशेप ने बड़े बड़े आँसू भरा कुछ बोला।

राम ने बता दिया कि शुनःशेप ! मैं जिस सीता की बात करता था वह यही है। बहुत स्नेह करती है।

सीता ने शुनःशेप के मस्तक पर हाथ रखा। वह आँखें बन्द कर के मुस्कराई। और शुनःशेप पुनः शान्त होकर आँखें बन्द करके सो गया।

विश्वामित्र मन में हँसे यह बालक उनका और उनका है उसका शरीर गाधेयाज और अम्बर के शरीर से बना है। राजा निषाद से की पुत्री से यदि यह विवाह करता तो आर्यावर्त से और विष निकल जाय परन्तु यह हो कैसे सकता है? पता सम्भवतः दिन आये तो पृथ्वी पर स्वर्ग हो जायगा। वे बलवान थे।

इतने में ऋषि अमरगिरि आगए। परन्तु इस बालमित्र का बनाए बिना विष मन से न रहा गया। उस दिन ! इसका मुख देखा इसकी आँखें देखीं इसका स्वर सुना। क्या विश्वरथ को स्मरण नहीं होता? और इसके इस पर इसकी माता का प्यार है। उन्होंने कहा।

आर देव कन्या ने तुम्हारे पास इसे छोड़ दिया।

हाँ पर मेरी कृपा-करुणा सब व्यर्थ हो गया। आश्चर्यपूर्वक विश्वामित्र ने कहा।

क्यों अब क्या हो गया?

क्या तुम इस भरतखण्ड के रूप में क्या बात करोगे?

भरतखण्ड ! चौंककर अमरगिरि बोले पर यह तो दस्यु-पुत्र है।

"हाँ" कहकर ने विश्वामित्र ने कहा "हाँ यह दस्युपुत्र ऋषि श्रेष्ठों के गुरु द्वारा भरतों में श्रेष्ठ होने के योग्य भी हो। आप तो

है तो कम ही थे। आज तक बहुत तुम्हारे त्याग से ही है
हुए थे पर आज इसका परिणाम स्पष्ट दिखा मुझे। राजाहीन भा
निःसत्व होते हैं। मनुष्यों के पास राजा चाहिए। हम सभी हैं।
तुम्हारी बात सत्य है।
"तो आप यह पद छोड़कर आज का शासक क्यों नहीं
स्वीकारते ?"

"मैं क्या देव।" कहकर विश्वामित्र हँसे पर उनका आचरण
दुष्ट भावों के वर्तमान सम्राट की अपेक्षा अधिक प्रिय है।

किन्तु विश्वामित्र का भाग्य इन सब बातों में भाग नहीं मिल
सकता था। जहाँ वे स्वयं आगे बढ़कर वहाँ काम करने
का भला हुआ इन सब समाचार कहने के लिए बाद पर आ पहुँचा।
वशिष्ठ के आश्रम में से नए प्रहरी को हटा कर दिया मुनि
वशिष्ठ ने स्वयं ही आज्ञा मानकर समस्त आयोजन का पौरोहित्य
स्वीकार कर लिया भव का विनाश करने के लिए उन्होंने युद्ध अपना
करनी तथा आदि राजाओं का आमंत्रित किया। ये सब बातें इन्ने
विस्तार से कह डालीं।

ये सब भयंकर समाचार थे। उसका पुरोहितत्व आज ही छिन का
समाप्त हो गया था यह सब सोचकर विश्वामित्र मन में
हँसे—और क्या हो सकता है? शांडिल्य आदि। उसकी आँखें सूखी हुई
थीं। अपने क्रोध करने का एक मात्र कारण था। वह पतिव्रता थे
और पति के प्रति उसने जो अविनयी आचरण किया था उसका उस
दुःख हुआ था। अपने पति के हृदय की व्यथा तक वह स्वयं नहीं पहुँच
सकी थी इस नहीं समझ सकता थी इसका उसे न दुःख था न
चिन्ता था।

विश्वामित्र अपने विचार में मग्न थे। उन्होंने निःश्वास छोड़ा।
इक्ष्वाकु का काला पुत्र सत्यव्रत मनाने हरिश्चन्द्र के पुत्र इत्यादि
की रक्षा का भार ले गया। वशिष्ठ को भेजों की आज्ञा प्राप्त हुई

'और यदि गुरुदेव न आ सके तो ?' रोहिणी ने कहा।

भरत हाथ में नहीं रहेंगे अयन्त ने गम्भीर स्वर में कहा।

'अयन्त ! रेणुका ने कहा भरतों पर विपत्ति आई है। तुम भी इस प्रकार घबरा जाओगे तो क्या होगा ?

अच्छा ! यह बात कुछ उस जैसी नहीं है।

पर इसमें से तुम्हें ही मार्ग निकालना होगा।

'कुछ तो कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। भरतों के भाग्य की अंतिम घड़ी आ पहुँची है ' अयन्त ने कहा।

भाग्य की अन्तिम घड़ी नहीं आ है भाग्य फूट गया है रोहिणी ने सिर पर हाथ ठोककर हुए कहा। अयन्त चकित हो कर देखता रहा।

अयन्त ! घबराओ मत। रेणुका ने मीठे शब्दों में कहा भरत भृगु और सम्राज्ञी स्वयं दूसरे संकटों में पड़े हैं। धीरज बिना मार्ग नहीं मिल सकता। शान्ति से सोचकर आगे बढ़ना।

वह दूसरा कौन सा संकट है ?

दुर्दम का बड़ा भाई मिल गया है।

स्वदत्त का बड़ा भाई ?' अयन्त ने आश्चर्य से पूछा।

हाँ ! उग्रा का पुत्र।

उग्रा का पुत्र ! अयन्त मूर्छित होता-सा बोला।

हाँ जिसे मरा हुआ समझा था वह जीवित है रेणुका ने कहा।

कहाँ ? कौन ?

गुरु राम।

? !

और अब वह भरतों का राजा होने वाला है रोहिणी ने क्रुद्ध होकर कहा।

सहसा अयन्त सब समझ गया। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। क्रोध में वह खड़ा होगया।

'आज तो यह स्वर्ग का राज्य हाथ आया है। इसका करो दान।'

'मेरा भी ऐसी इच्छा है किन्तु आप या स्वर्ग के इच्छुक भी किसी से पाप है ?'

'स्वर्ग तो हमारे लिए खाली है। आज पहले आप अपने हृदय से हमको आज्ञा दे दीजिए। इतना करो तो आज भर तुम्हारा भला होगा।'

"पर लड़का का माथा फिरा हुआ है रसोइया ने कहा।

'तो भी आपको कन्या अवश्य मारेगा।

४

मन्वन्तर या ऋषि विश्वामित्र अकेले बैठकर जगा रहे थे। उनके हृदय में अत्यन्त प्रकट हुई थी। अब वे निर्भय बन हुए थे। आज तक आप हुए लड़कों का उन्हें दुःख नहीं था। वशिष्ठ शक्ति मुनि भरत भृगु आदि सब को वे आश्रम में लड़नेवाले बच्चों के समान समझ रहे थे। इस सबको यद्यपि उन्हें आज कालिख आन पड़ती थी। आज वे सब से निर्भय और पृथक थे—केवल किन्तु सत्य की दृष्टि से सबको अवलोकन करते हुए समदर्शी दृष्टि से सबको सन्तुष्ट करते हुए।

विश्वामित्र आज आनन्द में थे क्योंकि वे बन्धनमुक्त हो चुके थे। मूर्खों! यह द्वेष के लिए एक दूसरे को काटने के लिए तैयार हुए हो? इतना भी नहीं जानते कि आपस्त तो द्वेष में रहता है, अमृत में नहीं। अन्त तक यदि मेरा पुत्र न होकर किसी अन्य का पुत्र होता तो भी उसको प्यार, उसके उपकार उसकी विद्या व उसका दर्शन कौन छीन सकता था! शराबियों का अपहरण करनेवाला राजा भी ऋषि आप होना तो यही पार पुरुष बन जाता। सहस्रों अप दासियों से विवाह करके आनन्द भोग रहा है और सबको आर्ष्य दासों के साथ सुख मना रहा है। जहाँ सत्कार न हो वहाँ वशिष्ठ से क्या अधिकार है। समस्त जगत् अन्धा होगया है।

"ऐसा कि बहुत-से भाषों ने किया—

आप सबको आप क्या ऐसा ही करने वाले हैं ?

"नहीं। यह सुनने का जिसे अधिकार होगा उसे ही कहूँगा। रोहिणी! मैं केवल तुम्हें ही कहता हूँ क्योंकि तुम मेरी सहधर्मिणी हो। मेरी बात जब तुम्हारे ही गले नहीं उतरती तो दूसरे की क्या बात है ?"

पर आपका यह विचार यदि सब जानें तो क्या होगा ?

मेरी अपकीर्ति होगी। मेरा पुरोहितपद छूटेगा। मुझे छोड़ देंगे। सब और क्या करेंगे ?

हमारे बालों का क्या होगा ? हमारे बाल-बच्चों का क्या होगा ? उनका क्या होगा ? यही देखकर सब हँसेंगे कि भाटों में भर ऐसा मोका उत्पन्न होगया है और क्या ! कवि हँस पड़े।

"देवी ! यह आप क्या कह रहे हैं !" आक्रन्दपूर्वक रोहिणी ने कहा।

"रोहिणी ! कार्यक्षेत्र में प्रवेश ! उद्वेग न करो। हम दोनों तो जीवन भर के साथी हैं। असमान [illegible] से मेरा मित्र है। भारत भर [illegible] है। तुम जब अपने साथ मुझे समझने हो से अलग कर रखना चाहती हो तो इस प्रकार मुझे उलझाकर रखने से लाभ क्या होगा ? तुम यह मुझे पागल समझती हो पर मैं तुम्हें सबका पागलपन स्पष्टतया दिखा सकता हूँ। इन लोगों का भला हो कैसे सकता है ? यदि तुम मुझे अपने साथ बाँध सको तो मैं कापुरुष होऊँ। मैं पहाड़ी स्वच्छ [illegible] के समान रहा तो भी क्या और न रहा तो भी क्या ?

"यह क्या करने बैठे हैं आखिर ! आजतक का किया-कराया सब धूल में मिला रहे हैं ? आपकी कीर्ति और प्रतिष्ठा तक कौन पहुँच सका है ?"

कीर्ति और प्रतिष्ठा ! यह तो मेरी दृष्टि का भूषण—मुझे दबोचे हैं—वे यदि न रहें तो मैं दोनों कैसे रहेंगे ?

पथ भी खोलिए।

"कहो रोहिणी ! आज तो सिन्धु की लहरों में से कुछ नया संगीत मुझे सुनाई दे रहा है तुम आओ, मैं भी आ जाऊँगा। तुम तो आना चाहती थी रोहिणी मैं कहीं ऐसा होऊँ पर वर्तमान में मुझे केवल हृदय में स्थान दो।

नाथ ! आपको कोई नहीं समझ सका तब मैं कैसे समझ सकूँगी ? देव ! मुझे आवास तक पहुँचाना चाहिए।

रोहिणी को पहुँचाकर लौटते समय वे उनके पैर पड़ा।

"कौन है ?

"मैं हूँ गुणराय।

गुणराय, तुम अभी सोए नहीं।

'मैंने सोने के बहुत प्रयत्न किए पर मुझे नींद ही नहीं आती। इसलिए मैं आपकी प्रतीक्षा करता था।

वत्स ! तुमने यह सब विद्या कहाँ से प्राप्त की ?

"देव ! मैंने तो कितने ही पाप करके यह विद्या प्राप्त की है।"

विद्या प्राप्त करने में जो पाप किया जाता है वह पाप हो ही नहीं सकता। मुझे बताओ तो सही वत्स ! कि पातक के घर रहकर तुमने ये संस्कार कहाँ से प्राप्त किए ?

सिन्धु के तट पर बैठकर खान-खान गुणराय ने ऋषि को अपनी पूर्ण आत्मकथा कह सुनाई। उसने अपने मालिक के यहाँ से भाग के विद्या प्राप्ति का उत्कट ध्येय रख के अनेक कठिनाइयों को पार करने की उसने अपनी आतुरता का वर्णन किया और अपने को वेदना का पार करके सुशासन पिता के पास से विद्या प्राप्त करने के कठिन प्रयत्नों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। अन्त में यथार्थ विद्या नायकों के मुख से एक बार सत्यार्थ सुनने की अभिलाषा को सन्तुष्ट करने के लिए अपने को अर्पित करने की भी अपनी स्वकल्प कह सुनाई। यह सुनकर

के पुरस्कारस्वरूप मैं किसी तरह तो मेरी कीर्ति और प्रतिष्ठा बच जाय। पुरोहितपद भी छोड़ना न पड़े

विश्वामित्र हँसे। यह सब करें तो ?

नहीं…नहीं। मुझे तो अपने सत्य के ही पथ पर चलना चाहिए—वह हो कहल—अपने ही विनाश के मुँह में वहीं मुझे शान्ति मिलती।

६

उस दिन भृगुओं के राजा दिवोदास के साथ मंत्रणा करते थे। राजा दिवोदास और सोमदत्तिदा की सभा के सभा होते थे। हिमालय की कन्दराओं के प्रदेश में बसने वाले ये वृद्ध पुरुषश्रेष्ठ हिमालय के पर्वतों के समान थे। पहाड़ के समान उनका शरीर कभी तक अजय था। बहुत दिन से घटित सिकुड़न उनके पूरे शरीर पर थी। और उनके सिर के निकलते बाल कैलाश का स्मरण करा रहे थे।

सेनापति की चिन्ता का पार न था, इसलिए उन्होंने भृगुओं से विधि-विधान जानने वाले वृद्ध भृगु अपने बड़े पुत्र विश्वावसु, विश्वामित्र के बड़े पुत्र देवरात, भरतों के सेनापति प्रतर्दन इत्यादि को भी उस समय वहाँ बुलवा लिया था।

भरतों पर भृगुओं का प्रभाव था। समस्त आर्यों पर ऐसा संकट कभी नहीं आया था। उस समय राजा, गुरु और स्वयं विश्वामित्र इस समय चिन्तित होकर थे। ऐसी परिस्थिति में विश्वामित्र का भृगुओं का पुरोहित पद छोड़ना यह सब इस सबको मौत के समान लगने वाली बात था। तो भी इस पद को सुरक्षित रखने के प्रयत्न करने की विश्वामित्र की इच्छा तक नहीं दिखाई देती थी; पर सब कुछ इस प्रकार व्यवस्थित कर दिया गया था कि विश्वामित्र स्वयं भी इस पद को छोड़ना अस्वीकार नहीं कर सकते थे।

और इस समय—जिसके अस्तित्व का किसी को सपना भी नहीं था वह वशिष्ठ का पुत्र भी प्रकट हो गया। ग वशिष्ठ भरतों ने तो देवदत्त को ही अपना राजा मान लिया था। भूतपूर्व सेनापति प्रतर्दन और उसमें न

है इस समय ईश्वर नहीं। यदि हम इस समय शासन न रहे तो क्या हो रहा होगा।

“विश्वामित्र को हम कोस अपने साथ [illegible] फिर भी हम यह है? अमरसिंह ने कहा। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ... [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] हम ही [illegible] नहीं करना हो गए हैं।

“पर अब क्या होगा? [illegible] ने कहा। मुझे इस [illegible] का विश्वास नहीं है।

इस [illegible] को तो बुलाया। वह [illegible] इस सम्बन्ध में क्या [illegible] है वह तो [illegible] [illegible] ने कहा।

[illegible] [illegible]। हम बुला आया। अमरसिंह ने कहा।

[illegible]। [illegible] वहीं से उठकर [illegible] को बुलाने चला गया।

[illegible] तो इस समय तक [illegible] ही है। इस [illegible] के [illegible] में हम क्या करना चाहिए? [illegible] ने कहा।

[illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] से हटा दें तब तो [illegible] [illegible] की [illegible] कभी नहीं करेंगे। [illegible] ने कहा।

“[illegible] भी नहीं करेंगे और न वहाँ आयेंगे तो [illegible] [illegible] भी नहीं आयेंगे। [illegible] ने कहा।

“[illegible] तो आयगा ही। [illegible] ने कहा।

“[illegible] भी आयेंगे और [illegible] भी आयगा। [illegible] [illegible] के साथ [illegible] का बहुत अच्छा सम्बन्ध है।

वह तो मेरी [illegible] का [illegible] के साथ विवाह करना चाहता है। [illegible] [illegible] इस प्रकार मानने वाले नहीं हैं। [illegible] ने कहा।

“[illegible] ने हमारे [illegible] के साथ [illegible] विवाह करा दिया होता [illegible] कठिनाई कम हो जाती।”

[illegible] [illegible] पर [illegible] हो गई।

तुरन्त ही आप सबको वहाँ चल देना चाहिए, ऐसा प्रबन्ध हो है।'

'अच्छा।

"और अगले दिन प्रद्युम्न देश के राजा प्रद्युम्न भी तीन मन्त्रियों के साथ आ पहुँचे। ऐसा जान पड़ता है कि ये सब बाधा के बदल का द देंगे।'

"अच्छा। मुनिवर ने आरम्भ तो बहुत सुन्दर किया है" विश्वमित्र हँसे। ज्यों-ज्यों कथा बढ़ती जा रही थी त्यों-त्यों वे व्याकुल होते जा रहे थे।

और सूदकवि ने कहलवाया है कि दीर्घ ने लोमहर्षिणी को रोककर कहा 'राजा सुदाम ने वशिष्ठ मुनि की सम्मति से राजा प्रद्युम्न के साथ लोमहर्षिणी का विवाह निश्चित किया है।

"मैं उससे विवाह नहीं करूँगी, लोमा ने क्रोधपूर्वक कहा।

इसलिए स्वयं लोमाजी को बुलाने यहाँ आनेवाले हैं।

इस अङ्गल के राजा से मेरी पुत्री कभी विवाह न करेगी" सुम बोल उठे, मैंने सुना है कि वह बहुत ही दुष्ट व्यक्ति है।"

राजा सुदाम की आज्ञा हो चुकी है दीर्घ ने कहा।

मैं नहीं जाऊँगी लोमा ने दृढ़ता से कहा।

प्रद्युम्न इसके योग्य नहीं है। लोमा के जैसे संस्कार हैं उस दृष्टि से तो यह उसे जीवित मार डालने जैसा काम होगा अमन्यु ने कहा।

थोड़ी देर तक कोई कुछ नहीं बोला।

दादा फिर रेणुका ने कहा, तो लोमा को किसी प्रकार भी बचना चाहिए।

"मैं तो दूर रहा, कुत्स ने कहा।

'लोमा वास्तव में कठिनाई में पड़ गई है यहाँ विचार करें

"पागल बनाने वाले पति सारे ही क्यों! यार कहें तो मान मैं राम को भेज दूँ। इस [illegible] धूप में [illegible] यहाँ स्थिर होकर [illegible] लेगा।" रेणुका ने कहा।

"हाँ हाँ राम को भेजो। उस को मैं दो चार शास्त्र सिखाऊँगा— जिनका तुम किसी को ज्ञान भी नहीं है।" [illegible] इतना कहकर [illegible] हँसे।

"हाँ हाँ ठीक है। मैं भरत के साथ दादा के यहाँ नहीं जाऊँगी" क्षोमा ने अपना अन्तिम निर्णय सूचित किया।

"रेणुका!" जमदग्नि ने कहा "तुम इन बच्चों के साथ जाओ। बहुत दिनों से दादा के यहाँ गई भी नहीं हो। और क्षोमा को छोड़ भेजोगे तो सुदास उसे शान्ति से रहने भी नहीं देगा। तुम साथ रहोगी तो ठीक होगा।"

"भृगुश्रेष्ठ जो कहते रहे हैं वह सत्य है। सुदास कब क्या करे इसका कोई ठिकाना नहीं है" विश्वामित्र ने कहा।

"रेणुका भी मेरे यहाँ बहुत वर्षों से नहीं गई। क्यों देवी रेणुका! तुम तैयार हो जाओ।" राजा कुत्स ने कहा।

"क्यों रेणुका?" जमदग्नि ने पूछा।

"जैसी आपकी इच्छा" रेणुका ने कहा।

"विमद! तुम लोगों को लेकर [illegible] प्रस्थान करो। [illegible] दादा और रेणुका [illegible] आगे [illegible] मिलेंगे। [illegible] कोई [illegible] नहीं होगी न?" [illegible] ने पूछा।

"नहीं होगी।" विमद ने विश्वास दिलाया था।

"तथा पौर्णिमा के समय [illegible] शान्ति से रहेगा तो [illegible] अच्छा ही होगा।"

"यह मैं अब पूरा समझ लूँगा" राजा कुत्स ने कहा।

इस जनसमूह में भरत, भृगु, अनु और द्रुह्यु पानी जैसे घूमने लगे। योद्धाओं की भुजाएँ लड़ने के लिए फड़कने लगीं।

सबको ऐसा भास हुआ मानो भरत और भृगु आज दासता से छूटे हुए हों। जमदग्नि जिनके पुरोहित थे वे अनु और द्रुह्यु भी इससे प्रसन्न हुए थे। सबके मन में यही विचार समा रहा था कि चलो तृत्सुओं के शासन से मुक्त तो हुए।

केवल विश्वामित्र ही अकेले दुःखी थे। उनका पुरोहितपद इन पाँच सात जातियों को एकता में बाँधने वाला बंधन था। आज ये बंधन टूट गए और ये अल्प बुद्धि इस प्रकार प्रसन्न हो रहे थे मानो मुक्ति मिल गई हो। वे नहीं जानते थे कि भरतों और तृत्सुओं के मध्य युद्ध रोक और एक पुरोहित होने से ही सप्तसिन्धु में सुदास एकछत्र राज्य करता था और इसलिए सुख और शान्ति व्याप्त थी। अगस्त्य और लोपामुद्रा की दूरदर्शिता द्वारा रचित महत्ता आज इस प्रकार नष्ट हो रही थी—और ये मूढ़ आनन्द का अनुभव करते थे। पर इसका परिणाम क्या होगा? वैमनस्य, विग्रह, हत्याकाण्ड—और क्या?

इस प्रकार विश्वामित्र का हृदय खिन्न था, पर रोहिणी के हर्ष का पार नहीं था। देवदत्त की आँखों में नया तेज चमक रहा था। उसके गर्व की सीमा नहीं थी। इस प्रकार विश्वामित्र के सभी पुत्र और शिष्य सब मुक्ति के आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

विश्वामित्र को इनके अपने गिने जाने वालों में आज विश्व अन्धकार स्पष्ट दिखाई देता था। इतने वर्षों तक उन्होंने विभिन्न जातियों को एकत्र करने का जो प्रयोग किया था वह निष्फल सिद्ध हुआ। उन्हें और सब नहीं समझ रहे थे और वे सबके आनन्द को नहीं समझ रहे थे। उनके और इन सबके बीच में एक दुस्तर सागर पैदा हुआ था। पर उनके हृदय में कहीं कटुता नहीं थी, कठोरता नहीं थी। आज उन्होंने स्वयं अपने हाथों रचा था। अपनी निष्फलता को सबके सुखपान में उन्होंने अपना कर्तव्य और आनन्द माना था। वे

रुग्णाई म पाठक स्त्री पुरुषों को इस प्रकार दुख रहे थे मानो स्वत तट पर खड़े-खड़े नदी में डूबते हुए मनुष्यों को देख रहे हों। अब वे भी कुछ हताश थे। उसकी रखी हुई मूर्ति वशिष्ठ के स्पर्श से भ्रष्ट होगई थी। यह भी उसके लिए दुख का कारण था। यह मूर्ति उन्हें कालाग्नि सम प्रतीत होती थी। स्वयं अब क्या करें यहां एक प्रश्न रह गया था।

और वह उमा का पुत्र

उसके लिए तो अब भृगुओं में ही व्यवस्था करनी पड़ेगी। भरतों में कोई उसे सुख से रहने नहीं देगा। सब उसे चाण्डाल मानते थे। इसी लिए अमदग्नि ने उसे भगाया था। मुनि वृद्धश्रवा भी उसमें रस लेते थे। किन्तु प्रात काल के स्नान के समय उस लड़के को उन्होंने देखा। उसकी आँखें उस पर ही स्थिर थीं—अकिंचन भाव से पूजा भाव से। घर के भी उस ही स्थिर नयना से देख रहे थे। उनका मन चाहता था वे उसे अपने ही साथ रक्खें उसे अपनी विद्या का स्वामी बनावें। पर आज का वे सब जो साथ रहते थे उसमें उसका स्थान नहीं था।

८

दोपहर को तत्सुओं का सेनापति दयन अपने घुड़सवारों के साथ जामदग्नियों को ले जाने के लिए आ पहुँचा।

त्सुओं ने विश्वामित्र पर जो कृपा की थी और हरिश्चन्द्र का जो आयु प्रस्थ हुई थी उस विषय में दयन सुना नहीं था। वह तो यह मानता था कि अब वह हरिश्चन्द्र के ग्राम में पहुँचेगा तब तक विश्व मित्र मानव पूरा कर चुके होंगे और तेजस्वी ऋषि तुरन्त आत्मा को निकाल देंगे।

पर हरिश्चन्द्र के ग्राम के निकट आते ही उसके आश्चर्य का पार नहीं रहा। वहां उसे स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट जन दिखाई दिए, और अधिक निकट आने पर उसने जो मनुष्य देखे सब स्वस्थ थे। इस प्रकार भ्रम हुआ जो किसी दुख का लेशमात्र नहीं था। वह मन आया और घुड़सवार के साथ मंदिर

हृदय ! मैं क्या कर सकता हूँ ? इस युग के मनुष्यों के पतन से भी अधिक आपत्ति ... का विनाश कौन कर सकता है ... अपने आप सुख स्वीकार नहीं करेंगे तो समस्त आपत्ति सभी कहीं से स्वीकार कर सकता है ...

"हृदय बहुत भावुक हो तो तुम छोटे आनेवाले हो न ?" विश्वामित्र ने धीरे से कहा। ... तो मुनिवर से मेरा एक ... कहना।

मुनिवर पहले ... के द्वारा ... वाले थे ... मुझे ही आपको ... आपस ... कह दिया है।

हृदय ! विश्वामित्र धीरे से ... मुनिवर को मेरा प्रणाम कहना और कहना कि देव ने ... इसी प्रकार मैंने ... किया है और ... मन ... के कहने से ... के लिए पुरोहित स्वीकार किया था ... मुनिवर को इक्ष्वाकु प्रधान होकर यह पद छोड़ रहा हूँ। इतना ही नहीं ... का स्वामित्व भी मैं छोड़ दिया है। मैं अपने ... पर सुरक्षित रखूँगा। किन्तु अब ... अब ... सार्वभौमिक सुन्दर और समृद्ध ... शान्ति ... का उत्तरदायित्व मेरे सिर पर नहीं रहेगा।

हृदय सुनता रहा।

"मैंने परोपकार किया है ... किया है यह सब ठीक है" विश्वामित्र ने ... कहा "किन्तु ... के विष से ... का विष मिटाने से ... कैसे प्रसन्न हो सकते हैं ? किन्तु मुनिवर इस समय ... हो मानने वाले हैं ? इस विष को उतारने का मैं प्रयत्न करूँगा— तुम्हारी रीति या भरतों की रीति से नहीं पर अपनी रीति से—केवल अपनी ही रीति से।

तुम्हारा कठिन होगा।' फिर थोड़ी देर पश्चात् वे धीरे-धीरे ... न्द की इच्छा।

९

पांच सौ चुने हुए हैहय घुड़सवारों समेत अर्जुन इस ओर आया था। सुदास ने रोका था पर अर्जुन लोमा को लेने के लिए अधीर था और हठ करने पर अर्जुन को कौन समझा सकता था!

अर्जुन तो प्रचण्ड योद्धा था। उसके स्नायु अश्वों का बल दिखाते थे। उसकी भयङ्कर मुखमुद्रा त्रास फैलाती थी। उसके योद्धाओं की गर्जनाएँ सन्नाटा करती थीं। सप्तसिन्धु की सीमा से दूर पर बहती हुई रेवा के तीर तक उसकी धाक जमी हुई थी।

बहुत वर्षों से सुदास ने उससे मैत्री कर रखी थी। आर्यों या उनके मित्रों से लड़ने का प्रसङ्ग आने पर अर्जुन को साथ रखने से उसे विजय प्राप्त होगी इस कारण उससे अच्छा सम्बन्ध रखने के लिए उसने बहुत बातें सही भी थीं।

अर्जुन के सामने सप्तसिन्धु के राजाओं की कोई गिनती नहीं थी पर उनके संस्कार, उनका सौजन्य और उनका शिष्टाचार देखकर उनके साथ मैत्री जोड़ने की इच्छा होती थी। उसे अपनी शक्ति पर बहुत गर्व था पर इसी इच्छा से वह गर्व भङ्ग हो जाता था। जब सुदास ने उससे सहायता मांगी तब उसने तुरन्त हां तो कह दिया पर एक ही शर्त पर कि लोमा उसकी पत्नी बनेगी।

अनूपदेश के जङ्गलों में बसनेवाले राजा के रहन-सहन का कुछ भी तनिक विचार नहीं था। उसकी अनेक स्त्रियाँ थीं इस प्रकार की किंवदन्ती भी प्रचलित थी। उसमें संस्कार बहुत ही कम थे यह तो स्पष्ट ही दिखाई देता था। तप और आचार जैसी भी कोई वस्तु उसके राज्य में होगी यह भी शङ्कास्पद था। मुनि अगस्त्य और भगवती लोपामुद्रा वहां आश्रम बनाकर निवास कर रहे थे इसके अतिरिक्त इस देश के विषय में और कोई अच्छाई सुनने में नहीं आई थी। सप्तसिन्धु के

[illegible] राजा [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सिन्धु [illegible] रहा।

[illegible] मैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के साथ [illegible] में है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] करने में कुछ मन नहीं था।

[illegible] फिर भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एक दिन [illegible] [illegible] कि मैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इच्छा थी। किन्तु सबसे विशेष इच्छा यह थी कि वह सूर्य राजा की कन्या के साथ विवाह करे। राजा दिवादास की पुत्री कमली बनी थी, उसकी आज्ञा का पालन करे उसके चरण छूवे [illegible] था।—बस इस समय यही एक बात उसकी महत्वाकांक्षा की सीमा थी।

उसके कान वनराज के समान सावधान थे। दूर से आते हुए घोड़ों और मनुष्यों की पदध्वनि उसने ताड़ ली। उसने कान ऊँचे किये। [illegible] प्रकार बैठे बैठे क्या किया जाय? इतनी दूर में [illegible] ने क्या कोई आ सकता है? उसने तुरन्त मालिक को आज्ञा दी और सब से [illegible] सामन्त योद्धा लेकर जिस ओर से आहट आती थी उस ओर चल पड़ा। उसके सैनिक तो अगम में पड़े थे। इस प्रकार उनके दिन [illegible] पता नहीं था। पर चाँदनी रात थी इससे मार्ग भी साफ़ हो जाता था।

मध्यरात्रि के पश्चात् [illegible] आगे एक घाटे में [illegible] पहुँचे। वहाँ [illegible]

[illegible]

श्रोह यो !" श्रर्जुन ने कहा। क्योंकि इनके दादा के गुरु थे यह स्मरण करके उनके वंशजों का उसने सत्कार किया।

मैं भाग्यशाली हूँ, जहाँ जाता हूँ वहीं मुझे लाभ ही होता है।

विमद ने आँखों के संकेत से राम और श्रोमा को चुप रहने की सूचना दी।

"तुम तो हमारी श्रोमदिग्गी को लिवाने के लिए आये होगे?"

"हाँ"

"श्रोमा यहीं है इसलिए सेनापति स्वयं उसे लेकर ही आयेंगे," विमद ने कहा।

श्रोमा समझ गई और नीचे देखती हुई घरवा के पास सरककर खड़ी हो गई।

"हाँ लावेंगा ही। नहीं लावेगा तो जायेगा कहाँ?"

अर्जुन बोलते बोलते रुक गया। राम के मुख पर भयंकर निश्चय व्याप्त हो गई थी। उसकी आँखें विकराल होकर अर्जुन को देख रही थीं। अर्जुन को उसकी दृष्टि देखकर क्रोध आ गया।

"पुत्र! मेरी ओर तुम इस प्रकार क्यों देखते हो?"

"और तुम हमसे शत्रुओं के समान बातें क्यों कर रहे हो!" राम ने कहा।

विरोध और अर्जुन और निर्भयता के कारण वैसा ही विकराल राम एक दूसरे को देखते रहे। फिर अर्जुन मूँछों पर ताव देकर हँसा।

"जानते हो तुम्हारे दादा हमारे गुरु थे?"

"तुम्हारे दादा के आचरण से मेरे दादा तुम्हारा देश छोड़कर चले आए थे यह भी मैं जानता हूँ।"

"हा हा हा दादा गये" अर्जुन ने हँसते हुए कहा "अब तो हम लोग।"

"हाँ अब रहे हम लोग।" राम ने इसके शब्द करता से दोहरा दिए

[illegible] है।
[illegible] की आवश्यकता नहीं है
[illegible] नहीं [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] की आवश्यकता नहीं है [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] नहीं है [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

विमलेन्दु की आँखों में प्रकाश चमक रहे थे। दुख को [illegible] उसका सिर घूमा।

उमा.... उमा ....उमा.....! उसके हृदय में प्रतिध्वनि गूँज रहा।

पाँचवा खण्ड

भार्गवों में मिल गए। साथ ग्राम से साथ आए सब काम छोड़कर रहने में सुसज्जित होकर अन्न के निमित्त के लिए नर्मदाग्राम में आन कर और तप तथा विद्या के धाम, ऋषियों के आश्रम में पहले उम रहे था। सर्वत्र आर्य-संस्कारों की विशुद्धि साधन के प्रयास होते रहे।

अत्रि और भृगु चले गए थे परन्तु उनके स्थान पर अब दूसरे लोग आ गए थे। पहले के समान ही नृगपुर में आर्यों का मुख्य नगर बन गया था। अन्तर केवल इतना ही था कि पहले वह सौम्य था, अब दूर देव गया था।

राजा सुदास की अभिलाषा का दिन निकट आ गया था। उसने चक्रवर्ती पद प्राप्त किया था। शनैः शनैः में उसका शासन माना जाने लगा। सब आर्यों ने दासों को गाँव से बाहर निकालना और दान देने-लेने का अधिकार भ्रष्ट करना प्रारम्भ कर दिया था। आर्य कुल के आचार विचार की शुद्धि की रक्षा के लिए नये नियम बनाए और स्वीकार किए जाते थे। प्रत्येक संस्थान से सब राजा लोग सुदास की सेवा में हुए सभा में सम्मिलित हो रहे थे।

जब मुनि पर्यटन करके लौटे तब सुदास ने उनसे कहा कि हरण के लिए हैहयों का राजा भृगु से भी गया है। मुनि को यह बात अच्छी न लगी। स्वेच्छाचारी भृगु ने में उन्हें अविश्वास था। अनेक बार इसी की आराधना करके उन्होंने इस प्रकार राजा का हृदय निर्मल करने के लिए साधना की थी। आर्यावर्त की विजय में वह एक अङ्ग-रूप था। उसकी मैत्री का रक्षण करने के लिए उसमें लोमा का विवाह आवश्यक था और मुनि का यह भी ख्याल था कि लोमा के साथ विवाह करने से भृगु एक संस्कार जागृत होंगे, लोमा जैसी आत्मसम्मान युवती उस पर शासन करेगी। दूर स्थित माहिष्मती नगरी की ओर वह राजा जब अपनी तथा उसके बाद सारस्वत से भी अधिक विशाल देश के ऊपर विधान आर्य धर्म का प्रचार होगा, और यदि देव की इच्छा होगी

तो उन्होंके हाथों आघात का समाचार रंगा नहीं कि और तक फैल जायगी।

अनेक बार मध्यरात्रिमें नक्षत्रों का दर्शन करते समय उन्हें प्रतीत हुआ थी कि अर्जुन और लोमा का [illegible] आर्यत्व की विस्मय एक बड़ा था। इसमें आघात की भय भयंकर था। और उसके द्वारा अर्जुन का हृदय संस्कारयुक्त करनेकी शक्ति उनके लिए देवोंकी प्रार्थना करते थे। उन्हें कभी-कभी ऐसा लगता भी था कि यह शक्ति देव उन्हें प्रदान कर रहे हैं।

तो भी जब वे अर्जुन से मिलते तब उनका हृदय काँप उठता था। उसमें धर्म या संस्कार के बीज थे या नहीं इसमें भी उन्हें शंका थी। किन्तु देवों को यह काम कराना ही था इसलिए उसे शुद्ध करने की शक्ति देव अवश्य प्रदान करेंगे ऐसा मुनिवर वशिष्ठ मानते थे।

तो भी लोमश के पीछे अर्जुन का जाना उन्हें तनिक भी अच्छा न लगा।

एक दिन सन्ध्या समय उन्हें समाचार मिला कि अर्जुन कुछ सैनिकों के साथ कुछ दासों को पकड़ कर सुदास [illegible] लाया है और उसके सैनिकों का भारी न [illegible] किया था और बड़ा युद्ध हुआ था असंख्य [illegible] इत्यादि उसमें जीते थे।

यह अपूर्व बात सुनकर वशिष्ठ आश्चर्य चकित हुए। दूसरों ही [illegible] यह अकल्पित युद्ध घट गया, इससे वे खिन्न हुए। [illegible] उनसे मिलने क्यों नहीं आया यह भी उनकी समझ में न आया। [illegible] की बनाई हुई योजना में यह बाधा उन्हें अच्छी न लगी। सुदास के सुदास के पास समाचार [illegible] अनुचर भेजा किन्तु उत्तर मिला कि इस सम्बन्ध में सुदास को कुछ पता नहीं है और जब अपने [illegible] समाचार लाने भेजा तब अर्जुन पकड़ने के कारण [illegible] वह नहीं मिल सका पर इतना पता लगा कि [illegible] पीछे [illegible] दासों को ही पकड़ कर लाया था।

वशिष्ठ का विश्वास प्राप्त न था। यह प्रभु से बिना कहे चला गया बिना पूछे चला जाना और ना जाना भी नहीं था वह कर आया। वह था और ऋषियों की अवगणना कर रहा है इसका भी उसे विचार नहीं था। तब तो बस एक ही मार्ग रह गया है—शुनःशेप को उसके साथ ब्याहने के अतिरिक्त उसके उद्धार का कोई उपाय नहीं था।

सारी रात्रि मुनि ने देवाराधना में व्यतीत की। उन्होंने देव से प्रभु के लिए सद्बुद्धि और अपने लिए शान्ति की याचना की। जिस मनुष्य पर आर्यावर्त का बल और विस्तार अवलम्बित था उसे अपना बड़ा मानने को प्रेरणा करने के लिए उन्होंने बहुत देर तक देवों की आराधना की।

प्रातःकाल स्नान-सन्ध्या करके जब मुनि स्वस्थ हुए तब एक शिष्य समाचार लाया कि कवि चायमान भार्गव का पुत्र विमद आया है और एकान्त मिलना चाहता है।

ऋषि ने विमद को तुरन्त ही बुलवाया।

बहुत दिनों तक घोड़े पर अथक यात्रा करने के कारण वह धूलि धूसरित हो गया था। उसने ज्यों-त्यों मुनि का प्रणिपात किया।

"इस समय कैसे आये विमद ?"

"मुनिवर्य शुनःशेप कहाँ है ? राम कहाँ है ?"

"क्यों क्या है ?"

"प्रभु ने देवव्रत को बलपूर्वक यहाँ उठा ले आया है।"

ऋषि की भौंहें तन गईं। राजा दिवोदास की पुत्री और ऋषि जमदग्नि के पुत्र पर ऐसा अत्याचार हुआ ! बाहर से शान्त रहने का प्रयत्न करते हुए मुनि ने कहा, "क्या हुआ विस्तारपूर्वक कहो। ऋषि विश्वामित्र का क्या हुआ ? और यह सब क्या है ?"

विमद ने संक्षेप में सब कह सुनाया। हरिश्चन्द्र का उद्धार, शुनःशेप का मन्त्र गान, ऋषि विश्वामित्र का निर्णय, देवदत्त का राज्याभिषेक, भरतों का दस्युओं की ओर प्रस्थान, जामदग्नियों, राजा कुत्स, अम्बा, राम

द्रोण के पुत्री वन में रह रहा था उसको पहचानता नहीं थी मुनि ने कहा। 'इस तो अब तुम जान लिये हो। शापों के लिए इतने भी युद्ध हुआ है। इनमें ऐसा निर्णय युद्ध का परिणाम होगा।'

ऐसा क्या परिणाम होगा ?

"वह सब विश्व पट में लिख जायगा।"

"मैं पांच सहस्र पुरस्कार और पुत्रा लूँगा।"

परन्तु इस प्रकार यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार मनमाना युद्ध करने लगे तो हमारी शक्ति क्षीण हो जायगी। यह युद्ध भगवान देव की इच्छा के अनुसार होता था, मनुष्य की इच्छा के अनुसार नहीं। नहीं तो यह अधर्म का युद्ध हो जायगा।

अर्जुन हँसा — अब तो जो होना था हो गया, और हमारा यहाँ तो कहूँ यहाँ धर्म होता है

नहीं तो तुम्हें है। अहो धर्म नहीं पायेगा नहीं। तुमने ब्राह्मणों और उनके बच्चों को पकड़ कर कितना अनुचित काम किया ? मुनि ने कहा।

अर्जुन चुप रहा। ऋषि की पत्नी और बच्चों को पकड़ने के समय उसका मन भी कुछ तो दुखा ही था। और फिर वे मनुष्य तो उसके गुरु के कहने ही से और बच्चे थे। परन्तु किए हुए व्यवहार पर पश्चात्ताप करना तो अर्जुन का स्वभाव नहीं था।

क्या आपको पता था कि वे द्रोण के सम्बन्धी हैं ?

पर उस समय उन्हें पकड़ा क्यों ? और यहाँ लाए क्यों ? मुनि ने पूछा।

मैं जानता ही था कि यह आपको अच्छा नहीं लगेगा। हँसकर अर्जुन ने कहा।

इस प्रकार के प्रश्न उसमें कोई पूछ नहीं सकता था। अर्जुन मन

"क्षमा!" मधु न म थोड़ क" कह निस्मारपूर्वक शब्द (नकाला ।

"तुम दा नहते हेम राजा दा ता हमारे धम का आधार है

वशिष्ठ करते रहे "क्योंकि बिना रायपन मुद्रे का सब हो। राज्य" दूसरा

आ सकता है धम का नाश नहीं किया जा सकता ।

मधु न अपने हाथ का दह दक्षिम म था म रख रहे था । आ

कुछ हाया उसका अब क्या ? उसने कहा ।

"अब उसका प्रायश्चित ।

"अच्छा चार कराइए प्रायश्चित मैं तो तैयार बैठा हूं है मधु न

विवशता म हँस दिया । वशिष्ठ कठारतापूर्व क मौन रहे ।

घृणा क पश्चात्ताप के बिना इस प्रायश्चित स्वीकार नहीं करते ।

चार का ता प्रायश्चित नहीं करता निसर उसका उदय नहीं करता । और

व ग्रहण करने समय व'शष्ठ क स्वर में दैवी सहिष्णुता का आवेश

आ गया ।

"तुम महान् हो बहुत दो तुम्हार धम शक्ति है सहिष्णु है पर

जिस बरदान्त क मान पर आपका स्थिर है उसकी अवमानना करके

क्या प्रश्न करते हमने म क्या सुरक्षित रख सकाते ? ?

मुनि क स्वर म उसना नहीं थी इसका जो जैसा निकला थी।

मधु न के हृदय पर इस बात का प्रभाव पड़ा । वह अपनी स्वभावजन्य

निश्चलता और क अज्ञान म समय भूलकर असमञ्जस में पड़ गया ।

तुम्हारी शान ल म म अत हो हो पर धम का दुण्ड दाने स तुम

सहम ग न को प्रस्त । ता मुनि का तडना बड़ा । पर फिर उन्होंने स्वर

धीमा करके कहा उ धा र म का भाग आओ हम ये मान का पार

किया है ता ऋषि उमसृति म क्षमा याचना करके आओ। तुम क्या कर

क साथ हो य" तुम नहीं जानते । जगा

मधु न की आँख भरा पड़ी गई । वह यह मुनि

जिस प्रकार बाँसुरी के बा" से कढ़ा हो

क शब्दों स बढ़-भर क

गन्ध के लिए आय थे पर आदमियों ने कहा माना और फिर न हुआ
सुम्न शान्त हो गए ?

"इतना सुन्दर था और आप क डर्मे इतना रुप थे ... उस प्रकार पर
... सहज।

"इन बात का उत्तर नहीं करेंगे" सुमन ने कहा।

"अर्थात् आप ... का न ... जानते थे ?" अर्जुन ने कहता न

"अर्थात् आना का न स्पर्श था।"

"।

"अब सब लोग सो जायगा तब जोड़ता। हम लोग अपने प्रगति
करेंगे। तुम ऊपर और होशियार ... आ र राम का दर्शन
ज़रा हो किसम यह क म ... उन्हें म हाथ म ल ..."

"अच्छा की ... र म की" अर्जुन बड़बड़ाया।

"अच्छा की। तुम्हें अपने पास रख। हाँ उन्हीं बातों पर था। तुम्हारे
स्वास में कुछ क्या नहीं है ?" व स्पष्ट न बना।

"मैं क्या उस राय होता हूँ ?" अर्जुन ने यह प्रश्न कह ता। प
... रह गया पर उसने पुन चार सुमन के मुख पर झाँकना देखा।
उन की व्यक्ति-स्वतन्त्रता कम नहीं हुई थी। उसके मुख पर कई बार
परिवर्तन हुआ। उसका उतना शान्त हुई और उस पर अमृत हास्य
स्पष्ट हो गया।

हाँ हाँ... मेरी भूल हुई भूल हुई। मैं यहाँ आया हूँ तब से भूल
ही करता आया हूँ। उन दोनों को मैं क्या यहाँ लिए आता हूँ। मृत्यु
के ... बड़बड़ाया। मैं अभी आया था ... दर मे। ... उठा
घर बन से बाहर निकला।

४

राम और कामदत्तिका का सहर अर्जुन उन गृहस्थाम की ओर
रहा उसमें पहुँच हो आगे बड़ा घबराए हुए था किन्तु राम का सैनिक
का भय नहीं था। राम ने उसे साहस बँधाया था र ... ने चुपचाप
बहुत बातें कीं। राक्षस जैसा अर्जुन ... से विवाह करना चाहता

न हार रखता हूँ तो क्या तुम्हें कष्ट होता है ?" राम की सुविधा के
कर सम्बन्ध चिन्तित होने लगा।

"क्या मधु के समान अन्य भी हुए हैं ?" राम ने पूछा।
हय ने कुछ आश्चर्यान्वित होकर उस बालक की ओर देखा।
र हरता उसके राजा का अपमान कर रहा था। उसके प्रश्न की सर
वन के उस विचार आया और वह राम पर मुग्ध होगया।

"हम लोग दुष्ट नहीं हैं" वृद्ध हँसा।

"तब अन्य आर्यों ने अरबा को मेरी बहन को और मुझ क्यों
दिए ?" राम ने पूछा।

वृद्ध के मन में जो शंका थी वह राम ने स्पष्ट की। जब से अशोक
दूर हो गए और हैहय बिना गुरु के होगए तब से इस
पद से सब की दृष्टि चली गई थी क्या सब समझकर अपने
ह्य से समझते थे। मधु ने भी अपने बाप दादों के समान मनस्वी
थे। इसके बीच में हैहयों ने बड़ा राज्य प्राप्त किया था, तो भी हैहयों
के मन में से देवों को ले ईर्षा हुई इसका पुनः प्राप्त करने की आकांक्षा कम
नहीं हुई थी और इसमें उसकी भी अत्यन्त इच्छा थी कि यदि
भार्गव से सम्बन्ध स्थापित हो तो अच्छा हो। वृद्ध मन ही मन राम
की तेजस्वी कान्ति को देखता रहा।

"क्या तुम हमारे यहाँ चलोगे ?"

राम का हैहयों से मिलने का यह पहला ही प्रसंग था पर वह
स्वयं उनका गुरु था और किसी प्रकार भी उन लोगों को दुष्टता कम
करना उसका ही कर्तव्य था, इस सम्बन्ध में उसके बालक मन में तनिक
भी संदेह नहीं था। जब से वह समझने लगा तभी से उसमें सामान्य लोगों
के समान गर्व नहीं था प्रत्युत एक विचित्र प्रकार की भावना सदा थी कि मैं
ऋचीक का पुत्र हूँ सबसे भिन्न और अद्भुत हूँ, एक प्रकार का देव
हूँ। इस श्रद्धा के विषय में उसने गंभीरता से विचार नहीं किया था तो
भी पल भर के लिए भी वह अस्पष्ट नहीं हुई थी। इस समय अपने

[illegible] समागत शिष्यों की उपस्थिति में उस बालक प्रभु ने [illegible] सुलभ अधिकार दे दिया।

"क्या आप लोगों को गुरु होकर [illegible] रहना अच्छा लगता है? [illegible] की आज्ञा आप लोगों ने मानी नहीं थी। मैं यदि और आप लोग मेरी आज्ञा न मानें तो?" राम ने पूछा।

[illegible] उस गम्भीर बालक के शब्द और [illegible] का अनुभव हुआ।

"हम मानेंगे?" उसने [illegible] राम को समझाते हुए कहा।

"तो फिर आप लोग [illegible] और उसके बच्चों को इस प्रकार क्यों [illegible] हैं?" [illegible] कोई [illegible] देता हो इस प्रकार प्रश्न उपस्थित हुआ।

[illegible] के हृदय में परिवर्तन होने लगा। [illegible] वह [illegible] मुझ पर [illegible] कर [illegible]? उसने [illegible] से [illegible] हृदय की [illegible] निकाला।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] दोर। जब तक वे प्रायश्चित्त नहीं करते तब तक वे भी [illegible] सकते हैं ?

"[illegible] तुम्हारे शिष्य स्वीकार न करें तो तुम्हें स्वीकार करने में [illegible], भद्रश्लेष ने राम को बताया।

राम कुछ देर चुप रहा मानो ज्ञान पाने या न पाने पर विचार कर [illegible]।

"[illegible] लोगों की [illegible] अच्छी नहीं लगती" उसने कहा "[illegible] लोगों को [illegible] एक बार [illegible] कर तब यह हो सकता है।"

ये सब [illegible] यह छोटा-सा बालक बोल रहा था या उसके मुख से [illegible] स्वयं [illegible] बोल रहे थे, यह भद्रश्लेष न समझ [illegible]।

थोड़ी देर में राम ने कहा "हम दोनों को अलग एक ही घाट पर [illegible] ? मुझे इस प्रकार अलग अच्छा नहीं लगता। हम दोनों एक ही घाट पर बहना चाहते हैं।"

"तुम कहाँ भाग जाओगे तब ?" भद्रश्लेष ने हँसकर कहा।

"भाग क्यों जाऊँगा !" राम ने कहा "अच्छा तो हमारे घाटे की [illegible] हाथ में रखना।"

"क्यों ?"

"[illegible] आप लोगों के गुरु थे। आप के न रहने से मैं भी आप [illegible] का गुरु बनूँ।"

"[illegible] का [illegible] के दर्शन होते थे, तुम्हें देव दर्शन कहाँ [illegible] है ?"

"[illegible] है। मुझे भी देव दर्शन देते हैं। मैं बहुत बार उनसे बात भी करता हूँ। और [illegible] के समान मुझे उनका [illegible] भी नहीं करना पड़ता। बहुत बार मैं अकेला घूमता रहता हूँ तब वे मुझे मिलते हैं।

[illegible] लिया । अर्जुन और [illegible] योद्धा [illegible] का [illegible] [illegible] देश में भागा।

[illegible] और [illegible] ने [illegible] का [illegible] जान लिया कि [illegible] का [illegible] अर्जुन भाग [illegible]

[illegible] हो [illegible] उसका पीछा करें।

[illegible]

[illegible] । [illegible]

[illegible] अर्जुन [illegible] विवाह कर [illegible]

इसकी [illegible] । [illegible]

नहीं है

[illegible] [illegible] की [illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible] में [illegible] । मैं [illegible] । [illegible] नहीं [illegible] । और [illegible] अर्जुन को पीछा करो [illegible] के [illegible] को [illegible] के [illegible]

६

[illegible]

[illegible] नहीं [illegible] । [illegible]

मैंने तुम्हारे लिए सब व्यवस्था कर दी है।

मुझे किसी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है।

पर तुम यहाँ कहाँ से आए?

'मैं आपके आश्रम के बाहर ही था। आपके पीछे-पीछे मैं भी चला आया।

पर मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है। अकेला ही जाऊँगा।

मैं आपके साथ नहीं चलूँगा, पीछे-पीछे चलूँगा। आप मुझे देखेंगे भी नहीं।

ऋषि की आँखों में आँसू आ गए।

'पर वत्स, तुम्हें तो विद्या सीखनी है न?

जहाँ आपके चरण पड़ेंगे वहाँ रज सिर पर धारण करूँगा। इसी से सरस्वती माता स्वयं प्रसन्न हो जायेंगी।

विश्वामित्र का हृदय भर आया। [illegible]—[illegible] पुण्य कर्म से—पुत्र रूप से?

"पर मेरा कोई ठिकाना नहीं है, तुम्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा।"

[illegible]

[illegible] ! [illegible] हृदय में [illegible] सुनाई दिया।

"[illegible]

"क्या आज्ञा है?

विश्वामित्र हँसे "[illegible] [illegible]

भगवन्! [illegible] [illegible]

विश्वामित्र [illegible]।

[illegible] ने गद्गद् [illegible] से कहा "मैं जानता नहीं [illegible] नहीं चाहता [illegible] देखकर मुझे [illegible] में न [illegible]"

[illegible]।

"भगवन्! क्या मैं [illegible] [illegible] हूँ [illegible]।

वशिष्ठ को चिन्ता का पार न था। यह अर्जुन बिना कहे चला गया, बिना पूछे चला आया और था जाता भी नहीं था यह घर आया। यह मेरी और देवों की अवगणना कर रहा है इसका भी उसे विचार नहीं था। अब तो बस एक ही मार्ग रह गया है—लोमा को उसके साथ ब्याहने के अतिरिक्त उसके उद्धार का कोई उपाय नहीं था।

सारी रात्रि मुनि ने देवाराधना में व्यतीत की। उन्होंने देव से अर्जुन के लिए सद्बुद्धि और अपने लिए शान्ति की याचना की। जिस मनुष्य पर आर्यावर्त का बल और विस्तार अवलम्बित था उसे अपना कहा मानने की प्रेरणा करने के लिए उन्होंने बहुत देर तक देवों की आराधना की।

प्रातःकाल सन्ध्या-वन्दन करके जब मुनि स्वस्थ हुए तब एक शिष्य समाचार लाया कि ऋषि चायमान भार्गव का पुत्र विमद आया है और तत्काल मिलना चाहता है।

ऋषि ने विमद को तुरन्त ही बुलवाया।

बहुत दिनों तक घोड़े पर यात्रा करने के कारण वह धूलि-धूसरित हो गया था। उसने ज्यों-त्यों मुनि को प्रणिपात किया।

"इस समय कहाँ आप विमद?"

"गुरुदेव! लोमा कहाँ है? राम कहाँ है?"

"वहीं कहीं है?"

"अर्जुन हैहय उन्हें पकड़ कर कहीं ले गया है।"

ऋषि की आँखें तन गईं। राजा दिवोदास की पुत्री और ऋषि जमदग्नि के पुत्र पर ऐसा अत्याचार हुआ! [illegible] प्रयत्न करते हुए मुनि ने कहा, "क्या हुआ, [illegible] विश्वामित्र का क्या हुआ? और [illegible] है?"

विमद ने संक्षेप

का अंतरहरण

अपना गुरुप न

और अपने बन्दी होनेकी कथा,भृगुओं और पुरुओं का धावा, लामा और राम का अपहरण आदि सब बातें मुनि ने ध्यान से सुनीं।

भरतों और भृगुओं ने तृत्सुओं से विग्रह प्रारम्भ किया क्यों ?'

'विग्रह ! विमद ने आश्चर्यान्वित हो पूछा, भृगु ह अ" ने यशीयसी का जो अपहरण किया है उससे हम सब भृगु श्रेष्ठ भी—बहुत क्षुब्ध हैं। क्या वह पातक अक्षम्य नहीं कहा जा सकता है ?

"ऋषिवर क्या कहते हैं ?"

'उन्होंने हम ,लोगों से कहा कि इस विषय में तुम्हारी जो इच्छा हो करो। उन्होंने पुरोहितपद और भरतों का राजपद दोनों छोड़ दिये।'

'भरतों की क्या वृत्ति है ?

अब क्या बतलाइ जाय ? सबकी वृत्ति तो आपकी ही ओर है।"

वशिष्ठ ने शुनःशेप दवों का उपकार माना। देव सभी कुछ कर सकते हैं। आपावत उ ह एक हाता जान पड़ा। किन्तु विमद के शब्दों पर उन्होंने पुन विचार किया। उन्हें शङ्का हुई।

अब क्या बताया जाय कहो ?" उन्होंने पूछा।

राजा कुत्स, कन्या राम और लामा पर अत्याचार हुआ है। अब और क्या कहा जा सकता है ?"

'मैं अर्जुन को समझाऊँगा। वह क्षमा माग लेगा। प्रायश्चित करेगा। इस अपने आचार विचार का कम ज्ञान है।

मुनिवर ' आप—आचार के प्रणेता—क्या उसे क्षमा करेंगे ?

क्षमा करने वाला मैं कौन हूँ ? जिसे देव क्षमा करें वही सच्चा। लोमा तो उसकी पत्नी होने वाली है। यह लोमा को ले आया इसमें मुझे देव का हाथ दिखाई देता है।

मुनिवर, यह आप क्या कहते हैं ? विमद ने उच्च स्वर से पूछा।

उनके पुत्र राम को पकड़कर महापाप किया है। जमदग्नि जैसे सौम्य महापुरुष ने ऐसा काम क्यों किया होगा यह मैं समझता हूं। तुम शान्त हो जाओ। मैं अभी अर्जुन को यहाँ बुलवाता हूं और कामदहिणी तथा राम को भी यहां बुलवा लेता हूं।

३

निमंत्रण के आते ही मुनि ने सुदास को बुलवाया और अपने पौत्र पराशर को अर्जुन को बुला लाने के लिए भेजा।

पल पर पल बीते। थोड़ी देर में सुदास आया। मुनि ने उसको सब बात कही कृत्रास और अर्जुन को बुलाने के लिए दूत भेजे।

अन्त में अर्जुन आया।

"आइए हैहयराज बैठिए" मुनिवर ने कहा।

"यह सब क्या कर आये?" सुदास ने पूछा, "मेरे हैहयराज कहां हैं?"

"हैहय तो पीछे रह गया। मैंने तो युद्ध के राजा तुम्हें और उस दस्यु की स्त्री पुत्र और पुत्री को बन्दी किया था। पर फिर कोई बड़ी सेना आई। मैंने अपने सैनिकों को लड़ने दिया और उस लड़के और लड़की को लेकर यहां चला आया।"

"पर अपने मित्रों पर तुमने आक्रमण किया इसका परिणाम क्या होगा?" मुनि ने धीरे से पूछा।

"और क्या होगा? मैंने उनके मनुष्यों को काट डाला उन्होंने मेरे मनुष्यों के प्राण लिए। बस लेखा बराबर।"

"यह अनुकम्पा नहीं है और हम लोग बिना कारण मनुष्यों के प्राण नहीं लेते। और गुरुजन तथा ऋषि पत्नी?"

"इन्हें तो मैंने छोड़ दिया था।" निर्लज्ज अर्जुन हँसा।

"पर इससे तो अपने ही मित्रों में फूट पड़ेगी" सुदास ने कहा।

"उसकी अब क्या चिन्ता है? अर्जुन ने कहा "तुम्हारे इन सब मित्रों के बदले मैं क्या कम हूं?"

अदृश्य वह हम लड़के की ओर ध्यान से देखने लगे। वह पात्र नहीं था इसका उसे विश्वास था। उसने राम का कहा मानकर लोमा को घोर उसे एक ही घोड़े पर बिठा लिया।

सबसे आगे अर्जुन घोड़ा दौड़ाये चला जा रहा था उसके पीछे उसके सैनिक थे। राम और लोमा भी उनके साथ ही थे।

अर्जुन को ऋषि के इन बच्चों के प्रति कोई रस नहीं था।

५

उस रात को राम और लोमा जीन पर सिर रखकर पास पास सोये। आस पास सैनिक सोये। और थोड़ा दूर पर अर्जुन सोया। थोड़ी देर पश्चात् लोमा ने कहा।

राम! ये सब मुझसे क्यों ब्याह करना चाहते हैं?

कौन सब?

दत्तात्रेय! कल वह देवदत्त मुझसे विवाह के सम्बन्ध में कहने आया था।

अच्छा क्यों?

क्यों! तुम्हारा सिर फोड़ने क्रुद्ध होकर लोमा ने कहा। अब वह भरतों का राजा हुआ अब रानी भी तो चाहिए न इसीसे।

और अर्जुन भी तुम्हें ब्याहना चाहता है क्यों?

वह दुष्ट तो व्याघ्र के समान विकराल है।

राम हंसा तुम व्याघ्री बनो तो बड़ा आनन्द आ जाये।

बस तुम्हें तो हँसी छोड़कर कुछ सूझता ही नहीं। ये सब मुझसे ही क्यों विवाह करना चाहते हैं? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। और सब कहते हैं कि इस अर्जुन की तो इतनी स्त्रियाँ हैं कि एक पूरा गाँव बस जाय।

राम ने आँखें मूंदीं तुम सबसे अच्छी हो न इसलिए।'

'पर मुझे विवाह नहीं करना है।'

राम ने जँभाई ली। उसकी आँखों में नींद भर आई थी। उसने

स्पष्ट हुए। विश्वामित्र द्वारा निर्मित हुई अराजकता में मृत्यु को अर्थ है इसका पुनः धर्म के साथ हुआ। इस प्रकार कर्मों को उस के साथ इस वचन का विशुद्ध किया दिया जाने लगी है वह परम कर्तव्य सबको दृष्टि में धर्म-धर्म हो गया। शुभमुहूर्त में युद्ध के बाद एकमन होने लगी।

धनुर्धर के टंकार गूँजने लगे। मुनि वशिष्ठ और राजा सुदास के सम्मुख में धनुष कटिबद्ध होकर खड़े होगए। रथेन कवच पर आरूढ़ मुनि वशिष्ठ राजाओं और सेनापतियों को मरणा मंत्र देने लगे।

"आज का दिन तो देव द्वारा निर्दिष्ट है हम लोग तो निमित्त मात्र हैं। धार्मिक का संरक्षण ही हमारा कर्तव्य है। आप विशुद्ध मन से युद्ध करें यही हमारा व्रत है। आर्यों की शक्ति द्वारा रक्षित धार्मिकता ही हमारा ध्येय है। प्रमाद व का उन्मूलन ही हमारा धर्म है।"

इन शब्दों का उच्चारण करके मुनि श्रेष्ठ ने घोड़े को गति दी और आप रथ के अंदर के लिए शत्रु, शत्रुओं आदि की भाँति राजाएं शत्रुओं पर टूट पड़ीं।